रक्तरंजित दास्तान : एक दस्तावेज

इतिहास हमेशा हमसे कुछ कहता है, जिसे या तो हम सुनते हैं
अथवा सुनकर नजरअंदाज कर देते हैं. जिसके
अनुरूप हमें उसका परिणाम
भोगना पड़ता है.
इतिहास एक सबक है, जो हमें बेहतर जिन्दगी
जीना सिखाती है.
यह हम पर निर्भर करता है कि हम
इस सबक को सीखकर बेहतर जिन्दगी के लिए
संघर्ष करते हैं अथवा नहीं...

@ pratibha prakashan, patna

रक्तरंजित दास्तान : एक दस्तावेज - चन्द्रोशन पंडित

रक्तरंजित दास्तान

एक दस्तावेज

चन्द्रोशन पंडित

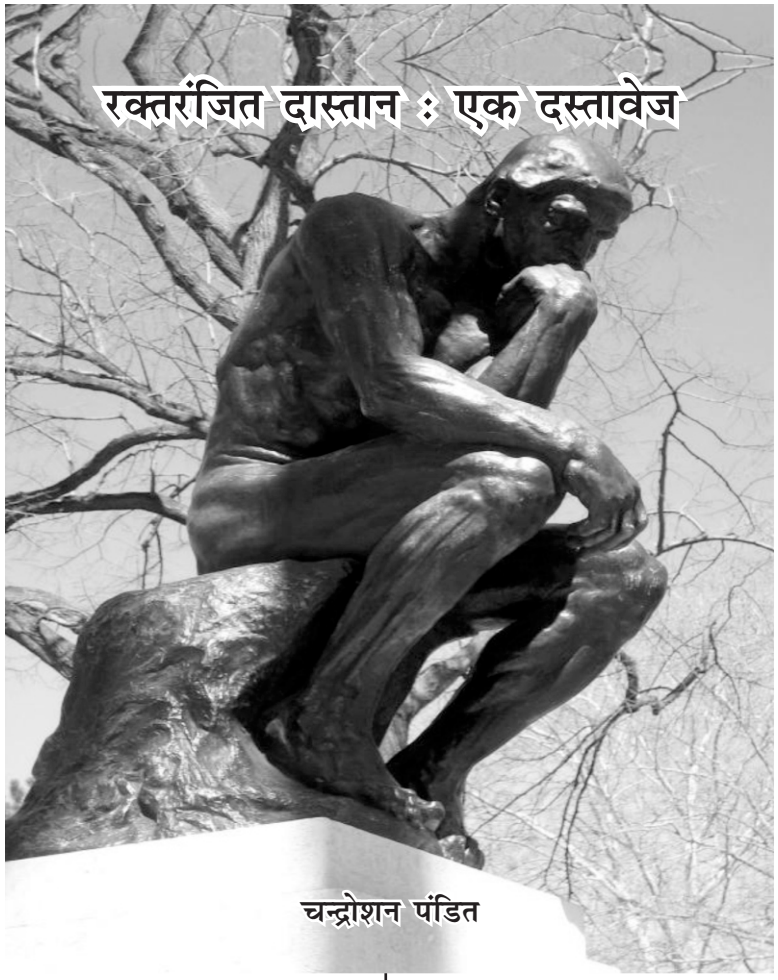

प्रतिभा प्रकाशन
पटना

© चन्द्रोशन पंडित

प्रकाशक : प्रतिभा प्रकाशन, फ्रेजर रोड, पटना-1
प्रथम संस्करण, 2014
मुद्रण : शर्मा इन्टरप्राईजेज, पटना-1
आवरण सज्जा : ललिता शर्मा
शब्द संयोजन : मुस्कान रानी
मूल्य : 65 रूपये मात्र

Raktranjit Dastan : Ek Dastawej
by Chandroshan Pandit
Website : www.pratibhaprakashan.com
E-mail : pratibhaprakashan@rediffmail.com

अमनी गांव का
सैटेलाईट चित्र
Google Maps
Khagaria-Marar Rd
Marar Rd
Google

दिवंगत श्रद्धेय मो० जसीम बाबू* : एक श्रद्धांजलि

'हे पुण्यात्मा, ऐसा लगता है कि आप मुझे दर्शन देकर ही प्रस्थान करने वाले थे. इसलिए जब तारीख 23 अक्टूबर, 2014 ई. की संध्या बेला में मैं आपका दर्शन करके लौटा तो केवल कुछ मिनटों बाद ही आपकी सुपुत्री के द्वारा आपके महाप्रस्थान की सूचना मिली.

'आप जब तक जीवित रहे अपने संगठन और प्रिय पार्टी के प्रति सदैव निष्ठावान और वफादार बने रहे. जनता के साथ किसी भी तरह से जो कोई भी अप्रिय बर्ताव करता तो आप उसका शक्तिभर प्रतिकार करते रहे. चारों तरफ फैले गद्दारों, विश्वासघातियों और सरकारी दमन के बीच आप निडरतापूर्वक डटे रहे. अपने सारे लम्बे जीवन के अनुभवों और व्यवहारों से परखे अपने नेता के प्रति सच्ची श्रद्धा और प्रेम दर्शाये. उनके हर पीड़ा को आप अपनी पीड़ा समझे और उनके हर तकलीफों में छतरी की तरह छाया प्रदान करते रहे. दु:खी जनता की सेवा आपका धर्म था. इसलिए पीड़ित जनता के कष्ट स्वयं दूर करने में असमर्थ रहने पर झट अपने नेता को हर तारीख पर जाकर बताते, सुझाव देते और सुझाव लेते थे. इस प्रकार आप हमारे परम आदरणीय नेता व चाचा अनूप सदा की श्रेणी में पहुंच गये.

'हम आपके निश्छल प्रेम, जनता के नि:स्वार्थ सेवा की भावना, निर्भीकतापूर्वक बेवाक वार्ता से सीखते हैं और मैं आपको शत्-शत् प्रणाम करता हूं. आम जनता और अगली पीढ़ी आपके उदाहरण से प्रेरणा लेती रहे यही हमारी तरफ से आपको श्रद्धांजलि है.'

चन्द्रोशन

25 अक्टूबर, 2014 ई.

---

* मो० जसीम बाबू, अनूप सदा के अनन्य सखा थे-प्रकाशक

प्रकाशक की ओर से -

जब हम इतिहास से सबक नहीं सीखते हैं तो वो खुद को दोहराती है और बार-बार हमें अपने भविष्य को सुगम बनाने हेतु राह बतलाती है. जरूरी है कि इतिहास की आवाज को सुना जाय और उससे सबक लेते हुए बढ़ा जाय. जब हम इसे नजरअंदाज करने लगते हैं तब वह हमारे सामने विभत्स रूप में आती है और तब हम खुद को तबाही के कगार पर खड़े पाते हैं.

प्रत्येक समाज अपने में अच्छी और बुरी पहलु को समाये रखती है. हमारी अच्छी और बुरी आदतें समाज में छोटी से लेकर बड़ी घटनाओं तक को जन्म देती है. प्रस्तुत पुस्तक समाज में विद्यमान उन अन्तर्विरोधों की एक सरल रूपरेखा प्रस्तुत करती है जिसे ठोस परिस्थिति में सहज ही लागू किया जा सकता है.

प्रस्तुत पुस्तक का केन्द्र एक गांव **अमनी** है, जो खगड़िया जिला के मानसी प्रखण्ड में अवस्थित है. कभी यह गांव खगड़िया के मानचित्र पर गुमनाम-सा हुआ करता था, अत्यन्त ही पिछड़े हुए. कहते हैं यहां पर कभी प्लेग या किसी महामारी से इसकी सारी आबादी या तो मर-खप गये थे अथवा अन्यत्र पलायन कर गये थे. बाद में विभिन्न जगहों से अनेक लोग यहां आये और यहां जीवन का पुनर्स्थापन किये. बाद के दिनों में यह गांव विकसित होने लगा. पहली बार यह गांव राजनीतिक पटल पर तब आया जब यहां के सुपुत्र **डॉ० प्रभुनारायण चक्रवर्ती** इस गांव को सोशलिस्ट पार्टी द्वारा राजनीति के झंझावात से जोड़े और जनता की समस्याओं को पहचानकर उसके खिलाफ आवाज बुलंद किये.

बाद के दिनों में यह गांव जनवादी आन्दोलन के केन्द्र के रूप में अपनी अमिट पहचान बनायी. विकास के इस दौर में यहां नानाप्रकारेण समस्यायें पैदा हुई, जिसका हल भी यहां के समाज अपनी सामूहिक प्रयास के बल पर करते रहे, जिस दौरान विभिन्न कारणों से अनेक लोग मारे गये. अनेक लोग समाज को अकथनीय पीड़ा में डालते हुए अथवा उस अन्यायकारी ताकतों से लड़ते हुए परलोक सिधार गये, जिसका द्वन्द्वात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत पुस्तक में बड़े ही बेहतरीन ढ़ंग से लेखक ने किया है. आज भी अनेक लोग उन के विरासत (अन्यायकारी ताकतों की विरासतें एवं न्यायपूर्ण ताकतों की विरासतों) को थामे अपने-अपने तरीके से समाज को उन्नति या अवनति के मार्ग पर ले चलने की

जद्दोजहद में लगे हुए हैं.

लेखक स्वयं इस आन्दोलन के अगुवाई में अपनी एक महती भूमिका अदा कर रहे हैं. लेखक इन दोनों ही तरह के तत्वों से अच्छी तरह न केवल वाकिफ ही हैं वरन् समाज को अवनति के रास्ते पर ले जाने वाले तत्वों के खिलाफ सशक्त सशस्त्र आन्दोलन भी खड़ा किये हैं, जिस कारण वे भीषण यंत्रणा के शिकार भी हुए और आज इस राजसत्ता के जेल में आजीवन कारावास में कैद हैं.*

प्रस्तुत पुस्तक आगामी पीढ़ियों के लिए एक संदेश भी है कि वस्तुओं या घटनाओं को द्वन्द्वात्मक तरीके से कैसे देखा जा सकता है और कैसे देखा जाना चाहिए ? समाज में व्याप्त अच्छी ताकतों को गोलबन्द कर कैसे बुरी ताकतों के खिलाफ लड़ा जाना चाहिए ?

प्रस्तुत पुस्तक को प्रकाशित करते हुए हम काफी प्रसन्नतापूर्वक यह कहना चाहते हैं कि समाज में रहने वाले उन तमाम लोगों के लिए यह काफी हितकारी है जो समाज को जानना चाहते हैं, उसे बदलना चाहते हैं. यह शोधार्थियों के शोधपत्र लिए भी एक आधार प्रस्तुत करता है.

अन्त में, मैं लेखक को धन्यवाद देता हूं जिन्होंने इतनी मौलिक रचना को काफी मेहनत से तैयार किया. मैं यह दावे के साथ कहना चाहता हूं कि ऐसी रचना संसार कि किसी भी भाषा-साहित्य में उपलब्ध नहीं हैं जो एक साथ समान भाव से, क्रांतिकारी संघर्ष से जुड़े एक गांव के हरेक मृतक को द्वन्द्वात्मक ऐतिहासिक भौतिकवाद की कसौटी पर कसा हो.

प्रकाशक

---

*पुस्तक प्रकाशित होने तक लेखक आजीवन कारावास की सजा भुगतने के बाद भी राजसत्ता द्वारा स-समय न रिहा किये जाने के विरूद्ध उच्चतम न्यायलय में दायर अपील के बाद उच्चतम न्यायालय के आदेश पर रिहा किये गये हैं - प्रकाशक

लेखक की ओर से -

अमनी में किस कारण किनका खून बहा,
इस पुस्तक में इस बात का तथ्यपरक, खोजी और
रोचक वर्णन है. इसके पढ़ने से
पाठकों को और अगली पीढ़ियों को
अपने जीवन काल में,
उचित-अनुचित में फर्क करने और
सही दिशा में कदम उठाने में मदद मिल सकता है.
सभी मरनेवालों के अच्छे-अच्छे गुणों और उनके कमियों को भी
जानकारी हेतु रखा गया है.
उनके जमाने में क्या होना चाहिए था, जिसे अपनाया जाता तो
रक्तपात रूक भी सकता था और
समाज की सामूहिक ताकत बनकर
आम आदमी की विपत्तियों को दूर करने में
मददगार भी हो सकता था,
इसकी विशद् जानकारी दी गई है.

चन्द्रोशन पंडित
8-5-2009 bZú

दो शब्द

सोशलिस्ट पार्टी के नेतृत्व में संगठित समाज उन्नति-तरक्की के पथ पर अग्रसर था. तारीख 19 नवम्बर, 1954 ई० को सामंती गुण्डा-गिरोहों द्वारा तात्कालिक सोशलिस्ट पार्टी के प्रभावशाली नेता **डॉ० प्रभुनारायण चक्रवर्ती** का हत्या करने के बाद समाज का विकास न केवल रूक ही गया वरन अवनति की ओर चला गया. लोगों को फुटाना, झगड़ा लगाना, शोषण करना, दबंगई करना, षड्यंत्र, मारपीट, बलात्कार, अपमान से आतंकित समूचा समाज कराह उठा. तब मजबूर होकर 1966 ई० के फाल्गुन महीना में अपने दोस्त जर्नादन मिश्र के अलावे श्रीनारायण सिंह, सहदेव सिंह, रामफल सिंह एवं रामशरण सिंह समेत पाँच युवाओं ने मिलकर त्रस्त जनता की समस्याओं को हल करने का दृढ़ संकल्प लिया. इसके बाद विख्यात कम्युनिस्ट नेता **बाल कृष्ण आजाद** (बी० के० आजाद) को अपने गाँव अमनी बुलाये और इस विषय पर गहन विचार किया कि कैसे इन समस्याओं को हल किया जाए ? तय हुआ कि मजदूरों की मजदूरी बढ़वाई जाए और बड़े लोगों का जो जुल्म-शोषण है, उससे छुटकारा दिलाया जाए. असल में सामन्ती लोग उस समय हलवाहों से शाम तक हल जोतवाते थे. नौकर से हर समय रूआब से बात करते थे. मात्र दो लोढ़ी दिन भर के मेहनत का अनाज मरूआ, जोकराई या खेढ़ी देते थे. इतना ही नहीं, गरीबों के बहू-बेटियों की इज्जत लूटते थे. इसीलिए हम पाँचों कामरेडों ने मिलकर इस **गाँव में कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) का नींव कामरेड बी० के० आजाद के नेतृत्व में** रखा. हम पाँचों कामरेड मिलकर टोला-टोला जाकर मीटिंग करते और लोगों को संगठित करते थे. इस तरह हमलोग जन-संघर्षों की तैयारी में जुट गए.

तैयारी पूरी होने पर 1968 ई० में हम पाँचों कामरेडों के नेतृत्व में सामंतों के खेतों में जनता ने काम का हड़ताल किया. कार्तिक का समय था. हड़ताल के कारण जब काम बन्द हो गया तब अमीर लोग मजदूर भाईयों के खिलाफ बहुत कड़ा कदम उठाये और क्रोध से फुफकारते हुए कहने लगे, ''तुम सब मजदूर जो कर्ज लिया है, वह रूपया दे दो.'' बेचारा गरीब मजदूर जिसे खाने का उपाय नहीं था, भला कर्ज का रूपया कहाँ से देता ? मजदूर आतंकित होने लगे. इसके बाद कामरेड बी० के० आजाद की सभा हुई. सभा में खुलेआम मजदूरों का मांग रखा गया : 4 किलो अनाज या 8 रूपये रोज मजदूरी. जितना कम मजदूरी दिया जाता था उससे मजदूरों का पेट नहीं भरता, बाल-बच्चा भला क्या खायेगा ? इस तरह आवाज बुलंद होते ही जनता का मनोबल बढ़ा और आन्दोलन आगे बढ़ चला. इन्हीं दिनों अपने चाचा राम सुन्दर सिंह और चचेरे भाई यदु सिंह व कमलेश्वरी सिंह से दियादी डाह साधने के लिए आनन्दी सिंह सी० पी० एम० के इस उभरती ताकत से आ जुड़े क्योंकि सामंती गिरोह उनके चाचा का साथ दे रहे थे. **आनन्दी सिंह का संगठन में जुड़ने से तत्काल विकास तो हुआ, लेकिन भविष्य के लिए ठीक नहीं हुआ.** 1970 ई० में आनन्दी सिंह अमनी ग्राम पंचायत के मुखिया निर्वाचित हुए. इसके बाद चौथम विधान सभा क्षेत्र से एम० एल० ए० चुनाव में खड़ा हुए. वोट के लिए सामंती गिरोहों से समझौता कर लिए. इसके कुछ ही दिनों बाद सामंती अन्यायों के खिलाफ जनता का संघर्ष रूक गया. धीरे-धीरे खुद आनन्दी सिंह के नेतृत्व में सामंतों द्वारा सी० पी० एम० के झंडा तले जनता पर नए सिरे से, नए रूप में सामंती उत्पीड़न शुरू हो गया. इस प्रकार पुनः सामंती जुल्म अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गया.

इस अनर्थ के खिलाफ पार्टी के अन्दर ही पाँचों संस्थापकों ने आवाज बुलंद किया लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई इसीलिए हम पाँचों संस्थापक पार्टी से अलग हो गए. अन्य कोई रास्ता नहीं मिलने पर तटस्थ हो गए.

सी० पी० एम० के इस पतन के बाद नये सिरे से गाँव में शोषण, दमन, अत्याचार से त्रस्त आम-जनता पुनः उठ खड़ी हुई. इसका नेतृत्व नये दिलेर युवकों ने किया, जिसमें से एक इस पुस्तक के लेखक भी थे. विरोध की इस लहर से कुपित होकर अब स्वयं आनंदी सिंह ने सामंती गिरोहों का नेतृत्व करते हुये जनता पर सशस्त्र हमला शुरू कर दिए. इन हमलों का स्वरूप कैसा था सिर्फ एक उदाहरण से समझा जा सकता है : जनता के बीच के एक गंभीर मतभेदों को समाजिक पंचायत में इन युवकों के द्वारा हल कर दिया गया. इस बात को आनंदी सिंह अपने पंचायत का अपमान समझे इसलिए उस पंचायत का उल्लंघन करवाने की कुचेष्टा करने लगे. परन्तु जब जनता को समझाने में सफल नहीं हो पाये तब आंनदी सिंह ने बी० के० आजाद के भतीजा श्री नारायण सिंह पर सशस्त्र हमला करने के लिए लोगों को जुटाये. इस खबर के फैलते ही समूचे गाँव के सभी जाति के गरीब भी अपने साथी के प्राणों की रक्षा के लिए अपने परम्परागत हथियार ले-ले कर दौड़ पड़े. इस विनाश को हमने तत्काल तो समझा-बुझा कर किसी तरह रोका. उस दिन तो मेरा पहलकदमी असर दिखलाया और तत्काल झगड़ा रूक गया परंतु, सी० पी० एम० सामन्ती गिरोहों ने भाजपा (जनसंघ) सामंती गिरोहों से मिलकर गरीब जनता की संगठित व जागरूक ताकत को ध्वस्त कर डालने के लिए बार-बार सशस्त्र हमला करता रहा, फर्जी केशों में लोगों को फंसाते रहा. पुलिस

से मिलकर बराबर हमला करते व करवाते रहा. मजबूरन जनता को भी अपना सशस्त्र प्रतिरोध शुरू करना पड़ा. जनता के इस नये आंदोलन को बदनाम करने के लिए इन गिरोहों ने शुरू में गरीबों के नेतृत्व को **गुण्डा** कहा, उसके बाद कोयरी-पौनियां की **जातीय लड़ाई** कहा. इसको भी जब जनता ने ठुकरा दिया तब जनता को डराने और पुलिसयों को हमला करने के लिए उकसाने हेतु **नक्सलियों का आन्दोलन** कहने लगा और आन्दोलन के खिलाफ पुलिस मुखबिरी करने लगे. आम जनता के द्वारा बार-बार समझौतों की अनेक कोशिशों को भी ठुकराते रहे हैं.

ऐसी उपरोक्त परिस्थिति में अमनी की गरीब आम जनता पिछले 70 सालों से अब-तक लड़ाई जारी रखे हुए हैं. इस दौरान दर्जनों जानें गई है. किनका खून किस कारण से बहा, प्रस्तुत पुस्तक **रक्तरंजित दास्तान : एक दस्तावेज** अत्यंत सही तथ्यों के आधार पर बिल्कुल सही तरीके से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है. इसको पढ़ने से वर्तमान में लोगों को तथा अगली पीढ़ी को अपने-अपने जीवनकाल में गलती से बचने, उचित-अनुचित में फर्क करने और शांतिपूर्ण-तरीके से उन्नति की राह पर बढ़ते हुए सामूहिक हितों के लिए सही दिशा में जन-संघर्ष हेतु बल मिलेगा...

जनार्दन सिंह
समाजिक कार्यकर्त्ता, अमनी
01/05/2005

अनुक्रमणिका

I. श्रद्धेय मो० जसीम बाबू : एक श्रद्धांजलि
ii. प्रकाशक की ओर से
iii. लेखक की ओर से
ii. दो शब्द : जनार्दन सिंह
iii. अनुक्रमणिका
iv. विषय प्रवेश

1. **प्रथम शहीद पहलू यादव : एक शानदार योद्धा**
2. **अमर शहीद डॉ० प्रभुनारायण चक्रवर्ती**
3. सत्यनारायण यादव और सीताराम सिंह का मारा जाना
4. बटाईदार कामो यादव का मारा जाना
5. धारी मंडल का मारा जाना
6. दोरिक सिंह की हत्या
7. शहीद का० जटाधर मिश्र
8. जनता द्वारा अपराधी राघो सिंह और उनके पुत्र देवेन्द्र के आतंक का अंत
9. जनता ने आनन्दी सिंह को क्यों मारा ?
10. उत्तम सिंह का मारा जाना
11. अनिरूद्ध पंडित की दु:खद मौत
12. गद्दार सिकन्दर और मनोहर का मारा जाना
13. शहीद का० लक्ष्मी पंडित की कायराना हत्या
14. मुखबिर चरित्तर पंडित, अपराधी जयजयराम सिंह और सामंत नारायण सिंह का सफाया
15. शहीद का० भोपी यादव
16. कमांडर बादल पर हमला और महेश्वर साह का अंत
17. सरपंच श्यामनंदन सिंह की हत्या
18. शहीद आरती देवी
19. शहीद का० बौकु राय
20. रामदेव गुप्ता अमर रहे
21. जनप्रिय अनूप सदा अमर रहे

22. राघो सिंह की पत्नी की हत्या
23. वकील बैठा की हत्या
24. अशोक साह की पत्नी की हत्या
25. महेन्द्र मिश्र की हत्या
26. एक शिक्षक (अज्ञात) का मारा जाना
27. उदय सिंह का मारा जाना
28. अंधविश्वास के कारण डायन के नाम पर दो महिलाओं की जघन्य हत्या
29. मारपीट के दर्जनों मामले जिसमें...
30. सुलह का सच्चा समाजिक प्रयास, जिसे जनता के दुश्मनों ने ठुकरा दिया
31. परिशिष्ट
    अरविन्द यादव की हत्या
32. अकाल मृत्यु की तीन उदाहरणें
    श्री शीतल बाबू
    संजय पंडित
    प्रकाश चौधरी
33. अमनी की जनता के साथ प्रशासन का बहसियाना व्यवहार

विषय प्रवेश

विपत्तिग्रस्त अमनी गांव के वाशिन्दें अपने ही अन्तरकलह के चलते रक्तरंजित हो चुके हैं. अब-तक तीन दर्जन से अधिक लोग मारे जा चुके हैं और असंख्य घायल भी हुए हैं, लेकिन अब भी उसी रास्ते पर चलने की कतारबन्दी है. आपस में संघर्षरत् लोगों का अपना-अपना पक्ष मजबूत करने हेतु दूसरे लोगों के पास जाना स्वभाविक ही है, साथ ही, बांकी लोगों (जात-कटुम्ब, दोस्त या हितैषी, गिरोह या राजनीतिक पार्टी इत्यादि) का भी अपने-अपने लोगों के बातों को सुनकर दु:खी होना, आक्रोश व्यक्त करना और सहयोग देना भी स्वभाविक ही है. लेकिन विचार करने का एक बुनियादी सवाल जरूर उठाना चाहिए कि **आखिर हम क्यों लड़ें ?** आखिर हम **क्यों किसी का साथ दें ?** आखिर समस्या क्या है जो हल नहीं हो पा रहा है ? क्या बिना लड़ाई के हल नहीं हो सकेगा ? इस लड़ाई से या अन्तहीन खून-खराबी से वास्तव में तात्कालिक और दूरगामी लाभ किसको है ? **न्याय किसके पक्ष में ख**ड़ा है ?

तो आइये ! आगे हम एक-एक कर जानें कि मरनेवालों की किस बात को लेकर किससे लड़ाई हुई, जिस कारण वे मारे गए ? कौन इस आग में घी डाला ? इसे ब्यौरेवार देखते हैं. लड़ाई अर्थात् आपसी मारकाट रूकनी ही चाहिए और सही बातों के लिए, सम्पूर्ण समाज के हितों के खातिर जीवन भी देना पड़े तो भी अवश्य ही सबों को मिलकर संघर्ष करना चाहिए. हमारा धर्मशास्त्र भी अन्याय के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष करके न्याय को स्थापित करने का प्रेरणा प्रदान कर रहा है.

मुख्यत: निम्न कारणों के चलते, उत्तर बिहार के खगड़िया जिलान्तर्गत मानसी थाना के इस अमनी गाँव के निवासी लड़े हैं और मरे हैं या फिर घायल हुए हैं :-

(1) पहला कारण जमीन के लिए उनका संघर्ष है या अपने पालतू पशुओं के चारा, घास काटने को लेकर या जलकर से मछली मारने को लेकर है, जो कुल मिलाकर जीविका के लिए आर्थिक संघर्ष ही है.

(2) घर-ढुक्की (घर में घुसकर महिलाओं के साथ बलात्कार या दुव्यर्वहार) करने वाले या झगड़-लगाऊन लोगों द्वारा फंसाया गया लड़ाई है, जो एक समाजिक समस्या है.

(3) अशिक्षा, अंधविश्वास और पिछड़ापन के कारण ऊपजी या आपसी-विद्वेष के चलते पैदा हुई समस्या है इत्यादि.

चुंकि, मरने वालों का परिचय अगली पीढ़ी को भी कराना है इसलिए इस आलेख में हम उनका एक-एक करके संक्षिप्त विवरण देने का प्रयास कर रहे हैं. निश्चित ही सूचनाओं की कमियों के चलते इसमें त्रुटियों या कमियों का होना स्वभाविक है लेकिन समझना हालातों के एक प्रारूपों को है...

प्रथम शहीद पहलू यादव : एक शानदार योद्धा

हुये थे शूरमा एक, नाम था पहलु,
करते थे खेतों में काम ।
काम था इनका अत्याचारी सामंतों पर हमला,
इसी से थे ये बदनाम ।
छिप कर आया सैकड़ों सामंती हत्यारा,
सरदार था उसका राजेन्द्र,
अकेले सम्भाले मैदान यह क्रोधित योद्धा,
लाठियों से मथ डाले दुश्मन का केन्द्र,
सैकड़ों से भीड़ गये थे एक,
लड़ते-लड़ते रह गये खेत.

घटना लगभग 1940 ई० के बाद की है. जब भारत में अंग्रेजी राज था. अंग्रेजों ने सामंती भारतीय समाज के ग्रामीण जनता से भी अधिक-से-अधिक धन वसूल कर मालामाल बनने के लिए सन् 1793 ई० में ही 'लैण्ड सेटलमेण्ट एक्ट' बनाया था, जो चार्टर-एक्ट में संशोधन करके बनाया गया था. इसी कानून के तहत् हर जिलों की जमीन के लगान वसूली का अधिकार जमीन्दरों को मिला, जो खेतों में पैदा होने वाले ऊपज के रूप में लगान नहीं वसूलकर, मुद्रा में वसूला जाता था, वह भी बढ़ी हुई दरों पर. उन दिनों आम जनता में मुद्रा से कारोबार का प्रचलन कम था. फलस्वरूप बेरहमी से, निष्ठुरतापूर्वक लगान मुद्रा में वसूली के कारण किसान अपने जोत की जमीन का लगान देने में असमर्थ रहते अथवा चतुर लोगों से ठगे गये. अन्ततः जोत की जमीन से वंचित कर दिये गए. सूदखोरी प्रथा के माध्यम से भी ऐसा ही हुआ.

इसी उपरोक्त परिस्थितियों में अमनी की जनता के जोत की लगभग सारी जमीनें (अपवाद छोड़कर) जमींदारों ने हड़प लिया. यहां तक कि गांव के गौढ़ा-गोढ़सार या डीह तक पर बाहरी जमीन्दार काबिज हो गए. फलस्वरूप अमनी गांववासी जमीन्दारों के लगुआ-भगुआ बनकर या बटेदार बनकर या मवेशी पाल कर जीविकोपार्जन के लिए मजबूर हो गए. चूंकि अपना जमीन रहा नहीं,

पशु-चारा के लिए तो जमीन्दारों के खेतों में ही जाना पड़ता था, इसलिए कुछ फसल भी क्षति हो जाया करता था. इससे आक्रोशित जमीन्दारों ने पहलु यादव के हत्या का योजना बनाया.

उन दिनों जमीन्दारों के अगुआ अमनी गांव से सटे दक्षिणी तरफ के मेहसौड़ी गांव के भूमिहार जाति के जमीन्दार श्री राजेन्द्र प्रसाद थे. इन्होंने बेगुसराय, बड़हिया, नौगछिया, थाना बिहपुर सहित आस-पास के जमीन्दारों के सहयोग से सैकड़ों बदमाशों, भरैती, लठैतों आदि को एकत्र करके स्वयं हाथी पर सवार होकर बन्दूक से लैस फसल की ओट में छिपकर हठात् हमला बोल दिया. हमलों से अनजान पहलू यादव अकेले अपने खेतों में हल जोत रहे थे. फिर भी वे बड़े ही साहस के साथ लाठी से मुकाबला करते हुए अपने गांव की तरफ पीछे हटते गए. दुर्भाग्य से एक बड़ा कांटा उनके पैर में चुभ गया, जिस कारण वे गिर पड़े और उठकर सम्भलने के पहले ही सामंती हमलावरों ने कायरतापूर्ण तरीके से वर्बरतापूर्वक उनका हत्या कर दिया.

वे आज हमारे बीच नहीं है, लेकिन सामंती जमींदारों के खिलाफ अमनी के ये वीर सपूत हमेशा एक प्रेरणास्त्रोत बन कर हमेशा याद किये जाते रहेंगे.

चमकता सितारा
अमर शहीद डॉ० प्रभु नारायण चक्रवर्ती

उदित दिवाकर के होते ही, अंधकार जैसे भागा.
डॉ0 प्रभु के आगमन से, सोया समाज वैसे जागा.
अगुवाई में इस सोशलिस्ट नेता के
सामंती जुल्मों पर जनता ने मारा ऐसा धक्का !
तभी सामंतों ने इन्हें मारने का किया था इरादा पक्का.
भूमि आन्दोलन के इस मेधावी नेता संग
फैली जब जनलहरी!
सामंतों ने छल से घर में बुलाकर,
इस अनमोल रत्न पर चलाया दर्जनों कटारी !!
१९ नवम्बर १९५४ ई0 को वे
महज २७ साल के ही अल्पायु में !
छोड़ हमें इस दुनिया में,
चले गए खुद अमरत्व पाने !!

डॉ0 प्रभु नारायण चक्रवर्ती का जन्म 1927 ई० के आसपास एक अत्यन्त परिश्रमी कृषक परिवार रामलाल पंडित, दादा रेवन पंडित, परदादा खुभलाल पंडित के घर में हुआ था. इनके पूर्वज अपने समाज में अत्यंत प्रतिष्ठित और धर्मावलम्बी थे. उनके चचेरे भाई श्री जय नारायण पंडित गृहस्थ जीवन बिताते हुए आजन्म धर्मवाचक रहें, जिन्हें आदर से लोग पूजेरी बाबा भी कहा करते थे. बचपन से ही अत्यंत प्रखर बुद्धि के धनी मेधावी डॉ० प्रभु दु:खी जनता के लिए अल्पायु में ही अपने प्राणों की बलि चढ़ा दी.

डॉ० प्रभु का जन्म पूर्वोत्तर बिहार के वर्तमान खगड़िया जिला (मुंगेर जिला से कटकर 1981 ई० में जिला घोषित) में चौथम थाना अन्तर्गत (वर्तमान मानसी थाना) के अमनी गांव में हुआ था. यह इलाका अत्यंत पिछड़ा हुआ था. बागमती नदी के दक्षिणी किनारे पर बसे इस गांव में एक भी स्कूल नहीं था. परन्तु इनकी माता घाना देवी जो अपने इस प्रथम संतान से काफी स्नेह रखती थी और

किसी भी हालत में इन्हें पढ़ाना चाहती थी. हालांकि माता स्वयं निरक्षर थी और मात्र 20 तक ही गिनती गिनना जानती थी, गाही, कौड़ी आदि से गिनती करती थी और घर गृहस्थी का भार सम्भालती थी. बुद्धिमती माता ने अपने सन्तान के मेधा को बचपन में ही तार लिया था, इसलिए उन्होंने इन्हें अपने पिता के पास बाबु बगीचा (बन्नी) के नवटोलिया गांव में ही रखकर पढ़ाना-लिखना शुरू की. अपने नाना-नानी और दोनों मामा-मामी के लाड़-प्यार में डॉ० प्रभु पलने-बढ़ने और शिक्षा प्राप्त करने लगे. इनका पूरा बचपन यही बीता. देश में चल रहे साम्राज्यवादी अंग्रेजी राज के खिलाफ राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रभाव में यहीं से जुड़ गये थे. इन्हीं दिनों महेशखूँट के विख्यात आयुर्वेदाचार्य से डॉ० प्रभु ने आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति की अच्छी शिक्षा प्राप्त किये और किसी आयुर्वेद चिकित्सा महाविद्यालय (नामालूम) से डिग्री हासिल कर लिये थे. बुनियादी शिक्षा कहां तक प्राप्त कर सके थे इसके प्रमाण उपलब्ध नहीं हो सके हैं लेकिन पिता द्वारा और आगे पढ़ाने की अनिच्छा के चलते पड़ोसी संसारपुर पंचायत के 'रामगंज टिचर्स ट्रेनिंग स्कूल' से शिक्षक की ट्रेनिंग प्राप्त कर सरकारी शिक्षक में बहाल होकर धनछर प्राथमिक विद्यालय में नौकरी करने लगे.

अपने चारों तरफ शोषण और पिछड़ापन से ग्लानिमय लोगों के जीवन को देखकर इनसे रहा नहीं गया और नौकरी छोड़कर सामंतवाद-साम्राज्यवाद विरोधी सक्रिय राजनीति में कूद पड़े. इन दिनों उत्तर भारत में खासकर यू० पी०, बिहार आदि राज्यों में डॉ० राममनोहर लोहिया, जयप्रकाश नारायण वगैरह नेताओं के नेतृत्व में सोशलिस्ट पार्टी का प्रभाव बढ़ रहा था. ये इससे जुड़कर सक्रिय राजनीति में कूद पड़े और गांव-गांव में घूम-घूम कर जनता को जगाने और संगठन के कार्यों में तहेदिल से जुट गए.

लोगों को समझाकर संगठन में लाना, गांव-गांव में स्कूल खोलवाना, जनसहयोग से सड़क व रास्तों में मिट्टी डलवाकर मुख्यमार्ग से गांवों को जोड़कर आवगमन के दिक्कतों को हल करवाना, विपत्तिग्रस्त लोगों को सरकारी राहत दिलाने में मदद करना, घर-घर से बच्चों को स्कूल भेजवाने के लिए अभिभावकों को उत्साहित करना, बीमारों का इलाज करना व औषधालयों में चिकित्सा करवाने के लिए प्रोत्साहित करना और ओझा-गुनी के चक्कर में न पड़ने की सलाह देना, रोकना या मना करना जैसे सामाजिक आन्दोलनों के सक्रिय भागीदारी में जुट गये. कृषि कार्य से जुड़े भूमिहीनों को संगठित कर बड़े जमीन्दारों के खिलाफ जमीन दखल की लड़ाई में जनता का अगुआई करना. आपसी विवादों

को समझा-बुझाकर हल करके जनता को एकसूत्र में बांधकर प्रत्येक गांव में जा-जाकर प्रचंड जनशक्ति पैदा करना इत्यादि इनका प्रमुख कार्य व पेशा बना गया. इस दौरान अपने गांव अमनी में भी एक सरकारी स्कूल खोलवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाये थे. साथ ही शहर के मुख्य कॉलेज कोशी कॉलेज, खगड़िया के विकास में भी अपना रचनात्मक योगदान दिये थे. गांव के बच्चों को गुल्ली-कौड़ी खेलने से रोककर स्कूल-कॉलेज भेजवाना. गांव-गांव में पारंपारिक खेल-कूदों को प्रोत्साहित करना, खासकर कुश्ती के लिए युवकों को अखाड़ा पर लाना, अच्छे स्वास्थ्य व साफ-सफाई पर ध्यान दिलाना आदि इनके रोजमर्रा के कार्य में शामिल हो गया था. इससे वह प्रचंड जनशक्ति पैदा हुई जिसने एक भूचाल पैदा कर दिया. सोशलिस्ट राजनीति में डॉ० प्रभु का असर ऐसा था कि अपने साथियों में सबसे प्यारे थे. खासकर सम्पूर्ण फरकिया क्षेत्र उन दिनों उनके ही नेतृत्व में आन्दोलित हो उठा था. यहां तक कि सिमरी-बख्तियारपुर के एक बड़े जमीन्दार चौधरी नजीर हुसैन नबाव जो कांग्रेसी माने जाते थे, इनसे खूब बहस किया करते और सम्पूर्ण 14 कोस के स्टेट को सम्भालने वाले चार उच्च अधिकारी मैनेजर डॉ० प्रभु के सोशलिस्ट नीति को मान लिये थे, उनमें से एक मो० खलीलुद्दीन इनके परम मित्र बन गये (खलील बाबु जो बाद के दिनों में सहरसा के निकट अपने गांव सटीनाबाद पंचायत के मुखिया बने). तात्कालिन मुंगेर जिला में 1985 ई० के चुनाव में खगड़िया संसदीय क्षेत्र से सांसद श्री सुरेश मिश्र के अलावे कई अन्य एम० एल० ए० भी निर्वाचित हुए थे.

एक तरफ डॉ० प्रभु जनता की सेवा में इस प्रकार जुटे थे किन्तु, दूसरे तरफ इनके पैतृक गांव अमनी में ही इनके बढ़ते वैभव, शान-शौकत व प्रतिष्ठा से खफा एवं सामंतों की अपनी सामंती-मनमर्जी नहीं चलते देखकर सामंती तत्व अत्यन्त रूष्ट हो उठे. सामंतों ने एक जाति विशेष के जनता को भड़काकर अपना पक्ष मजबूत करने एवं गांव की एकता व सौहर्द को भंग करने के लिए प्रचार शुरू किया कि, ''आयं ! कुम्हार जाति का एक लड़का इतना आगे ... हमलोगों से इतना आगे बढ़ता जा रहा है कि सबलोग उसी के पीछे है, हमें कोई पूछता ही नहीं. इतना धन-पैसा-बल-बुद्धिवाले हमलोग कुछ भी नही ! इसलिए इसे अगर मार दिया जाये तभी हमारा पूछ बढ़ेगा ...'' इत्यादि-इत्यादि. इस प्रकार डॉ० प्रभु को मार डालने का बीड़ा उठाया सामंतों का सरगना कुख्यात रामसेवक सिंह ने. कुख्यात दुष्ट रामसेवक सिंह छद्मवेश में इनके अनुयायियों में शामिल हो गये और अपने षड्यंत्र को अमलीजामा पहनाने में जुट गये. राम सेवक सिंह के इस

बीड़ा को उठाने के पीछे इसके अलावे मुख्यत: तीन कारण और भी गिनाये जा सकते हैं :

(१) बलात्कारी रामसेवक सिंह : एक लड़की के साथ अवैध यौन संबंध बनाते समय लड़की के पिता श्री रामेश्वर पंडित द्वारा आपत्तिजनक अवस्था में रंगे हाथ पकड़े गये थे. रामेश्वर पंडित डॉ० प्रभु के परिवार में से थे, जो चाचा के रिश्ते में लगते थे और लड़की डॉ० प्रभु के रिश्ते में बहन थी. मालूम होते ही डॉ० प्रभु रामसेवक के इस करतूत का भारी विरोध किये. जान बचाने के डर से बलात्कारी रामसेवक सिंह का परिवार गांव में सामाजिक पंचायत बुलाये. भरी पंचायत (सभा) में रामसेवक सिंह अपना गलती स्वीकार किये और आइन्दा ऐसा न करने का वचन दिये. सामाजिक दण्ड के तौर पर कान पकड़कर उठक-बैठक और धरती पर थूक फेंककर चाटे. इसके बाद पंचायत की तरफ से डॉ० प्रभु से रामसेवक को माफ कर देने का अनुरोध किया गया. समाज और डॉ० प्रभु के द्वारा माफ कर दिये जाने के बाद डॉ० प्रभु, रामसेवक सिंह को पहले के ही तरह छोटे भाई के तौर पर प्यार से साथ में खिलाने भी लगे थे. परन्तु खार खाये कुकर्मी रामसेवक सिंह डॉ० प्रभु की हत्या करने के गुप्त षड्यंत्र में शामिल हो गया.

(२) समाजिक रास्ते के लिए विवाद : उस समय के सबसे बड़े सामंत रामलखन सिंह (तत्कालिन सरपंच) पे० किशुन प्रसाद मड़र मुख्य सड़क से भीतर बस्ती (दक्षिण की तरफ) जाने-आने के मुख्य मार्ग का बड़ा हिस्सा जबरन हथियाकर अपना निजी घर बनाना चाहते थे. इससे आवागमन में काफी दिक्कत होता. इसलिए समाज के लोग रामलखन सिंह से अनुरोध किये थे कि, 'आप राजा हैं, ढ़ेरी जमीन आपको है, कहीं भी घर बना सकते हैं, इतना जमीन छोड़ दीजिए, हमलोगों को जाने-आने में दिक्कत होगा...।' लेकिन रामलखन सिंह इस बात को नहीं माने और रास्ते को घेरना शुरू कर दिये. तब डॉ० प्रभु के नेतृत्व में पूरा समाज इस अन्याय के विरोध में उठ खड़ा हो गया. इस वजह से रामलखन सिंह उस जमीन को उस समय दखल नहीं कर सके थे. तब एक षड्यंत्र के तहत बगल के एक आदमी वासदेव पंडित को जमीन दे देने का लालच देकर समाज से फुटा लिया और रास्ते की जमीन को कानूनन हड़पने के लिए उनसे रास्ते की जमीन का कागज बनवा लिया. यह विवाद न्यायालय जा पहुंचा. निचली अदालत से विवाद का हल नहीं होने के कारण मामला हायकोर्ट (पटना) जा पहुंचा. यही मुकदमा चल रहा था.

इसके वावजूद इन दिनों सामाजिक सौहार्द अनुपम था. सामाजिक रिश्तों

के अनुसार रामलखन सिंह, डॉ० प्रभु का चाचा लगते थे. आपसी विवाद में दोनों एक-दूसरों के विरोधी थे, लेकिन केश लड़ने दोनों पक्ष साथ ही पटना हायकोर्ट जाते और साथ ही आते भी थे. रास्ते में या कोर्ट में भी साथ ही खाना खाते थे, सिर्फ काम के लिए दोनों अपने-अपने वकील के पास जाते और अपने-अपने हितों में केशों की पैरवी करते थे. यहां तक कि अगर इस काम के दौरान किन्ही को पैसा घट जाता तो एक-दूसरों से पैसा मांग लिया करते थे. इसी से पता चलता है कि कितना अनुपम रहा होगा उन दिनों का सामाजिक सौहार्द !!!

जब डॉ० प्रभु के पिता को यह पता चला कि मेरा बेटा शिक्षक का नौकरी छोड़कर गांव-गांव घूमकर जनता को संगठित करके जमीन्दारों के खिलाफ आन्दोलन में कूद पड़ा है तो अनजान पिता अत्यन्त कुपित हुए. इनसे मुलाकात करके पिता रामलाल पंडित ने कहा था, 'गांव-गांव घूम-घूम कर दूसरों का अन्न हराम का खाते फिरता है, चलो ! अपना खेती-बाड़ी सम्भालों ! बोरा ढ़ोओ ! अब से कहीं नहीं जायगा...'. अपने पिता को इस प्रकार क्रोधित देखकर डॉ० प्रभु ने बड़ी होशियारी से उनको खुश करने के लिए बलहा बाजार (बदला घाट रेलवे स्टेशन के समीप के बाजार) में ही एक औषधालय खोलकर चिकित्सा कार्य में जुट गये और उसकी दैनिक जवाबदेही में अपने ममेरे भाई वासुदेव पंडित को नियुक्त करके अपने साथियों के साथ जन-कार्य में जुटे रहे. हालांकि अच्छे चिकित्सक के रूप में भी इनकी प्रतिष्ठा खूब बढ़ी लेकिन मुख्य पेशा जनता की सेवा व राजनीति ही रहा.

(३) अमनी के यादव व ब्राह्मण परिवारों के साथ बेगूसराय के जमीन्दारों का जमीन संबंधी विवाद : बहुत पुराने समय की बात है. बेगूसराय-लावगांव के हजारों बीघा जमीन के जोतवाले एक सामंत हरिनन्दन मिश्र उर्फ पंडित के पूर्वज अमनी गांव के रास्ते माँ कात्यायनी स्थान (माईजीथान) तीर्थ करने जाया-आया करते थे. ये 'पंडित' महोदय 'रास्ता विश्राम' अमनी में ही किया करते थे. ब्राह्मण होने के कारण अमनी के ब्राह्मणों से इनका सौहार्द बढ़ा. माँ कात्यायनी स्थान के पुजारी होने के कारण भी अमनी के ब्राह्मण से पूर्व-परिचय था. उस समय अमनी के ब्राह्मण और यादव परिवार भी सैकड़ों एकड़ जमीन के मालिक थे और आर्थिक रूप से समृद्ध भी थे. चतुर सयाने पंडित जमीन्दारों को इनलोगों के उपजाऊ जमीन को हड़पने का लालच हो गया था. इसलिए चतुर 'पंडित' ने इन यादवों और ब्राह्मणों के अशिक्षा, भोलेपन और सहज विश्वासीपन से लाभ उठाकर पहले-पहल तो अपने विश्वास में ले लिया और बाद में इन्ही के रूपयों से

इनका सारा जमीन अपने नाम, तत्कालीन मुंगेर जिला मुख्यालय के अंग्रेज जमीन्दारी से करवा लिये. जमीन से बेदखल किये जाने से पहले तक पंडित जमीन्दार इस षड्यन्त्र का भनक तक किसी को लगने नहीं दिया.

1947 ई० से अंग्रेजी शासन का प्रत्यक्ष अन्त हो जाने के बाद देश की आन्तरिक स्थितियों में जमीन्दारी प्रथा (लैण्ड सेटलमेंट एक्ट) भी अन्तिम सांस गिन रहा था और सामाजिक-आर्थिक सम्बन्धों में भी पुराने के स्थान पर नए-नए मालिक उभर रहे थे. उधर राष्ट्रीय आन्दोलनों के प्रभाव से यहाँ भी जन-जागृति फैल रही थी. जागरूक डॉ० प्रभु नारायण चक्रवर्ती को अपने समाज के लोगों की दुर्दशा मालूम ही था इसलिए यादव युवाओं और ब्राह्मण युवाओं को अपने पूर्वजों की जमीन 'पंडित जमीन्दार' से वापस लेने की शिक्षा दिये और उसे हासिल करने में तहे दिल से साथ भी दे रहे थे. कहा जाता है कि कई बार पंडित-जमीन्दार ने डॉ० प्रभु को यादवों और ब्राह्मण परिवारों का साथ छोड़ देने के लिए आर्थिक व अन्य लालच देने का पेशकश कर चुके थे, किन्तु आदर्श के पक्के डॉ० प्रभु जनता का पक्ष कभी नहीं छोड़े और पंडित जमीन्दार द्वारा दिये गये लालच को निष्ठुरतापूर्वक ठुकरा दिये.

इसी उपरोक्त उबलती परिस्थिति में रामसेवक सिंह ने रामलखन सिंह परिवार के कुछ युवाओं को और पंडित जमीन्दार के स्थानीय मैंनेजर (अमनी के ही) गेना सिंह (डकैत गिरोह) समेत राघो पहलवान (डकैत), शिवनारायण सिंह (तहसीलदार) समेत लगभग आठ लोगों का गिरोह गुप्त रूप से तैयार किया. इस गिरोह का एकमात्र लक्ष्य था डॉ० प्रभु नारायण चक्रवर्ती का किसी भी हालत में हत्या करना. इसके बाद गांव के जनता का धन और धर्म लूटना. परन्तु जनता में अत्यन्त ही लोकप्रिय डॉ० प्रभु के हत्या के षड्यंत्र में वे सफल नहीं हो पा रहे थे.

डॉ० प्रभु के हत्या के षड्यंत्र में लगातार विफल होने का सबसे बड़ा कारण था कि जनता में अत्यन्त ही लोकप्रिय होने के कारण ये अपराधी गिरोह आमने-सामने टकराने का साहस नहीं जुटा पाते थे, दूसरे स्वयं डॉ० प्रभु भी अत्यन्त सतर्क रहते थे और शरीर से भी इतने ताकतवर थे कि इन लोगों का आमने-सामने की लड़ाई में टिकना संभव नहीं था. तब इन हत्यारों ने कपट का सहारा लिया और छल से घर में बुलवाकर हत्या करने का एक-के-बाद-एक योजना बनाया.

एक योजना तो स्वयं रामलखन सिंह की बूढ़ी माँ ने ही विफल कर दिया था. जब उनकी माँ को पता चला कि रामलखन ने इतने हथियारबन्द लोगों

को इसलिए घर में बुलाया है कि मेरी बीमारी का इलाज करने के बहाने डॉ० प्रभु को बुलवा कर उनका हत्या कर सके. तब उन्होंने इतना हल्ला-गुल्ला मचाया कि सबों को भागना पड़ा.

तब इन हत्यारे गिरोहों ने यही नीति अपनाकर 19 नवम्बर 1954 ई० को हत्या का समय निश्चित किया क्योंकि इसी दिन मानसी में चौथम के बी०डी०ओ० द्वारा तकावी ऋण व रिलीफ वगैरह अमनी की जनता के बीच बांटना था, जिसके लिए गांव के लगभग सभी लोग चले जाने वाले थे और उनके साथ ही डॉ० प्रभु को निगरानी हेतु खुद भी जाना था.

इन षड्यंत्रकारियों में से एक रामलखन सिंह का भतीजा दीपो सिंह का कोशी कॉलेज में एडमिशन नहीं हो पा रहा था. उसके एडमिशन के लिए कोशी कॉलेज, खगड़िया के प्राचार्य के नाम एक सिफारिशी पत्र डॉ० प्रभु लिखकर उसे दे दिये थे. परन्तु इन षड्यंत्रकारियों ने अपने षड्यंत्र के तहत कुछ रोज विलम्ब से एडमिशन लेने का योजना बनाया. निर्धारित दिन डॉ० प्रभु ने घूम-घूम कर सभी लोगों को मानसी भेजवा दिये और खुद खाना खाकर मानसी जाने ही वाले थे कि षड्यंत्रकारी दीपो सिंह इनके घर इन्हें बुलाने पहुँच गए. मात्र एक कौर खाना खाये ही थे कि दीपो सिंह पर नजर पड़ते ही डॉ० प्रभु बिगड़ उठे, 'अरे तुम अभी तक यहीं है, एडमिशन कराने गया नहीं ? आज ही भर डेट था, ऐसे में तो तुम्हारा जीवन खराब हो जायेगा.' परन्तु षड्यंत्रकारी दीपो सिंह को अपने जीवन की क्या फिक्र ! रिरियाकर कहने लगा, 'हो भैया ! सोचलियै साइकिले सेय चैल जैबय, से साईकिले में से हवा निकैल गेलैय, आब कि करियैय...?' इस पर डॉ० प्रभु साईकिल लेकर आने के लिए कहे (उस समय साईकिल चलाना और उसका देखरेख करना बहुत ही कम लोगों को मालूम था). लेकिन फिर दीपो सिंह रिरियाते हुए बोला, 'चेनो ओझरायल छय, से नेने आवै में नय बनलैय, आपने से चलहो तनि भैया.' अपनी पत्नी कौशल्या देवी के खाकर जाने के अनुरोध के बाद भी डॉ० प्रभु यह कहते हुए चल दिये कि, 'खाना आकर खा लेंगे, इसके लाइफ का सवाल है.' परन्तु खाना खाने वे फिर कभी नहीं आ सके और बलात्कारी दुष्ट रामसेवक सिंह के भयानक कृत्य का शिकार बन गये.

डॉ0 प्रभु की शहादत :

स्कूल से उत्तर सड़क से सटे दीपो सिंह के बंगला पर जब डॉ० प्रभु पहुंचे तो बरामदा पर अच्छे लाल सिंह, शिवनरायण सिंह, नारायण सिंह समेत कई लोग बैठे ताश खेल रहे थे. सड़क व दरवाजा के बीच के प्रांगण में साईकिल लाने

के लिए डॉ० प्रभु दीपो को कहे. तब दीपो बोले कि, 'अंदर भुसकारा में रखल छय, निकालैयों में नय बनय छैय, ऊहें चलअ भैया' (जहां तमाम हत्यारे रामसेवक सिंह, राघो सिंह, गेना सिंह, गेना डकैत गिरोह के माड़र के झक्सू मियां समेत अनेक लोग पहले से ही घातक हथियारों से लैस होकर डॉ० प्रभु के आने का बेसब्री से इन्तजार कर रहे थे. डॉ० प्रभु भेड़ के खाल में छिपे इन भेड़ियों को पहचान नहीं पाये और इस षड्यंत्रकारी दीपो सिंह के जीवन को संवारने की चिंता में अन्दर भुसकारा में जाकर साइकिल में पम्प से हवा देने जैसे ही बैठे थे कि चारों तरफ से लाठी, भाला जैसे घातक हथियारों से लैस हत्यारों ने हठात् हमला बोल दिया.

इन पापात्माओं के षड्यंत्र को जब तक डॉ० प्रभु समझते तबतक काफी देर हो चुकी थी. इसके बावजूद यह वीर योद्धा उन हत्यारों से भिड़ गये. निहत्थे डा० प्रभु अपने नाखूनों और अपने तीखे दांतों से अनेकों को काट डाले और कोठरी से बाहर निकल आये. किन्तु झक्सू मियां वगैरह पीछे से कमर पकड़कर लटक गया और पीछे खींचते हुए पुनः अंदर ले आया और चारों तरफ से घातक वार इन कायरों ने किया. इसके बावजूद आखिर तक लड़ते हुए जोर-जोर से चिल्ला कर लोगों को बुलाने लगे. किन्तु धूर्त षड्यंत्रकारियों ने वक्त भी ऐसा ही चुना था कि बचाव के सारे रास्ते बंद हो चुके थे. समाज के अधिकांश लोग जो मदद में आते उन सबको वे मानसी भेज चुके थे, जहां बी० डी० ओ० समेत तमाम लोग इस धूर्तों के कारनामों से अनजान शाम तक डॉ० प्रभु के पहुंचने का इन्तजार करते रहे या फिर खेतों में चले गये थे.

उधर नजदीक के स्कूल में हत्यारों ने बच्चों को जोर-जोर से चिल्ला-चिल्लाकर पढ़ने का आदेश शिक्षकों के द्वारा दिला रखा था ताकि उनके आवाज की गूंज बाहर नहीं निकल सके. बच्चे जिसमें डॉ० प्रभु का छोटा भाई परमानंद भी थे, इस षड्यंत्र से अनजान थे. उधर जब-जब डॉ० प्रभु हल्ला करके लोगों को पुकारते तब-तब ताश खेलने वाले हत्यारों का सहयोगी ठहाका मारकर इस प्रकार हंसते ताकि उनकी आवाज दब जाये. बच्चों का शोर और हत्यारों के ठहाकों के बीच उनकी आवाज सदा के लिए विलीन हो गयी.

इस प्रकार, अमनी की धरती का यह अनमोल रत्न जनता के बीच से सदा के लिए विदा हो गए और अपने पीछे डेढ़ साल का एक पुत्र, गर्भवती पत्नी, माता-पिता, रोग-ग्रस्त छोटा भाई, तीन सगी बहनें, चाचा-चाची समेत कुल परिवार और समाज को छोड़ गये. उनके हत्या के बाद का आलम यह था कि

उनकी हत्या की खबर सुनते ही कई लोग अपना मानसिक संतुलन खो बैठे और काफी इलाज के बाद ही पूर्णतः या अंशतः ठीक हो पाये. स्वयं उनकी शोकग्रस्त पत्नी अपने आंखों की रोशनी खो दी और कुछ ही वर्षों के बाद मौत को गले लगा ली.

इनके हत्या के बाद इन हत्यारे पापियों ने आम जनता पर इस प्रकार अकथनीय जुल्म बरपाये कि समूचा समाज चीत्कार उठा. यह भयानक स्थिति अगले जनान्दोलन तक अनवरत् जारी रही जब तक कि जनता ने इस पापियों को उचित दण्ड नहीं दिया.

डॉ० प्रभु के हत्यारों के अगुवा कुकर्मी बलात्कारी रामसेवक सिंह अपने जीवन के आखिरी दिनों में अपने सड़ चुके और कीड़े पड़ चुके शरीर को निहारते अपमानजनक हालत में अपने कुकर्म पर पश्चाताप करते और कहते, 'जैसा मैंने कुकर्म किया उसका फल मुझे इसी जन्म में जीते जी मिल गया...यह सारा कुछ निष्पाप डॉ0 प्रभु के हत्या करने के कारण ही हैं...'. और अपनी घिनौनी हालत पर रोते थे.

डॉ० प्रभु के शहादत के 20 वर्षों बाद उनके पिता के सोच में कैसा परिवर्तन आया, एक संस्मरण सुनाता हूँ : अपने पूर्ण जीवन काल के अन्तिम वर्षों में सन्यासी बने डॉ० प्रभु के वृद्ध पिता श्री रामलाल पंडित बद्रीनाथधाम का तीर्थयात्रा करके करीब छः महीने बाद अपने पैतृक गांव अमनी अपने पौत्र के साथ वापस लौट रहे थे. रास्ते में लोगों द्वारा जब इस वृद्ध सन्यासी को दण्डवत् प्रणाम करते हुए इनका नाम-पता पूछा करते. अमनी गांव का नाम सुनते ही पूछने वाले इनसे डॉ० प्रभु के पिता व बेटा का हालचाल भी पूछने लगते. जब वे स्वयं को डॉ० प्रभु का पिता और साथ के पौत्र को डॉ० प्रभु का बेटा कहकर परिचय देते तो लोगों के बीच इनका सम्मान बढ़ जाता और तुरन्त ही आत्मीय बन जाते. डॉ० प्रभु से जुड़े पुराने संस्मरण सुनाने लगते. लोगों द्वारा मिले इस आदर-भाव से अभिभूत वृद्ध सन्यासी ने रास्ते में ही चलते-चलते अपने पौत्र से कहा था, 'देखो बेटा ! मैं अपने धर्मपरायण गृहस्थ जीवन में हड्डीतोड़ मेहनत (कठिन परिश्रम) किया और ईमानदारी से परिवार का भरण-पोषण किया. फिर भी इस उमर में भी लोग मुझे नहीं जानते हैं. तुम्हारा पिता जो कम ही उम्र में जनता की सेवा करते हुए शहीद हो गए, लोग उनके द्वारा मुझे जानते हैं. तुम भी जीवन भर जनता की सेवा करना...'.

बाद के दिनों में इन्होंने यह भी बताया कि, 'जीवन भर हम और हमारा

सम्पूर्ण परिवार धर्मपरायण रहा. परिश्रमपूर्वक जीवन-यापन करते हुए गृहस्थ जीवन जीया. जीवन में कभी किसी प्रमुख तीर्थ में नहीं गया था, लेकिन इस उम्र में जब तीर्थों में गया, कष्ट झेला, बड़े-बड़े नामी सन्तों से मिला, प्रवचन सुना तब उन सारे अनुभवों के आधार पर कह रहा हूँ कि जिस भक्ति-भाव से श्रद्धापूर्वक हमलोग देवी-देवताओं और तीर्थों के बारे में सम्मान रखते रहे हैं, वास्तव में वैसा कहीं कुछ नहीं है. सब झुठ बात है. शुद्ध-आडम्बर और ठगों का धन्धागिरी है..., कभी इस सब के फेरे में मत फंसना, विश्वास मत करना. यह मानव जीवन ही मूल्यवान है. सच्चा ज्ञान हासिल करना और दु:खी जनता का सेवा करना ही बड़ा धर्म है...'.

सत्यनारायण यादव और सीताराम सिंह का मारा जाना

अमनी गांव से एक किलोमीटर पूरब बहियार में जमीन्दार पंडित हरिनंदन मिश्र के कब्जे से अपने पूर्वजों की जमीन दखल करने खेलामाड़र के बेटे और पोते अपने सहयोगियों के साथ सशस्त्र होकर पहुंच गए. इधर पंडित जमीन्दार की तरफ से उसका स्थानीय मैनेजर गेना सिंह भी अपने सहयोगी सीताराम सिंह, बिरंची सिंह बगैरह के साथ सशस्त्र होकर पहुंचे. दोनों पक्षों के बीच घमासान लड़ाई हुई. इस लड़ाई में दोनों पक्षों के बहुत से लोग घायल हुए. इन्हीं घायलों में से 'पंडित' जमीन्दार पक्ष से सीताराम सिंह और खेलामड़र के औलादों में से एक उनका पौत्र सत्यनारायण यादव की मृत्यु हो गई.

यह घटना लगभग 1959 ई० की है, जिसमें इन दोनों योद्धाओं की दर्दनाक मौतें हुई थी. दोनों ग्रामीण योद्धा अमनी के ही बेटे थे, जिसे जमीन्दारों ने अपने स्वार्थ के खातिर आपस में लड़वाकर मरबा डाला था, **लेकिन इस बात को समझाते कौन ?** सभी तो आपस में ही एक-दूसरे के खून के प्यासे थे. **अगर सभी योद्धा आपस में मिल जाते और जमीन्दार के खिलाफ मिलकर लड़ते तो इन दोनों वीर सपूतों का जीवन भी नहीं जाता और उस जमीन के लिए आपसी लड़ाई में इतना खून-खराबा भी न होता बल्कि आइन्दा के लिए लड़ाई ही रूक जाती और जीवन भी खुशहाल हो उठता.** लेकिन ऐसा करता कौन ? इन दिनों गांवों में सन्तानिक समझे जाने वाले लोग जिनका भी समाज पर थोड़ा प्रभाव था, वे सब-के-सब दिशाहीन थे और एक-दूसरे पक्षों के बारे में दुर्भावनाओं से ग्रसित थे. जिनके पास दम-खम था, जो सारे समाज को एकसूत्र में बांध सकते थे और बांधने की क्षमता रखते थे वे थे, डॉ० प्रभु नारायण चक्रवर्ती. जिन्हें पहले ही मारा जा चुका था और उनके शहादत के बाद गांवों में गुंडा, बलात्कारी, घरढुक्कों, सूदखोरों, भोले-भोले जनता को आपस में लड़ाने वालों, ठगों आदि का बोलवाला हो गया था.

बटाईदार कामो यादव का मारा जाना

अमनी गांव के अग्निकोण (दक्षिण-पूर्वकोण) में 200 मीटर की दूरी पर कमरजाना बहियार में मेहसौड़ी गांव के एक भूमिपति भोथर तिवारी का जमीन था. वर्षों से इस जमीन को रांगी यादव, बालदेव यादव और कामो यादव तीनों भाई के अलावा कई हरिजन परिवार जोत-आबाद करते आ रहे थे. इनके जीविका का साघन एकमात्र यही जमीन था. जमीन्दार इनसे बटेदारी छीनकर दूसरों को वह जमीन देना चाहते थे. ये तीनों भाई वगैरह इस बात का विरोध कर रहे थे. इस कारण जमीन्दार ने अमनी के ही कुछ जुझारू किन्तु दिशाहीन बेटों (राधे यादव, आनन्दी यादव, धारी मंडल, श्रीकांत मिश्र, बासो यादव, आनन्दी सिंह पहलवान वगैरह) को अपने पक्ष में जुटाकर कामो यादव को जमीन पर से बेदखल करने के लिए हुला दिया. कामो यादव के पक्ष से इस लड़ाई में गेना सिंह ने सपरिवार सक्रिय सहयोग दिया था. फलस्वरूप दोनों पक्षों में भयानक लड़ाई हुई. पहली बार इस लड़ाई में लाठी, भाला, गड़ासा, तीर जैसे परम्परागत हथियारों के अलावे पाईपगन जैसे अग्नेयास्त्र से बन्दूक की गोली भी दागी गई थी. आनन्दी यादव द्वारा चलाई गई गोली (बुलेट) यदुराम के जांघ को छेदते हुए बिन्देश्वरी यादव के जांघ में जा लगी. कामो यादव मौके पर ही मारे गए और बालदेव यादव बुरी तरह जख्मी हुए. बांकी इनके पक्ष से पहुंचे लगभग सभी लोग बुरी तरह मार खाये.

दुर्भाग्यवश समझ की कमी के चलते जनता के एक हिस्से के खिलाफ दूसरे हिस्से के लड़ाकू बेटों ने जमीन्दारों के हित के लिए अपने ही समाज के, अपने ही भाई-बन्धुओं के खिलाफ लड़ पड़े और रक्त बहाये. यह लड़ाई लगभग 1967 ई० में हुआ था. **काश ! सभी लोग एकजुट होकर जमीन्दार के खिलाफ लड़ते तो कितना अच्छा होता.** हमने उस चाची (कामो यादव की पत्नी) और बच्चों को उनके लाश पर रोते-बिलखते देखा था, जिन्हें अपने लोगों ने ही मार डाला था. इस लड़ाई में कामो यादव अपने हक की लड़ाई लड़ते हुए मारे गये थे, सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से इनके पक्ष को ही न्यायपूर्ण माना जाना चाहिए क्योंकि **सामंतवाद के खिलाफ लड़ाई में इन्होंने अपना प्राणोत्सर्ग किया था.**

धारी मंडल का मारा जाना

घटनास्थल अमनी से लगभग एक किलोमीटर अग्निकोण (दक्षिण-पूर्व) बारीनियां गाछी था. फौदार यादव-दारोगी यादव सपरिवार के खिलाफ फसल क्षति के आरोप में आनन्दी सिंह के नेतृत्व में श्यामनंदन सिंह, राघो सिंह, आनन्दी पहलवान, धारी मंडल वगैरह सैकड़ों आदमी सशस्त्र होकर लड़ने जा पहुंचे. आसन्न खतरों को भांपकर अचानक हुए इस हमलों से मौके पर मौजूद फौदार यादव, दारोगी यादव, बाढ़ो यादव और रामदेव यादव चारों भाईयों ने अपने को चारों तरफ से घिरे पाकर लाठी से आत्मरक्षा में लड़ने लगे. घमासान लड़ाई शुरू हो गई. परन्तु इन चारों लड़ाकों के आगे धारी मंडल के अलावे कोई भी ठहर न सके. सबके सब प्राण बचाकर भाग खड़े हुए. लड़ाई के दौरान दारोगी यादव बगल से ऐसा लाठी चलाये कि धारी मंडल संभल नहीं पाये और चोट खाकर गिर पड़े. इसके बाद तो गड़ासा से काटकर इनकी हत्या कर दी गई. इन चारों भाईयों ने खदेड़-खदेड़ कर ऐसा मार किये कि बिना चोट खाये शायद ही कोई बचे हों.

धारी मंडल एक पुरानी रंजिश के कारण और मारने वाले भी पुरानी वैरभाव के प्रतिशोध में ही इन्हें मार डाले. जबकि जवानी के शुरूआती दिनों में सभी एक साथ रहते थे और कहीं भी लड़ाई होता था तो सभी सामूहिक रूप से लड़ने जाते थे.

घटना का कारण यह था : इस लड़ाई के 12 वर्ष पहले जब डॉ० प्रभु थे ही. फौदार यादव-दारोगी यादव परिवार के साथ धारी मंडल परिवार के सभी लोगों में सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध था और सभी एक साथ खाते-पीते और रहते थे. इन्हीं दिनों धारी मंडल ने सामाजिक रीति-रिवाजों का उल्लंघन करते हुए पहलू यादव परिवार के एक सवासिन के साथ अवैध शारीरिक-संबंध कायम कर लिये और दोनों गांव से भागकर कलकत्ता चले गये. जब डॉ० प्रभु को इस घटना की जानकारी मिली तो वे स्वयं कलकत्ता जाकर दोनों को समझा-बुझाकर गांव ले आये और सवासिन (उक्त लड़की को) उनके माता-पिता के पास पहुंचा दिये. हालांकि डॉ० प्रभु के प्रयास और सूझ-बुझ के कारण दोनों परिवारों के बीच के भयंकर तनाव को कम करके तत्काल तो अप्रत्याशित अनहोनी को टाल दिये थे लेकिन अन्दर-ही-अन्दर जख्म हरा ही बना रहा.

समाज के वर्त्तमान ढ़ांचे में इस तरह की घटना को समाज स्वीकार नहीं करती है और इस दृष्टिकोण से माना जाए तो धारी मंडल के खिलाफ फौदार यादव परिवार का आक्रोश जायज था. लेकिन फसल क्षति के सवाल पर लोगों का आक्रोश ही सही था. फिर भी इस घटना में अगर आनंदी सिंह उतावला न होते और सामाजिक स्तर पर सामाजिक पंचायत बुलाकर सामुहिक रूप से समझाने-बुझाने का तरीका अपनाते तो संभवत: इतनी बड़ी घटना को टाला जा सकता था क्योंकि फौदार यादव-दारोगी यादव सपरिवार द्वारा घोर-गरीबी और नासमझी के कारण ही फसल क्षति हो जाया करता रहा. कमोवेश ऐसा बहुतों मालवरों (पालतू पशु रखने वाले) से होते रहा है.

(चूंकि इन दिनों राधेश्याम यादव और आनंदी यादव किसी केश में फंसकर जेल में बंद थे इसलिए प्रत्यक्ष तौर पर इस लड़ाई में ये लोग किसी पक्ष से लड़ने में नहीं थे.)

दोरिक सिंह की हत्या

गांव की अन्दरूनी राजनीति में भारी उथल-पुथल का दौर था. का० बी० के० आजाद के नेतृत्व में चलने वाले आन्दोलन का स्थानीय नेतृत्व अब तक आनंदी सिंह के जिम्मे आ चुका था. राधे यादव और आनंदी यादव दोनों भाई जेल से बाहर आ चुके थे (मुख्य जुझारू ताकत के अगुआ यही थे). रामसेवक सिंह की राजनीतिक व सामाजिक हैसियत सिकुड़ रही थी किन्तु, वे अत्यंत गतिशील थे और अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए बड़ी तेजी से अपने हाथ-पांव पटक रहे थे. वे राधे यादव-आनंदी यादव के साथ सटकर अपनी ताकत बढ़ाना चाहते थे. लेकिन ऐसा नहीं हो पा रहा था. चुंकि राधे यादव जेल से बाहर आने के बाद 'पंडित' के जमीन का फसल चुकती के हरबल्लम यादव के सहयोग से कटबा कर रहे थे. इसके अलावे दोरिक सिंह के पहल पर पंडित जमीन्दार ने 13 बिघा जमीन राधे-आनन्दी को देकर सन्धि कर लिये थे. इस वजह से यह शक्ति दोरिक सिंह के साथ हो गया था, जिससे एक तरफ आनन्दी सिंह की ताकत बढ़ी तो दूसरे तरफ दोरिक सिंह का शक्ति बढ़ गया. इस शक्ति संतुलन में रामसेवक सिंह के लिए अब कोई हैसियत नहीं बच पा रहा था इसलिए घाघ सामंत रामसेवक सिंह ने दोनों ताकतों को आपस में ही लड़ाकर अपना हैसियत बचाने का योजना बनाया. चुंकि दोरिक सिंह (जुझारू सामंत) कभी भी रामसेवक सिंह के बातों को तरजीह नहीं देते थे और दोरिक सिंह के साथ पश्चिम मुशहरी के बसो-बास के सवाल पर सी० पी० एम० के साथ मतभेद रखते थे, इसलिए रामसेवक सिंह ने दोरिक सिंह को मरवाने का षड्यंत्र बुना.

रामसेवक सिंह अपना लाभ इस रूप में देख रहे थे : अगर राधे-आनंदी यादव के द्वारा दोरिक सिंह को मरवा देते हैं तो इस केश में राधे-आनन्दी और आनंदी सिंह (सी० पी० एम० स्थानीय नेतृत्व आनंदी सिंह) फंसकर जेल जायेगा अर्थात्, एक मरेगा दूसरा जेल जायेगा. इसके बाद रामसेवक सिंह के खिलाफ बोलने वाला गांव में कोई शक्ति नहीं बचेगा और गांव पर पुन: पहले की तरह ही एकछत्र राज कायम करके 'पंडित' का जमीन भी सस्ता भाव में लिखवा लेंगे और घर-ढुक्की के काम में भी कोई रोकने-टोकने वाला नहीं रहेगा. (मालूम हो कि डॉ० प्रभु की हत्या करने के बाद रामसेवक सिंह का गरीबों-असहायों के घरों में घुस के उनकी

महिलाओं, बेटियों, वधुओं, नववधुओं के साथ अवैध-सम्बन्ध बनाना इनके रोजमर्रा के नियम में शामिल हो गया था. गरीब-असहाय लोग इनके आतंक के कारण मुंह बंद करके इनके सारे कुकर्म सहते थे. जरा भी विरोध करने पर ये उसे मरवा डालते थे या बेजा परेशान करते थे.) इसी वजह से रामसेवक सिंह ने राधे-आनंदी यादव को ललकार कर दोरिक सिंह की हत्या करवाने का षड्यंत्र रचा. इस प्रकार डॉ० प्रभु की हत्या के बाद बदनाम कुख्यात रामसेवक सिंह का गिरोह दोरिक सिंह की हत्या करवाकर बिना किसी क्षति के बेलाग अपनी स्थिति सुदृढ़ कर कर लेना चाहता था.

आईये, इस दु:खद प्रसंग को जरा विस्तार से समझा जाये क्योंकि अगली पीढ़ी को इससे सबक लेना है ताकि वे अपने जीवन व भविष्य में ऐसी गलतियों से सावधान रहे. इसके लिए पहले कुछ बिन्दुओं को समझे :

(*i*) डॉ० प्रभु की हत्या के बाद से अमनी ग्राम-पंचायत की आम जनता अपने अस्तित्व रक्षा के प्रति राजनैतिक रूप से दिशाहीन हो चुकी थी. कुकर्मी रामसेवक सिंह के गैंग के द्वारा जनता का धन-धर्म सब लूटा जा रहा था. इस भयानक शोषण-दोहन से आम जनता बुरी तरह त्रस्त और आतंकित थी. ऐसे ही समय में का० बी० के० आजाद का आगमन हुआ. जनता को आशा की एक किरण दिखाई दिया. लोग तेजी से संगठित होने लगे. **रामशरण सिंह, जर्नादन मिश्र और सहदेव सिंह** इसके स्थानीय अगुआ थे. अपने पारिवारिक अन्तर्कलह एवं अपने गोतिया से प्रतिशोध लेने आनंदी सिंह भी इस उभरती ताकत से आ जुड़े और तेज-तर्रार आनंदी सिंह जल्दी ही जनता की अगुआई स्वयं करने लगे.

(*ii*) धारी मंडल की हत्या के पश्चात् गांव के एक संगठित जुझारू ताकत फौदार यादव परिवार कमजोर हो गया था क्योंकि ये लोग केश में फंसकर जेल चले गये थे. उधर गोढ़ी जाति में और कोई लड़ाकू तत्व सामने नहीं आ पाया, जो गांव की राजनीति में कोई सार्थक भूमिका अदा कर पाते.

(*iii*) गेना सिंह परिवार का शक्ति भी तटस्थ रूख अपना लिया था, जिससे इस परिवार का भी गांव के आंतरिक राजनीति से सरोकर कम हो गया था. वैसे सहानुभूति कुकर्मी रामसेवक सिंह गिरोह के साथ ही बना रहा.

(*iv*) दोरिक सिंह स्वयं एक जुझारू ताकत थे, जो आर्थिक रूप से भी समृद्ध थे. इनका नजर भी पंडित-जमींदार के जमीन को सस्ते भाव में खरीदकर अपने कब्जे में लेने का था. लेकिन इनको अपने सहोदर बड़े भाई शीवल सिंह से अन्तर्कलह चल रहा था. शीवल सिंह इन दिनों पण्डित-जमीन्दार से जुड़कर गेना

सिंह समेत गांव में किसी के बातों पर चलने वाले नहीं थे. अत्यंत निर्भीक-स्वाभिमानी सामंत थे, इस कारण इससे रामसेवक सिंह अपना खतरा महसूस किया करते थे.

(*v*) जेल से बाहर आने के बाद राधे यादव-आनंदी यादव के नेतृत्व में ब्राह्मण परिवार संगठित होकर फिरसे अपने पूर्वजों की जमीन पर पंडित-जमीन्दार के खिलाफ लड़ने लगे. रामसेवक सिंह इस उभरती जुझारू ताकत को अपने पक्ष में करने का कोशिश करने लगे ताकि पंडित का जमीन हड़पा जा सके और गांव पर वर्चस्व व गुंडागर्दी जारी रखा जा सके. किन्तु अत्यंत प्रखर बुद्धि के धनी दोरिक सिंह रामसेवक सिंह के इस चाल को भांप गये और पंडित जमीन्दार से 13 बिघा जमीन राधे-आनंदी यादव को दिलवाकर पंडित जमीन्दार के साथ सुलह करवा दिये और स्वयं इनलोगों का अगुआ बन गये. इसके साथ ही आर्थिक व सामरिक ताकत भी दोरिक सिंह का बढ़ गया था.

उपरोक्त हालत में रामसेवक सिंह वाला आठ का गैंग सी० पी० एम० और दोरिक सिंह को ध्वस्त कर पंडित-जमीन्दार की सम्पत्ति हड़पने तथा अपना कुकर्म जारी रखने के नये षड्यंत्र में नये सिरे से फिर जुट गया.

दोरिक सिंह के हत्या का षड्यंत्र कैसे हुआ : रामसेवक सिंह गुण्डा गिरोह एक बार गांव के कई प्रमुख चौक-चौराहों पर गांव के मुख्य-मुख्य लोगों के नाम कमेण्ट जारी करते हुए गुप्त रूप से एक पर्चा साटा. इस पर्चे में दोरिक सिंह के बारे में कहा गया था : **दोरिक सिंह-अपने मोन के मौजी** (बांकी अन्य लोगों के बारे में भी इसी तरह का कमेण्ट था, लेकिन संदर्भ से नहीं हटूंगा). इसके बाद रामसेवक सिंह दोरिक सिंह को कमजोर करने के लिए राधे यादव का ही हत्या करने का योजना बनाया किन्तु, राधे यादव अपनी चौकसी के कारण बाल-बाल बच निकले. शातिर दिमाग रामसेवक सिंह राधे यादव की हत्या के अपने पहले चाल के विफल होने पर भी अपने व्यवहार से किसी भी प्रकार का संदेह जाहिर नहीं होने दिया. उसने दोहरी षड्यंत्र के तहत एक तरफ आनन्दी सिंह पक्ष (सी० पी० एम० वाले) को दोरिक सिंह के जमीन पर पश्चिम मुशहरी की जनता को बसाने के लिए उकसाया, जिससे दोरिक सिंह को सी० पी० एम० से टकराकर कमजोर बनाया जाय. दूसरे तरफ राधे यादव को राघो सिंह पहलवान के द्वारा 300 रूपया दिखा कर यह कहलवाया कि, 'देखि रधवा, तोरा मरबाबै खातिर दोरिक सिंह हमरा 300 रूपया देलकौ....अगर दोरिक सिंह केय तोंय जल्दी नाय मारै छही, तय तोरा केकरो लगायकेय अवश्य मरवाय देतौ...'. रामसेवक सिंह के इस

चाल को राधे-आनंदी यादव समझ नहीं पाये और उन पर इस बात का इतना गहरा असर पड़ा कि वे अत्यन्त गुस्से में आकर उनकी हत्या करने का ठान लिए.

इसके कुछ माह पहले ही रामसेवक सिंह ने राधे को दोरिक से फुटाने के लिए उल्टा-सीधा पढ़वाकर मतभेद पैदा करने में सफल हो चुके थे, जिस कारण गुस्से में आकर दोरिक सिंह ने राधे-आनंदी यादव पर कई केश भी दर्ज कर दिये थे. इसलिए दोनों के बीच मनमुटाव भी पहले ही हो चुका था. इसके अलावे दोरिक सिंह का यह कहना था कि, 'रधवा-अनंदिया हमर गोर पकैर केय कहे की चाचा केश उठाय लोहो, तय हम माफि केय देवै...'. लेकिन केश उठाने या पुन: दोनों के मिल जाने के पहले ही रामसेवक सिंह का 300 रूपया वाला चाल ठीक निशाने पर जा लगा. इस कारण राधे यादव और आनंदी यादव दोनों भाई ने कोर्ट से लौटते समय माड़र गांव के निकट दोरिक सिंह का पीछा करके लाठी से मार-मारकर हत्या कर दिये. इस प्रकार अमनी का एक और योद्धा रामसेवक सिंह के कुचक्र में फंस कर मौत को गले लगा लिया.

इस हत्या के बाद दोरिक सिंह का एकमात्र बेटा देवकी सिंह अपने चचेरे भाई नारायण सिंह से मिल गए. चुंकि नारायण सिंह का साढू धनुषधारी सिंह थे इसलिए इस आधार पर इस घटना के बाद माहिर धनुषधारी सिंह ने देवकी सिंह का साथ देकर राधे-आनंदी यादव सपरिवार को तो खून केश में फंसाने दिया परन्तु अपने भाई आनंदी सिंह को केश में फंसने से बचा लिया.

इस प्रकार आनंदी सिंह के नेतृत्व वाला सी० पी० एम० का ताकत बच गया और पंडित जमीन्दार भी रामसेवक सिंह के हाथ में नहीं आया और इस प्रकार रामसेवक सिंह के महत्वाकांक्षी सपने पर पानी फिर गया. बाद में अपने बुद्धि चातुर्य से रामसेवक सिंह ने देवकी सिंह को भी अपने प्रभाव में ले लिया. हालांकि लंबे समय तक देवकी सिंह भी रामसेवक सिंह से खिझे रहे लेकिन राधे यादव के खिलाफ अपने पिता के हत्या का प्रतिशोध देवकी सिंह के मन में बनाए रखने में रामसेवक सिंह सफल रहे.

शहीद का० जटाधर मिश्र

हमलावरों का सुनकर धिक्कार,
दौड़ पड़े जटाधर, मचा दिया तब हाहाकार ।
बन्दूकों पर चला भाला का वार,
होने लगी जब वार-पर-वार ।
हो गई रण में दुश्मन पर दया दिखाने की थोड़ी चूक,
इसी क्षण दुश्मन ने शूरमा पर दागा दिया बन्दूक ।

पहले ही बताया जा चुका है कि अमनी के खेलामड़र और ब्राह्मण परिवार का जमीन अवैध तरीके से बेगूसराय लावागांव के जमीन्दार पंडित हरिनंदन मिश्र हड़प लिए थे. इसलिए अपने पूर्वजों की जमीनें वापस लेने की लड़ाई खेलामड़र और ब्राह्मण परिवार मिलकर लड़ रहे थे (कितनी शानदार थी यह एकजुटता !). ब्राह्मण परिवार के कुल जमीन पर केश चल रहा था, जिसमें से कुछ जमीन की डिग्रियाँ भी अदालत से इन्हें मिल चुकी थी. लेकिन जमीन्दार ने अपने स्थानीय लठैतों के बल पर ब्राह्मण परिवार को जमीन दखल नहीं होने दे रहे थे. इसी बात को लेकर गांव से पश्चिम (बहियार) में कई एकड़ जमीन के एक प्लॉट पर लड़ाई हुई, जिसमें जमीन्दार स्वयं तो नहीं आये लेकिन स्थानीय अपराधियों द्वारा किये गए एक हमलों में का० जटाधर मिश्र लड़ते हुए शहीद हो गए.

यह शानदार योद्धा अपनी जिंदगी की पूर्व बेला (महज 19 साल) में अचानक किये गये इस भयानक संगठित हमलों के प्रतिकार में जो अद्वितीय साहस का परिचय दिये थे, वो आगामी पीढ़ियों के लिए एक शानदार मिशाल बना रहेगा.

घटनाक्रम इस प्रकार था :

देश के विभिन्न हिस्सों में चल रहे **नक्सलबाड़ी किसान आन्दोलन** का प्रभाव अमनी की गरीब-भूमिहीन-आतंकित आम जनता तक भी पहुंच चुकी थी. पीड़ित आम जनता इसके नेतृत्व में पुन: उठ खड़ी हुई और भूमि-दखल अभियान चलाना शुरू कर दिया. इस परिस्थिति में ही ब्राह्मण परिवार भी क्रांतिकारी आंदोलन से जुड़ गए. अपने खिसकते जनाधार को बचाने हेतु सी० पी० एम० के नेता आंनदी सिंह (मुखिया, जिला कमिटी सचिव व राज्य कमिटी मेम्बर तथा विधान सभा के

भावी उम्मीदवार) ने भी आनन-फानन में ताल ठोककर जनता से एक आवेदन के साथ दस रूपये जमा करवा कर पंडित हरिनंदन मिश्र के जमीन पर बटाईदारी फायल करवा दिये. इस बटाईदारी फायल कराने के दौरान जिस जमीन का डिग्री ब्राह्मण परिवार को हो चुका था, आनंदी सिंह उसे भी नहीं छोड़े. बल्कि कई एकड़ जमीन जो गांव के पश्चिम के बहियार में ब्राह्मणों की डिग्री हुई थी, उसको भी जान-बूझकर गांव के युवकों के लिए गेंद व अन्य खेल-कूद का मैदान बनवा दिये क्योंकि इस जमीन से सम्बन्धित ब्राह्मण परिवार तब तक नक्सलबाड़ी किसान आंदोलन के प्रभाव में आ चुके थे और इनके मर्जी अनुसार चलना नहीं चाहते थे इसलिए आनंदी सिंह कुछ जमीन दबंग लोगों द्वारा नकली कायमी बटाईदारी के रूप में जोतवा दिये. इसी अन्याय का विरोध गरीब ब्राह्मण परिवार के सभी स्त्री-पुरूष कर रहे थे.

घटना के दिन अचानक ही आनंदी सिंह, माड़र के योगेन्द्र सिंह (जो बाद के दिनों में सी० पी० एम० से विधायक भी बने) वगैरह के सहयोग से पूरे जिला से क्रिमनलों और सी० पी० एम० समर्थकों को बहकाकर सैकड़ों की संख्या में बुला लाये और सुबह होते ही 1981 ई० के .....तारीख को उस जमीन पर सशस्त्र धावा बोल दिये. इस अन्याय के खिलाफ गांव की व्यापक आम जनता के समर्थन से दर्जनों जुझारू बेटों ने लाठी-भाला व परम्परागत हथियारों से जबर्दस्त मुकाबला किये. कहा जाता है कि लगभग 70 नाल हथियारों से आनंदी सिंह हमलावर गिरोह गोली बरसा रहे थे. साथ ही गांव की जनता को डराने व आतंकित करके जनविद्रोह को समाप्त कराने के लिए अभद्र गाली-गल्लौज भी दे रहे थे. स्थानीय जनता अपने आस-पास की जनता के आने के इन्तजार में इस सशस्त्र हमलों के प्रतिकार हेतु जुटी हुई थी. किन्तु हमलावरों के भद्दी-भद्दी गाली, धमकी व अन्य अपमानजनक बातों को सुनकर कुछ जुझारू लोगों को सहन नहीं हो सका और अपने सहयोगी जनता के आने का इंतजार करना छोड़कर तकरीबन तीस लड़ाके दुश्मनों पर काल की भांति टूट पड़े जबकि हमलावर दुश्मनों की संख्या तीस के मुकाबले तीन सौ की थी. लाठी-भाला से लड़ते हुए सात क्रांतिवीर दुश्मनों के बीच घौल में पहुंच गये. पहुंचते ही जटाधर मिश्र और उनके बहादुर पिता श्रीकांत मिश्र दो नाली बन्दूक से गोली चला रहे राघो सिंह और देवेन्द्र सिंह के पास पहुंचे और कहे, 'रे रघुआ तुमको तो परकीसाल (पिछले वर्ष) इसी प्लॉट पर जान मारने से इसलिए छोड़ दिया था कि तूने हाथ जोड़ कर माफी मांगा था और कहा था कि इस बार माफ कर दीजिए, मत मारिये, अब इस प्लॉट पर कभी

नहीं आऐंगे...लेकिन फिर पहुंच गया. बोल ! अब तुम्हारे साथ कैसा बर्ताव करें... '. इतना बोल ही पाये थे कि घाती राघो सिंह ने बन्दूक का ट्रेगर दावा दिया. बुलेट सीधे समर के परखे अग्रिम पंक्ति के योद्धा श्रीकांत मिश्र के पेट में जा लगी. इसी तरह राघो सिंह का बेटा देवेन्द्र सिंह ने भी का० जटाधर पर गोली दाग दिया. जिससे बुलेट उनके पेट को चीरते हुए पार कर गया. इतना घायल होते ही अत्यंत कुपित का० श्रीकान्त मिश्र और का० जटाघर मिश्र ने राघो और देवेन्द्र के शरीर पर कूद कर दोनों के हाथों से बन्दुक छीनकर फेंक दिये और उसी घायल अवस्था में ही अपने पेट को गमछे से बांध कर लाठियों के प्रहार से सामने आये एक-एक दुश्मनों को खदेड़-खदेड़कर मारने लगे. उधर, रामगुलाम राम उर्फ बादल अपने फरसे की मार से दुश्मनों पर बज्र प्रहार कर रहे थे. तो दूसरी तरफ भोल्टी यादव, गण्डोरी यादव और सूबेदार यादव लाठियों से घमासान लड़ाई लड़ रहे थे. महेश्वर साह लाठियों से लड़ते हुए पटक कर बाढ़ो मंडल के हाथ से थ्रीनट छीन लिए और घमासान लड़ाई लड़ने लगे. घंटों लड़ाई चलती रही. तब बगल से बांकी योद्धाओं में से एक माखो पंडित ने बम फेका और किशुनदेव यादव बन्दुक से गोली चलाये. इसके बाद हमलावर दुश्मनों का पांव उखड़ गया और वे सिर पर पांव रखकर भाग खड़े हुए.

इस लड़ाई में जनता के पक्ष से पांच बहादुर योद्धा बुरी तरह घायल हो गए थे: का० श्रीकांत मिश्र, का० जटाघर मिश्र, का० भेल्टी यादव, का० सूबेदार यादव, का० गण्डोरी यादव आदि घायल थे, जबकि हमलावरों के तरफ से अठारह लोगों को घायल कर दिया गया था.

अफसोस कि दोनों पक्षों से घायलों में सबके सब अमनी की ही गरीब जनता थी. ऐसा जघन्य काम करने वाले को मानवता कभी माफ नहीं कर सकेगी. चिकित्सा के दौरान ही जनता का प्यारा योद्धा **का० जटाघर मिश्र** अस्पताल में रात्री समय हम सबों को छोड़कर महायात्रा पर निकल गये. इनकी शहादत इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित की जायेगी. लड़ाई अब भी जारी है...

समर के योद्धा पिता-पुत्र दोनों,
थे बड़े साहसी औ' नेक इंसान !
न्याय के खातिर लड़ते-लड़ते
त्याग दिये वे अपना प्राण !!

जनता द्वारा कुख्यात अपराधी राघो सिंह और उनके पुत्र देवेन्द्र के आतंक का अंत

राघो सिंह पे० चंचल सिंह और देवेन्द्र सिंह पे० राघो सिंह दोनों पिता-पुत्र अमनी के ही संतान थे. राघो सिंह बचपन से ही कुश्ती-कसरत करते थे और अपने मध्यमवर्गीय कृषक पिता के चौथे छोटे संतान थे. बचपन से ही काफी साहसी थे. अपने शरीर व कद-काठी से बलवान होने के कारण गांव के गिने-चुने पहलवानों में से एक थे. अनपढ़ थे. इनके आतंक व प्रभुता से गांव व इलाकों के आम लोग थर-थर कांपते थे. शुरू से ही मनबढ़ू थे और भैंसबारी के अलावे चोरी-डकैती-घरढुक्की इनका मुख्य पेशा था. इनके कई अच्छे गुणों से समाज को फायदा भी था जिससे गांव के सफेदपोश लोग खूब फायदा उठाते थे. लेकिन अपने दुर्गुणों के कारण वे समाज के लिए आगे चलकर अभिशाप ही साबित हुए. उस समय गांव के प्रतिष्ठित समझे जाने वाले तथाकथित बड़े (सफेदपोश) लोग अगर चाहते तो इन्हें समझा-बुझाकर सुधार सकते थे और तब ये योद्धा सम्पूर्ण समाज के लिए वरदान साबित हो सकते थे. लेकिन अपने को बड़ा समझने वाले लगभग सभी लोगों ने इनके अच्छे गुणों से लाभ तो उठाया लेकिन गलत रास्ते पर चलने से कभी रोकना तो दूर उल्टे उन्हें प्रोत्साहित ही करते. इसलिए इनसे क्या गलत हो रहा है, समझ न सके और गांव के बड़े समझे जाने वाले तथाकथित लोग इन्हें अपने निजी स्वार्थ में इस्तेमाल करने के लिए जब भी और जो भी इन्हें उल्टा-सीधा पढ़ाते थे, वे बिना उचित-अनुचित का ख्याल किये ही उनके बहकावे में फंसकर कुछ-से-कुछ कर गुजरते थे. यही इनकी भूलें थी. फलतः गलती करते-करते बड़े अपराधी बन गए. इनके अपराध से समूचा समाज ही त्रस्त हो कराह उठा. तब समाज ने सैकड़ों की संख्या में संगठित होकर इन दोनों पिता-पुत्र को रगेदकर मार डाला.

वो कौन से अच्छे-अच्छे गुण थे जिस कारण राघो सिंह समाज के लिए कुछ उपयोगी भी माने जा सकते हैं, उसे इस प्रकार गिना जा सकता है :

(*i*) अमनी गांव के कई किसानों का खेती-बाड़ी अमनी से उत्तर-पूर्व दिशा के लगभग तीन कोस (10 कि०मी०) की दूरी पर खगड़िया के सीमावर्त्ती जिला सहरसा में होता था. उसी क्षेत्र में रघुनाथपुर गांव (बेगूसराय) वाले किसानों

का भी खेती-बाड़ी होता था. रघुनाथपुर के कुछ भैंसबारों व अवारागर्द बदमाशों द्वारा अमनी के किसानों का फसल-क्षति हमेशा ही बड़े पैमाने पर प्रत्येक साल कर दिया जाता था. ये बदमाश आस-पास खेती करने वाले सभी गरीब व कमजोर लोगों का भी फसल क्षति करते और तरह-तरह का अत्याचार किया करते थे. इस अन्याय के खिलाफ अमनी व इलाके के अन्य बहुत से लोग जुटकर सशस्त्र लड़ाई लड़े. इसके बाद ही रघुनाथपुर के अपराधियों से फसल क्षति रूक सका. इस लड़ाई में राघो सिंह ने भी सक्रिय भाग लिया था जिससे आम जनता की सहानुभूति इनके प्रति बढ़ी थी.

(*ii*) इसी तरह सैदपुर के कुछ लोगों द्वारा हियादपुर मौजा में सैदपुर के कुछ भैंसबारों द्वारा अमनी के किसानों का फसल क्षति किया जाता था. उन भैंसबारों के भैंस को पकड़ कर अमनी लाने और भैंसबारों को दण्डित करके फसल क्षति रोकवाने के कार्य में भी राघो सिंह की भूमिका थी (हेयातपुर मौजा में सैदपुर के भैंसबारों से भिड़न्त हुई थी).

(*iii*) पण्डित हरिनंदन मिश्र के जमीन पर से बटेदारों को खदेड़ने के खिलाफ हुई सशस्त्र भिड़न्त में बटेदारों के तरफ से राघो सिंह और देवेन्द्र सिंह बड़े ही साहस से लड़े और हमलावरों को मार भगाये थे.

(*iv*) सैदपुर के जलकड़िया से डोयठा जलकर को मुक्त कराने की लड़ाई में राघो सिंह और देवेन्द्र सिंह नैतिक समर्थन किये थे, जिससे इस जलकर पर अमनी वालों का कब्जा हो सका था.

(*v*) डॉ० प्रभु की हत्या करने के बाद उनके एक मात्र नन्हें पुत्र को भी मार डालने की सलाह रामसेवक सिंह ने राघो सिंह को दिया था परन्तु इसके लिए राघो सिंह तैयार नहीं हुए. राघो सिंह का कहना था कि ऐसा अन्याय करने से बूढ़ा दादा-दादी भी मर जायेगा, यह काम ठीक नहीं है. इससे राघो सिंह के कुछ विवेक-शक्ति का भी पता चलता है.

इस प्रकार हम देखते हैं कि राघो सिंह अत्यन्त ही जुझारू प्रवृति के स्वाभिमानी पुरूष थे. वे आम लोगों के लिए भी लड़े थे. कुछ विचारवान भी थे. अगर इन्हें सही दिशा मिल पाता तो इन्होंने समाज व आम जनता पर जितना अत्याचार और जुल्म ढ़ाये और समाज के लिए अभिशाप बन गए थे, ऐसा नहीं भी हो सकता था. परन्तु ... !

आखिर वह कौन-सी दुर्गुणें थी और कैसे वह दुर्गुण बढ़ता चला गया, जिस कारण राघो सिंह महापापी और घनघोर अपराधी बन बैठे, जिसमें

उन्हें अपने पुत्र देवेन्द्र सिंह का भी कुछ-कुछ मामलों में सक्रिय सहयोग प्राप्त होता था और किस प्रकार वे इस समाज के लिए अभिशाप बन बैठे; आइये देखते हैं :

(*i*) गांव के बाहर जबतक राघो सिंह चोरी-डकैती, घर-ढुक्की करते रहे, तब तक गांव के लोगों ने कोई हस्तक्षेप नहीं किया. जब से गांव में ही चोरी-डकैती, घर-ढुक्की जैसे कार्यों को वे अंजाम देने लगे तब इनके खिलाफ यहां के लोग उठ खड़े हो गए. चुंकि **'आठ के गैंग'** का एक सदस्य राघो सिंह भी थे, इसलिए डॉ० प्रभु की हत्या के बाद से आम जनता इनसे काफी डरी-सहमी रहने लगी थी. डर के मारे लोग अपने-आपको और अपने परिवार के सदस्यों को इनके कोप से बचाने के लिए इन्ही का आदमी होने का दिखावा भी कर दिया करते थे.

(*ii*) कई चोर इनके साथ रहते थे. इस चोरों का काम था रात में लोगों का फसल काटना. चोरी का एक अंश सब चोर इन्हें पहुंचाते थे. बदले में चोरों में से अगर कोई पकड़ा चला जाता था तो ये उसका बचाव किया करते थे.

(*iii*) राघो सिंह जिसके भी बेटी या पुत्रवधु के साथ बलात्कार करते थे, उनमें से अगर कोई भी विरोध करने का साहस करता था तो रात में ये अपने गिरोह के सदस्यों द्वारा उनकी फसलें कटवा लेते या उनके पालतू जानवर गाय, बैल, बकरी-खस्सी वगैरह गायब करवा देते. हकपारा रामदेव सिंह का भी बैल यही चुराये थे. (अंदर ही अंदर लोगों में कानों-कान बात फैल ही जाती थी, परन्तु भय से कोई कुछ कर नहीं सकते थे).

(*iv*) गांव के पश्चिम में सड़क के दक्षिणी किनारे राघो सिंह का बासा (जानवर व घास-भूसा रखने वाला) था. थोड़ी दूर सटे सड़क के निकट बांध पर एक पेड़ के छांव में अपने गिरोहों के साथ राघो सिंह बैठे रहते. बदला घाट रेलवे स्टेशन से या चौथम, मलपा, रोहियार आदि पूर्व दिशा से आने वाले राही-मुसाफिर जब अमनी के उसी सड़क के रास्ते पश्चिम दिशा की तरफ रसौंक, माड़र, सबलपुर या अन्य गांवों की ओर जाते तो इस गिरोह द्वारा पीछा करके उसे लूट लिया जाता था और राघो सिंह बकायदा उसमें हिस्सा बांटते थे.

(*v*) जब कभी कोई महिला अपने बूढ़े-पुरान या कमजोर अभिभावकों के साथ पूर्व दिशा से पश्चिम की ओर जाते तो राघो सिंह गिरोह उनलोगों को दोपहर के धूप से बचने के लिए उसी पेड़ के नीचे थोड़ा विश्राम करके जाने कहते. जो राही-मुसाफिर इनकी लुभावनी बातों में फंसकर वहां धूप में पेड़ के

छांव-तले विश्राम करने बैठ जाते तो राघो सिंह सुन्दर व जवान उन राही महिला से बड़े स्नेह से कहते, 'जा बेटी ! तू उस बासा पर. चापाकल पर हाथ-पैर धोकर बरामदा के चौकी पर जाके आराम सेय बैठोअ...'. अनजान भोली-भाली देहाती वह महिला मुस्कुराती, शर्माती हुई बासा पर अकेली विश्राम करने जाती और उनके अभिभावक वहीं बैठते. इसके बाद सभी छुटभैये चोर बूढ़े के पोटली में हाथ डालकर कहते, 'ऐ में की छिको बूढ़ा ? देखियोअ...एगो पूरी खैइयो...' और निकाल-निकाल कर सभी एक-एक कर सारा संदेशा खा जाते. उधर चुपके से राघो सिंह उठकर बासा पर चले जाते और उस अकेली महिला के साथ बलात्कार करते. अपनी इज्जत और संदेशा लुटाकर वह राही अपने गन्तव्य की ओर अपना सर पीटते चले जाते. (यह बात धीरे-धीरे गांवों में तथा इलाकों के अन्य गांवों में अवश्य फैल जाता था).

(*vi*) राघो सिंह का वहसियानापन इतना ज्यादा बढ़ गया था कि बगल के एक गरीब टोला (कमरटोली) में राघो सिंह जब यह अन्दाज लगा लेते कि अब घर से सभी मर्द व बड़ी-बूढ़ी महिलायें खेती के कामों से या अन्य कामों से अपने-अपने घरों से निकलकर बोन-बहियार हेतु बाहर चले गये होंगे उस वक्त जिस घर के नई-नवेली दुल्हन पर इनका नजर टिका होता, उसके आंगन चले जाते और बलात्कार करके चले आते. अगर संयोग से कोई पुरूष या युवक घर में दिन का भोजन करते मिल भी जाते थे तो राघो सिंह मारे गुस्से से चिल्लाते हुए उसे डांटते कि, 'बरगाही केय भाय घर-घुसका, जखनी देखोअ तय घोरेय में घुसियायल रहतोअ, जो दुआयरे पर खो गन' और उधर घर की महिला से बोलते, 'हे कनियान, तनि बीड़ी में आगी धराय देय'. राघो सिंह के कोप से भयभीत वह पुरूष नकली हंसी हीं-हीं-हीं करते हुए भोजन की थाली हाथ में लेकर अपने प्रागंण से बाहर चले जाते और बीड़ी सुलगाने अपने चुल्हे के पास घर के अंदर जाती महिला के साथ राघो सिंह बलात्कार करके बीड़ी पीते हुए चले जाते. यह धन्धा इनके दिनचर्चा में शामिल था. मन-ही-मन सभी समझ जाते की ये यहां किस काम से आये हैं, लेकिन डर के मारे विरोध में आवाज नहीं निकलती थी.

(*vii*) अपनी पहली पत्नी का गला मचौड़ कर हत्या करके राघो सिंह फेंक चुके थे, क्योंकि वे इनके गलत आचरण का लगातार विरोध करती थी. इससे उसके घर की या टोले की अन्य महिलायें भी सहम गई थी और डर से कुछ बोल नहीं पाती थी.

(*vii*) गांव के ही दोरिक सिंह के घर में अपने सहयोगियों के साथ

मिलकर राघो सिंह ने भीषण डकैती किया और डकैती में हासिल धन को अपने साथी डकैत को भी नहीं देकर खुद कई बिघा जमीन खरीद लिए.

(*ix*) शोषण और अत्याचार के खिलाफ जब यहां की जनता क्रांतिकारी आंदोलन चलाने लगी तो सी० पी० एम० से जुड़कर राघो सिंह इस आंदोलन पर सशस्त्र हमला करने में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने लगे और आम जनता पर कहर ढाने लगे.

(*x*) 25 नवम्बर 1978 ई० में तो मजदूरी बढ़ाने के लिए आयोजित होने वाली एक जनसभा पर पुलिस-सामंती गठजोड़ से हमला करके सैकड़ों घरों में लूट-पाट, मार-पीट, हत्या आदि जैसे जघन्य काम महीनों तक जारी रखने में राघो सिंह सबसे आगे थे, जिसमें 16 क्रान्तिकारियों को मार-मार कर रद्दी हालत में पुलिस को सुपुर्द किये थे.

(*xi*) गांव के भूमिहीनों (खासकर पश्चिम मुशहरी की मुशहर जनता) द्वारा एक अनुपस्थित जमींदार की जमीन और नदी की ऊपरी जमीन पर दखल के दौरान बार-बार जनता पर हमला करने में सामंती गुंडों का अगुआई यही राघो सिंह करते रहे.

(*xii*) रामस्वरूप मिस्त्री के मुंह पर तेजाब उड़ेलने की घटना में भी राघो सिंह ने रामसेवक सिंह का सक्रिय सहयोग दिए थे.

वारदात इस तरह था : जब अपने दोस्त रामस्वरूप मिस्त्री ने रामसेवक सिंह को अपने चार बेटी-भतीजी के साथ खुलेआम 'कृष्णलीला' करने पर रोक लगाया, तब इस बाधा को रास्ता से हटाने के लिए रामसेवक सिंह ने राघो सिंह एवं अपने अन्य दो सहयोगियों के साथ मिस्त्री सहित उसके बेटे-भतीजों के आंख में तेजाब डालकर सदा के लिए अन्धा बना दिया. इलाज के बाद बांकी तो बच गये, लेकिन रामस्वरूप मिस्त्री का इन लोगों ने इलाज ही नहीं होने दिया, जिस कारण इनका जला चेहरा (मुखड़ा) जीवित ही हु-ब-हू नरकंकाल जैसा बन गया, जिन्हें देखकर कोई भी अनजान लोग डर जा सकते थे, इसलिए अपने मूंह को मृत्युपर्यन्त ढके रहे.

(*xiii*) आस-पड़ोस के लगभग पचीस गांव के लोगों के खिलाफ आनंदी सिंह और योगेन्द्र सिंह के कहने पर गरीब जनता के खिलाफ हमेशा मारपीट-लूटपाट और बलात्कार में भाग लेने लगे.

(*xiv*) अमनी गांव की गरीब जनता के द्वारा चलाये जा रहे हरेक न्यायपूर्ण हक की लड़ाई के विरोध में भाग लेने लगे और जनान्दोलन पर सशस्त्र

हमला इनका पेशा बन गया. (उन अनगिनत हमलों को कलमबद्ध करना भी कठिन है.)

(*xv*) पड़ोसी गांव माड़र, रसौंक, सबलपुर आदि में जब-जब हिन्दु-मुसलमान के बीच साम्प्रदायिक दंगा होता, तब-तब ये अपने चोर-गिरोहों के साथ संगठित होकर मुसलमान जनता के खिलाफ लड़ने जाते और गरीब मुसलमान जनता के साथ मारपीट, लूटपाट, औरतों के साथ बलात्कार करते.

(*xvi*) राघो सिंह पिता-पुत्र मिलकर अमनी के ही गरीब ब्राह्मण जटाधर मिश्र की जघन्य हत्या कर दिये और जटाधर के पिता व अमनी के क्रांतिकारी जनता के पुराने मित्र श्रीकांत मिश्र को बुरी तरह जख्मी कर दिये थे, जबकि जटाधर अपने बाप-दादा की जमीन जमींदार से दखल करने समाज के सहयोग से गए हुए थे.

(*xvii*) बागमती नदी के दूसरी तरफ (अमनी गांव से एक-सवा कोस उत्तर दिशा में) राघो सिंह अपने खेत पर खड़े थे. बगल के रास्ते से पड़ोसी गांव रसौंक-माड़र-सबलपुर की कई महिलायें जा रही थी. उनमें से एक के साथ राघो सिंह ने पकड़कर बलात्कार करने का चेष्टा किया. अन्य सभी महिलाओं ने दिन-दहाड़े इस अन्याय का जबर्दस्त विरोध किया. इससे क्रोधित होकर राघो सिंह पहलवान ने उन महिलाओं को अपने लाठियों से मार-मार कर जख्मी कर दिया, जिसे बाद में खटिया पर टांग कर ले जाया गया. डर के मारे कोई केश भी नहीं कर सके. गवाह कौन बनता ? पड़ोसी गांव के सभी अमीरों का संरक्षण और पुलिस के दलालों का भी संरक्षण राघो सिंह को प्राप्त था.

(*xviii*) राघो सिंह इन दिनों इतना उन्मत्त और मदान्ध हो चुके थे कि नंगे बदन सिर्फ कमर में लुंगी लपेटे, कंधा पर बंदूक, कमर में बन्दूक की गोली का लच्छा और कंधे से लगाकर भी गोली का लच्छा पहने, एक हाथ में धारदार हथियार और दूसरे हाथ में सेप (लम्बी चौरी नोकदार भाला) लिए काल रूप में विचरण करते हुए अमनी के पश्चिम मुशहरी की क्रांतिकारी जनता को डराने पहुंच जाते. जिस आंगन में अधिक संख्या में महिलाएं बैठी रहती, उस आंगन में बेपरवाह निर्लज्जतापूर्वक घुस जाते और महिलाओं को कहते, 'देखी.....हमरा ऐशन छौअ तोहर मुसहर, खोल बप... (डर से कोई कुछ न बोल पाती).

महिलाओं को मारने की घटना के बाद राघो सिंह उसी जमीन पर अपना हल-बैल लेकर खेत जोतने जा रहे एक किसान महेश्वर साह को इतना मारे कि एक महिना के इलाज के बाद ही वे पुनः चलने-फिरने के काबिल हो सके.

(*xix*) राघो सिंह के कुख्यात कारनामे से आम जनता किस कदर सहमी हुई तथा आक्रोशित थी, इसका अंदाजा इसी बात से लगता है कि महेश्वर साह को मार कर जख्मी कर देने की इस घटना के एक माह के अन्दर ही राघो सिंह का अपना खास सहोदर भाई भागवत सिंह जनता के संगठन के नेता से एकांत में कहने पहुंचे कि, 'हो नुनु तोंए अर ई पापी रघुआ केय किये नय मारै छोहो ? अगर तोयं अर नय मारभो तय हमरा एगो बम देय, हम ही मायर देवैं.' इस बात से हमलोग भौंचक्का रह गये थे.

दरअसल बात यह हुई थी कि रात्रि करीब दस बजे अपने भतीजी के विवाह में राघो सिंह मरबा पर बैठकर उसका कन्यादान किये थे. बारात गांव में ही थी. उसी रात चार बजे भोर में अपने उसी भतीजी के साथ बलात्कार किये. लोक-लाज के कारण उस दिन बात को किसी तरह दबा दिया गया. इस घटना की पुष्टि उनका नौकर रूदल सदा भी संगठन के समक्ष किये थे क्योंकि बलात्कार भुसकार में की जा रही थी कि संयोग से वे भूसा लेने वहां अचानक पहुंच गये थे. इन्हें मारने से इसलिए राघो सिंह छोड़ दिये थे कि उन्होंने हाथ जोड़कर वचन दिया था कि 'बाबु हम्में कहैं नय बोलवै'.

जघन्य से जघन्यतम ऐसे ही असंख्य अपराधों से राघो सिंह कण्ठ तक डूब चुके थे. इन दिनों सी०पी०एम० के स्थानीय नेताओं का पूरा समर्थन एवं संरक्षण इन्हें प्राप्त था. हलांकि अब तो डर से भी लोग इस अपराधी के कुकृत्यों के खिलाफ बोलना बन्द कर दिये थे. बिना किसी रूकावट के अपने मन में खुश राघो सिंह उन्मत सांढ़ की तरह मानव रूपी जंगल में विचर रहे थे. तब जाकर बेवस समाज ने इस अपराधी राघो सिंह सहित इनके अपराधों के सहभागी इनके पुत्र को मौत की सजा देने का फैसला लिया.

आश्चर्यजनक तो यह है कि इस घटना के बाद एक तरफ जहां जिले की आम-जनता खुश थी और अपने-आप को सुरक्षित महसूस करने लगी, वहीं दूसरी तरफ सी० पी० एम० नेता और डॉ० प्रभु के हत्या में शामिल अपराधियों के यहाँ कब्रिस्तान-सा सन्नाटा पसर गया. साथ ही कहना शुरू किया कि, 'चन्द्रोशन ने अपने बाप का बदला ले लिया...' इतना ही नहीं उल्टे इस सामाजिक अपराधी को अपना *'कामरेड'* बताया और उसके लाश को लेकर कुछ दर्जन भर बाहरी लोगों को जुटाकर खगड़िया बाजार में घुमाकर उसको 'शहीद' घोषित कर निर्दोष लोगों को केश में फंसा कर तंगो-तबाह करना शुरू कर दिया.

ऐसे शातिर अपराधियों को खुलेआम कामरेड कहने से सी० पी० एम०

का बचा हुआ नकाब भी उतर गया और उसके प्रति आम जनता का गुस्सा फूट पड़ा. स्वयं इसके नेता आनंदी सिंह जनता में अत्यंत ही बदनाम हो गये. फिर भी प्रशासन के सहयोग और पुलिस के संरक्षण के बल पर ये बदनाम नेता लोग आम जनता पर हमला करने, षड्यंत्र करने, जनता के अगुओं को फंसाने, फूट डालने, लोभ देने, पुलिस मुखबिरी करने आदि से कतई बाज नहीं आये.

जनता ने आनन्दी सिंह को क्यों मारा ?

सी० पी० एम० नेता आनंदी सिंह एवं उनके स्थानीय गिरोह के अन्य सरगना अपने 'कामरेड' को दिये जाने वाली मौत की सजा से आत्मचिन्तन करने और खुद को सुधारने के बजाय बौखलाकर खुलेआम कहने लगे थे, 'ई घोंघा-सेमार खाने वाला गरीब-गुरबा, ई-कंगाल लोग सब भला हमसे लड़ने में क्या टिकेगा ? पैसा से केशों में फंसा-फंसाकर इनलोगों को पीस डालूंगा...'. ऐसा वे तब बोलने लगे जब इनके कुकर्म व जनविरोधी नीतियों के चलते पूरा जनाधार ही इनसे खिसक गया था. क्रांतिकारी जन-आन्दोलनों को गांव-गांव में बदनाम करने और उसे विफल करने की कुचेष्टा करते रहते. जनता को केशों में फंसवाना और आन्दोलन पर गुंडा शक्ति व पुलिस बल को जुटाकर हमला करवाना ही इनका पेशा बन गया.

हालांकि शुरू में सी० पी० एम० या इसके नेता इतना गिरे हुये नहीं थे. वे लोग जनता के बीच जाते थे, उन्हें संगठित करते थे और जनान्दोलन को उभारने में मदद भी देते थे. लेकिन यह जमाना का० बी० के० आजाद के समय का था. का० बी० के० आजाद को संघर्ष में जनता का पक्ष लेने के कारण ये सब भ्रष्ट नेता एक होकर उन्हें पार्टी से अलग करने के बाद शुरू में तो अर्थवादी संघर्ष जैसे भूमि-दखल आन्दोलन वगैरह का ये लोग नेतृत्व किये. लेकिन बाद में जब से सी० पी० एम० ने भूमि-आन्दोलन को सशस्त्र-संघर्ष के रास्ते से हटाकर कोर्ट-कचहरी के द्वारा हासिल करने और सशस्त्र जमीन्दारों के गुंडों के हमलों से आत्म-रक्षा के लिए कोर्ट, केश और पुलिस पर ही निर्भर रहने के रास्ते पर ले आये, तब ये सभी नेता जमीन्दारों से भी दोस्ती गांठने लगे. उनसे चुनाव में जिताने के लिए वोट दिलवाने के लिए गिड़गिड़ाने लगे. उधर जमीन्दार भी अपना टेक्टिस बदल कर इस नेताओं के प्रति अपने गुस्सा को कम करके इसे मिलाकर अपना धन-दौलत बचाने की नीति अपना लिए. जमीन्दारों ने इसी सब भ्रष्ट नेता को कुछ जमीन मुफ्त में देने का लालच देकर बांकी जमीन बेचवा देने का नीति लिया. ऐसी हालत में ही ये सब प्रतिक्रियावादी बन गये.

उदाहरणस्वरूप : अमनी की जनता ने बाहरी जमीन्दार को अपने संगठित सशस्त्र शक्ति के बल पर जब खदेड़कर जमीन दखल कर लिया, तब इसके नेता आंनदी सिंह और उसके कई गोतिया-दियाद मिलकर मुफ्त में या कुछ रूपये देकर अथवा

तत्काल उधार में ही जमींन्दार से जमीन खरीद लिये और जनता से कहने लगे, 'आब ई जमीन हम्मर होय गैले, तोय लोग छोर दोहो...'. जमीन नहीं छोड़ने पर जनता और उसके अगुओं को डराने, धमकाने, मारपीट करने के अलावे फर्जी केशों में फंसाना शुरू कर दिये. अपराधियों को ''कामरेड'' की संज्ञा से विभूषित करने लगे और संरक्षण देकर जनता पर निरंतर पुलिस हमला कराना और जनता के आन्दोलन को विफल करने के लिए पुलिस-मुखबिरी का काम करने लगे.

इन्हीं उपरोक्त हालत में सी० पी० एम० लीडरों के खिलाफ आम जनता उबल पड़ी. फलस्वरूप एक दिन हजारों लोगों के बीच इन अपराधियों के सबसे बड़े संरक्षक बन चुके आनंदी सिंह को आम जनता ने मौत के घाट उतार डाला. ■

उत्तम सिंह का मारा जाना

उत्तम सिंह के पिता नारायण सिंह एक मध्यम वर्गीय किसान थे लेकिन एक अच्छे इंसान थे. उत्तम सिंह साहसी युवक थे किन्तु, इनका संगत अपने पड़ोसी रामोतार सिंह (उप मुखिया) के एक रिश्तेदार लड़का जो इन्हीं के पास रहता था, से हो गया था. वह लड़का एक डकैत गिरोह से जुड़ा था इसलिए उत्तम सिंह भी उस गिरोह से जुड़कर इधर-उधर डकैती करने चला जाता था. उत्तम सिंह के जुझारूपन को देखकर सी० पी० एम० ने जनता पर हमला कराने के लिए इन्हें भी अपने साथ जोड़ लिया.

एक दिन संसारपुर पंचायत के सरपंच रामविलास प्रसाद की हत्या करने के लिए सी० पी० एम० गिरोह ने एग्रीकल्चर के निकट घात लगा कर हमला बोल दिया. इस समय रामविलास प्रसाद सरपंच परमानन्दपुर गांव होते हुए खगड़िया बाजार से एक रिक्शा पर सवार होकर घर लौट रहे थे.

उत्तम सिंह ने रामविलास का रिक्शा रोका बांकि लोग छुपे रहे. तभी छुपे हमलावरों में से एक विजयकान्त कुमार उर्फ कुमार सिंह ने रामविलास प्रसाद पर गोली चलाया. परन्तु वह गोली सीधे उत्तम सिंह को आ लगा और वे वहीं मर गए. अब यह गोली उत्तम सिंह को धोखा से लगे या कुमार सिंह द्वारा जानबूझकर मारा गया लेकिन गोली उत्तम को लगी और वे तत्काल परलोक सिधार गये. लेकिन इस केश में भी अमनी के गरीब निर्दोष समाजिक लोगों को फंसा दिया.

बाद में सभी न्यायालय द्वारा निर्दोष साबित हुए.

अनिरूद्ध पंडित की दुःखद मौत

धनी मध्यम किसान थे अनिरूद्ध पंडित. अपनी दूसरी माताजी के दो सन्तान (अनिरूद्ध पंडित और छोटेलाल उर्फ अनिल पंडित) हुए थे. अल्प-शिक्षित अनिरूद्ध पंडित स्वभाव से ही घमंडी प्रवृति के थे. करेले पर नीम चढ़े की तर्ज पर अपने चचेरा दादा श्री कमलू पंडित के हिस्से का भी संपत्ति (लगभग 25 बीघा जमीन) मिल जाने से इनके घमंड व अहंकार में चार चांद लग गया क्योंकि इस जाति में आपसी बंटवारे के वजह से इन दिनों इतनी सम्पत्ति किसी के पास नहीं था. चूंकि इन दिनों समाज में ऐसा प्रचलन था कि जो जितना अधिक जमीन का मालिक होंगे, वह उतना ही ज्यादा इज्जतदार समझे जायेंगे. इससे ये दोनों भाई इतने ज्यादा घमंडी व अहंकारी बन बैठे कि अपने सामने किसी अन्य जात-बिरादरीवाले को कुछ समझते ही नहीं थे. इन दोनों भाईयों के सामंती बहसियाना दुर्व्यव्यहारों से आसपास के कमजोर व गरीब लोग त्रस्त थे. गांव में अमीरों और गरीबों के बीच दलबन्दी थी. अनिरूद्ध पंडित दोनों भाई गांव के कुख्यात सशस्त्र अमीरों के कतार सी० पी० एम० में अपने को शामिल रखने के लिए उनलोगों की 'खैरख्वाही' कुछ ज्यादा ही करते थे. इस वजह से ये दोनों भाई आम-जनता के खिलाफ अमीरों व उनके सशस्त्र गुंडों के तरफ से होनेवाले हर प्रत्यक्ष हमलों तथा पुलिस-मुखबिरी में भी आगे-आगे रहा करते थे. चुंकि जनता पर हमला करने व करवाने वाले मुख्य अपराधी अन्य लोग थे, इसलिए इतने आक्रोश के बावजूद जनता इन पर हमला नहीं करती थी. ऐसी हालत में ये दोनों भाई व इनके परिवार की औरतें व बच्चे और भी ज्यादा बहसियानापन पर उतर आये. तब मजबूरन पीड़ित जनता ने इन्हें इनके सबसे सुरक्षित ठिकानों पर जाकर पीटा. परन्तु केश को मजबूत बनाने के ख्याल से षड्यंत्रकारी अमीरों ने (जिनकी ये आजीवन खैरख्वाही करते रहे थे) इनको इलाज के दौरान पटना के अस्पताल में इलाज के नाम पर मरवा डाला.

अनिरूद्ध पंडित व इनका परिवार कितना भी गलती पर गलती क्यों न करते थे, लेकिन हमेशा ही समाज के लोग इन्हें छोड़ दिया करते थे. इन्हें समझाने का प्रयास किया जाता था. यहां तक कि जब अनिरूद्ध पंडित का बड़ा बेटा उमेश पंडित जो बाद के दिनों में खुद भी अपराधियों के श्रेणी में शामिल हो गये, अपने

बाप के साथ किसी सवाल पर विद्रोह करके कई महीनों से गांव से भागा हुआ था, तब उमेश के नाना के अनुरोध पर मैंने (लेखक) अनिरूद्ध पंडित से उमेश को मिला दिया था. अपने बिछुड़े पुत्र के साथ इस सुलह कराने की वजह से अनिरूद्ध पंडित में अचानक ऐसा हृदय परिवर्त्तन हुआ कि वे समाज के साथ एक हो गए और कुछ दिनों तक आपसी सौहार्द सबों के साथ कायम भी हो गया था.

दुर्भाग्यवश, आनंदी सिंह की मृत्यु के बाद एकाएक माखो पंडित अपने समाज व संगठन के साथ विश्वासघात करके हमलावर अमीरों के पक्ष से जा मिले. इस खुशी में हमलावरों के तरफ से एक सभा बुलाया गया. उस सभा मंच से भाषण देते हुए सी० पी० एम० के एक घृणित नेता माड़र के योगेन्द्र सिंह ने कहा था कि, **'अमनी पंचायत में हमारा झंडा तो गिर चुका था, लेकिन माखो पंडित ने आकर फिर हमारे झंडे को बुलंद कर दिया...'**. अब सामंती सशस्त्र गिरोहों ने माखो के कंधा पर बन्दूक रखकर जनान्दोलन पर निरंतर हमला जारी कर दिये. माखो पंडित ने समाज के पक्ष से फुटकर सीताराम पंडित को भी अपने तरफ कर लिये थे. बदलाव की यह घटना भी रोचक ही है.

एक दिन सीताराम पंडित का भतीजा दिलचन पंडित को निमयाही बासा पर सुकदेन पंडित के साथ किसी बात पर झड़प हो गया. इस घटना को सुनते ही माखो पंडित ने सीताराम पंडित को गरीब संगठन से सहायता लेकर सुकदेन पंडित को मारपीट करने की मांग किये. लेकिन संगठन इस मामला को सामाजिक स्तर से ही हल करने का सलाह दिया क्योंकि सुकदेन भी गरीब ही थे. संगठन के इस सलाह को सीताराम मान गये. तब माखो ने उन्हें दुबारा यह कहकर भड़काया कि, 'सुकदेन चन्द्रोशन का गोतिया है इसलिए उसे मारने का फैसला नहीं होने देता है.' अन्ततः सीताराम पंडित माखो के बहकावे में आकर हमलावर दुश्मन पक्ष से जा मिले. इसके बाद माखो के नेतृत्व में सीताराम, विशुनदेव, अनिरूद्ध, छोटेलाल वगैरह सपरिवार का एक गिरोह बन गया और सामंती खेमा इस गिरोह को गरीबों पर हमला करने हेतु भरपूर सहयोग देना शुरू किया.

इसी उपरोक्त परिस्थिति में बिलभोथन पंडित की पत्नी के साथ अवैध सम्बन्ध के दौरान ही रात्री में बिलभोथन की मां ने अनिरूद्ध पंडित के एक लड़का नट्टा पडित को रंगेहाथ पकड़ लिया. इसके बाद बूढ़ी माता गुस्से में गाली-गलौज करने लगी. चूंकि बिलभोथन परदेश कमाने गए हुए थे इसलिए मामला सामाजिक पंचायत में गया. बूढ़ी के हल्ला-गुल्ला करने से रोकने हेतु श्रीमती देवमाया देवी समझायी कि, 'हे माई जी ! अरे कोई आस देलकै तय कोय पास अइलैय, छोड़ोअ

नेय ई बात केय...'. इसी बात को लेकर माखो पंडित ने अनिरूद्ध परिवार को देवमाया के खिलाफ भड़काना शुरू कर दिया. अन्ततः एक दिन माखो के बहकावे में आकर नट्टा पंडित ने देवमाया पर जानलेवा हमला बोल दिया. मौंके पर मौजूद समाज के हस्तक्षेप से देवमाया बाल-बाल बची.

सामाजिक पंचायत ने बिलभोथन की पत्नी के साथ अवैध-संबंधों के मामलों पर फैसला सुनाया : नट्टा पंडित (पिता अनिरूद्ध पंडित) का बिलाभोथन की पत्नी के साथ अवैध-संबंध स्थापित करना समाज विरोधी गतिविधि है, जो बिल्कुल अनुचित है, इसलिए गलती मानना होगा और आइन्दा ऐसा न हो इसके लिए सख्त हिदायतें दी गई. इसके साथ ही 500 रूपया का अर्थदंड भी सुनाया गया. चूंकि इस पंचायत में सूचना के बाद भी नट्टा पंडित नहीं पहुंचा और उसके बदले अनिरूद्ध पंडित ही पहुंचे थे, इसलिए नट्टा के तरफ से अनिरूद्ध पंडित अपनी गलती स्वीकार करते हुए अपने पुत्र को आइंदा के लिए ऐसा न करने देने का वचन दिये तथा जुर्माने का रूपया भुगतान के लिए कुछ समय मांगे, जिसे समाज ने स्वीकर कर लिया. इस प्रकार समस्या का निदान समाज द्वारा किया गया. परन्तु मामले ने तूल तब पकड़ लिया जब **माखो पंडित ने पंचायत में रूपया जमा करने से अनिरूद्ध पंडित को मना कर दिया.**

इसके बाद समाज ने अनिरूद्ध पंडित को इस अनुचित व्यवहार के लिए दण्डित करने का फैसला लिया. तब पंचायत की ओर से अनिरूद्ध पंडित का पिटाई का आदेश दिया गया. इलाज के दौरान अनिरूद्ध पंडित बच गये और निरन्तर चार दिनों तक जीवित भी रहे. सामंती खेमा जहां इस घटना से काफी खुश था और अनिरूद्ध पंडित के तरफ से घड़ियाली आंसू भी खूब बहाये, वहीं केश में मजबूती लाने के लिए अनिरूद्ध पंडित को जान से मारने का फैसला लिया. इस षड्यंत्र से अनिरूद्ध पंडित व उनका परिवार बिल्कुल अनभिज्ञ थे. घायल अनिरूद्ध पंडित जल्दी मर जाये इसके लिए सामंती खेमा के सलाहकार रामसेवक सिंह ने अपने अनुयायियों को पहले सलाह दिया कि **किसी प्रकार उसे अस्पताल जाने से दो-चार घंटा रोको, जिससे कि अनिरूद्ध के शरीर का सारा खून बह जायेगा और वह अपने-आप मर जायेगा.** लेकिन कई घंटे तक रोकने के बाद भी जब अनिरूद्ध नहीं मरे, तब उन्हें मारने का नया-नया तरकीब रचा गया. इसके बाद भी जब आपरेशन सफल हो गया और वे बच गये, तब पी० एम० सी० एच० में चार दिनों के बाद सामंती खेमा ने डाक्टर के सलाह के विपरीत मूंह में फलों का रस भर देते ताकि दम घुटने से मर जाये. जब उनको

मारने के तमाम उपाय असफल हो गये तब अन्ततः उन्हें जहर देकर मार डाला गया.

हत्या का अन्तहीन सिलसिला शुरू करने वाले रामसेवक सिंह ने इनकी हत्या में भी अपना जांचा-परखा पुराना तरीका ही अपनाये थे (यह घटना 1988 ई० की है).

गद्दार सिकन्दर-मनोहर का मारा जाना

मनोहर मिश्र प्रारंभ से ही संगठन से जुड़े थे. गरीब ब्राह्मण परिवार से थे. यह परिवार शुरू ही पंडित जमीन्दारों से अपने पूर्वजों की जमीन हासिल करने के लिए बकायदा लड़ते आ रहे थे. शहीद का० जटाधर मिश्र के चचेरे भाई थे. थोड़ी खेती बाड़ी और पूजा-पाठ से किसी तरह अपने परिवार का भरण-पोषण करते थे. साहसी और अत्यंत सक्रिय थे. जनता के हितों की लड़ाई में हमेशा आगे रहा करते थे और वफादार थे. गांजा पीने के शौकीन थे. गांव के ही महेश्वर साह (कानू जाति) से इन्हें खूब पटता था और दोनों भारी गंजेरी थे. सिकन्दर साह, महेश्वर साह का बड़ा बेटा था, जो संगठन से जुड़कर कुछ दिनों तक जनता की तरफ से अमीरों के खिलाफ बड़ी सक्रियता से लड़ा और कई सामाजिक कामों में अच्छी भागीदारी निभाया था.

1993 ई० की बात है : गांव में दो परिवारों के बीच चार बीघे जमीन के लिए आपस में झगड़ा चल रहा था. जनवादी संगठन के ताकत पर सिकन्दर साह उस जमीन को सस्ते भाव में खरीदना चाहते थे, जो कि निहायत ही अनुचित था और संगठन में फूट पड़ने की आशंका थी इसलिए नेतृत्व से इस बात की इजाजत नहीं मिल सकी. वह जमीन बाद में झगड़ने वाले में से एक पक्ष ने लिखा लिया. इस दुःख के मारे सिकन्दर साह दोनों पिता-पुत्र संगठन छोड़कर संगठन और जनता के विरोध में उतर आये. इतना ही नहीं बल्कि बकायदा अत्यन्त ही जनविरोधी निर्णय लेते हुए दोनों पिता-पुत्र ने तय किया कि जब हमको जमीन नहीं हुआ तो किसी और को भी जमीन लेने नहीं देंगे और **इस काम में अड़ंगा डालने वाले सिर्फ संगठन के नेतृत्व को मार डालने की आवश्यकता है.** इसके बाद इस गरीब-गुरबों को देखने वाला है कौन ? संगठन ध्वस्त हो जायेगा और जमीन्दार से मिलकर जितने जमीन पर इलाका में आंदोलन चल रहा है, सबको सस्ता दर पर लिखा लूंगा, कौन क्या कर लेगा ? इस तरह बकायदा ये जनविरोधी रास्ते पर चल पड़े.

इसी समय वर्ग दुश्मन जो पूरी तरह रामसेवक सिंह के बातों पर चल रहा था, ने संगठन में फूट डालकर आपस में ही लड़वाकर संगठन को ध्वस्त करके, बाहरी सभी जमीन्दारों का जमीन सस्ती दर में खरीद कर जमीन पर

काबिज गरीब मजदूर-किसानों को खदेड़कर मालामाल बनने की नीति लिये हुए था. घाघ रामसेवक सिंह, सिकन्दर साह के इस लालच से फायदा उठाकर उसे अपने साथ मिला लिया. इस प्रकार गद्दार सिकन्दर साह जनता के हितों से गद्दारी करके जनता के दुश्मनों (सामंती सी० पी० एम० खेमा) से जा मिला. गांजा की दोस्ती के कारण मनोहर भी उसके साथ रहने लगे. इससे उन्मत इन हमलावरों ने एक साल में ही जनता पर ऐसा कहर बरपाया कि समूचा समाज दहल उठा. समझाने-बुझाने के सारे रास्ते व्यर्थ हो गए. तब जनता के हाथों सिकन्दर साह मार डाले गए. एक ही साथ में रहने के कारण धोखा से एक गोली मनोहर को भी लग गया और वे भी वहीं मौके पर ही ढेर हो गए. इसके साथ ही अमनी समेत इलाके के सभी जनविरोधी उन्मत ताकतों को भारी धक्का लगा.

चूंकि संगठन को ध्वस्त करने के लिए इलाकों के सभी सामंती खेमा अमनी के ही खूंख्वार अपराधी-जनविरोधी तत्वों को आन्दोलन पर हमला करने में आगे रखते थे और हर तरह का प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग दे रहे थे इसलिए अमनी की जनता पर ही सबसे अधिक कहर बरपा.

आइये, जरा इन दिनों की आन्तरिक राजनीतिक स्थिति पर ध्यान दें क्योंकि इसमें कई अन्य पहलू भी काम कर रहे थे :

(*i*) अमनी और आसपास के कई ईलाकों में जमीन्दारों के खिलाफ व अन्य कई मुद्दों पर क्रांतिकारी जनान्दोलन चल रहा था. लड़ाई में अनेक क्षतियां झेलते हुए भी निरन्तर जनता की जीत होती जा रही थी. सामंती ताकत कमजोर पड़ता जा रहा था. जन-जागृतियां चारों तरफ लगातार फैलता जा रही था.

(*ii*) इलाके का जमीन्दार अपना जमीन बचाने या अपने कब्जे से खिसकती जा रही जमीन को सस्ता-मंहगा किसी भी दर पर बेचकर भाग जाना चाहते थे क्योंकि एक-के-बाद-एक उनके जमीन पर जनता कब्जा करती जा रही थी. हालांकि जनता ने हर संभव तरीके से न्यायालय का भी सहारा लेकर जमीन पर जमीन्दारों की तरफ से आने वाली पुलिस को सीधी कार्रवाई करने आने से रोक भी रही थी. इसके बाबजूद भी **पुलिस-प्रशासन का रवैया मुख्यतः एक पक्षीय ही रहा. वह जनता के ही खिलाफ कारवाई करती रही. अर्थात् झगड़े के कारण दोनों पक्षों पर वारंटेड लोगों में से जमींदार पक्ष के वारंटेड लोगों को छोड़कर हमेशा गरीबों को ही पकड़ने आती रही.**

(*iii*) इन दिनों क्रांतिकारी जनता के खिलाफ हमलावरों का अगुआ आनंदी सिंह का बेटा सुविराज सिंह बना हुआ था. इनके सलाहकार रामसेवक

सिंह थे. आन्दोलन को ध्वस्त करने के लिए जनता व उनके नेतृत्व पर लगातार सशस्त्र हमला करवाते चले आ रहे थे और **जनता का पक्ष छोड़कर अपने पक्ष में लाने के लिए लाखों रूपये देने का लालच देकर ढुलमुल तत्वों को खरीदते रहते थे और बिक चुके उस लालची लोगों के कंधों पर बन्दूक रखकर जनता पर कहर बरपाते थे.** चुंकि सिकन्दर साह खुद ही सुविराज से सहयोग लेकर जमीन्दार से जमीन बड़े पैमाने पर लिखवाकर मालामाल बनना चाह रहे थे इसके लिए किसी भी तरह आन्दोलन ध्वस्त करने और नेतृत्व की हत्या करने पर आमादा थे, इसलिए मात्र पचास हजार रूपये में ही सिकन्दर साह बिक गया था, जिसमें से तत्काल दस हजार पेशगी दिया और शेष धनराशि नेतृत्व के मारने के बाद देने की बातें तय हुई थी. आश्चर्य कि सुविराज के सहयोग से जिस जमीन को हड़पने के लालच में सुविराज सिंह आंदोलन पर निरंतर हमला चला रहे थे, उसी जमीन को हड़पने के लिए सिंकदर भी आंदोलन पर हमला करने में शामिल हुए. फर्क सिर्फ इतना था कि आंदोलन के ध्वस्त होते ही सिकन्दर को भी मारकर अचलराज सुविराज सिंह कायम करना चाहते थे. दूसरे तरफ, सिकन्दर को यह अहसास ही नहीं था कि नेतृत्व के मरने के बाद सुविराज सिंह उसे भी मार डालेगा. वह जमीन के लालच में इतना अंधा हो गये थे कि यह भी नहीं समझना चाहते थे कि सुविराज का भी नजर उसी सब जमीन को हड़पने का है, जिसके लिए वह जनता के साथ इतना बड़ा अपराध करने पर तुले हुए हैं.

(*iv*) रामविलास प्रसाद (सरपंच संसारपुर) चाहते थे कि सुविराज सिंह को साथ देकर जनता के आंदोलन को ध्वस्त करवा देना है. इस केश में फंसकर सब बर्बाद हो जायेगा और जमींदार से सारा जमीन लिखवाकर जनता को जमीन पर से खदेड़ देंगे. तब बोलने वाला कौन बचेगा जो बोलेगा ?

(*v*) चूंकि आंदोलन के बीच में से असंतुष्ट कुछ और लोग अपनी ही कमजोरियों के कारण अंदर-ही-अंदर खुद को उपेक्षित महसूस कर रहे थे और उल्टी धारा का रूख अख्तियार कर चुके थे जिसमें रामोतार यादव उर्फ रामकिशुन उर्फ लम्बू जी और सौदागर ठाकुर मुख्य थे, लेकिन संगठन छोड़कर भागने का कोई बहाना न पाकर सिकन्दर को गुप्त समर्थन दे रहे थे.

(*vi*) इन्हीं दिनों एक और क्रांतिकारी ताकत तत्कालीन माओवादी कम्युनिस्ट केन्द्र (एम० सी० सी०) के कुछ कार्यकर्त्ता खगड़िया क्षेत्र पहुंचे थे. सौदागर ठाकुर ने रामोतार यादव, सिकन्दर और रामविलास सरपंच का एक त्रिगुट तैयार करके बड़ी ही चालाकी से उस संगठन से जुड़ गए. इधर के आन्तरिक

राजनीति एवं इनके जनविरोधी हरकतों से अनभिज्ञ वे कामरेड इस गुट के बहकावे में आ गए. फलस्वरूप एम० सी० सी० के नाम से इस क्षेत्र के आंदोलन और उसके नेताओं के खिलाफ कुछ गलत-पर्चा पोस्टर भी छापा, वितरण हुआ और जगह-जगह चिपकाया भी गया. का० विजय आर्य के संपादकत्व वाली जन-पत्रिका में इस क्षेत्र के आंदोलन व उसके नेताओं के खिलाफ लेख भी छापे गये.

उपरोक्त परिस्थिति में इस इलाके का क्रांतिकारी आंदोलन काफी संकट में फंस गया था. क्रांतिकारी जनता इतना संकट कम ही बार महसूस की थी. इन दिनों संगठन व सम्पूर्ण आंदोलन के खिलाफ दो तिकड़ी बना था : पहला खेमा सुविराज सिंह, रामविलास सरपंच और सिकन्दर का था और इनमें से सबके उद्देश्य अलग-अलग होते हुए भी **आंदोलन को ध्वस्त करने के सवाल पर एकता** थी. दूसरा खेमा सौदागर ठाकुर, रामोतार यादव और सिकन्दर साह का था, इसमें सौदागर ठाकुर और रामोतार यादव को नाम कमाने की भूख थी, लेकिन सिकन्दर को किसी भी हालत में जमीन का लालच था. फिर भी यह सब काम के लिए आंदोलन को ध्वस्त करना जरूरी था. इसके लिए नेतृत्व को मारना सबसे पहला जरूरी टास्क था और इसी बुनियाद पर इन सबकी एकता कायम थी. इस प्रकार दोनों तिकड़ी को जोड़ने वाला कड़ी **सिकंदर** था इसलिए भावी परिणाम से अनजान सिकंदर की शक्ति उमड़ने लगी थी. अत्यन्त ही खूंख्वार रूप धारण करते हुए सिकन्दर ने जनता पर कैसा कहर बरपाया, इसे समझने के लिए केवल कुछ उदाहरण इस प्रकार दिये जा रहे हैं :

(*i*) जनता अपने द्वारा दखल की गई अपने खेतों में जब खेती-बाड़ी का काम करने जा रही थी तब सिकन्दर साह ने जयजयराम यादव को ललकार कर देवेन्द्र पोद्दार पर हमला बोलवा दिया. इस हमले में देवेन्द्र पोद्दार को इतनी बेरहमी से मारा गया था कि उसके बायें पांव का हड्डी दो टुकड़े और दाहिने पांव की हड्डी तीन टुकड़ों में टुट गया. उनके पत्नी को पटककर पेट पर लात से हुमच दिया. उनके गोद से बच्चे को छीनकर फेंक दिया. उनका हल-बैल-बीज-खाद सब लूट लिया. जनता जब तक बचाव में आयी तबतक तो इनका हालत अत्यन्त ही खराब हो चुका था. लोग टांगकर तीनों को अस्पताल लाये.

(*ii*) इस घटना से उत्साहित होकर सिकन्दर ने जयजयराम यादव के साथ शिवाला (शिव मंदिर) पर बैठकर खुलेआम खस्सी का मांस खाया और शराब पिया. अहंकार के मद में चूर ऐसी-ऐसी अपमानजनक उन्मत बातें जनता

को डराने हेतु बोला कि आम जनता भौंचक्का रह गई.

(*iii*) संगठन को ध्वस्त करने, लोगों को आंतकित करने खातिर अमनी गांव के बीच में गोली चलाना शुरू कर दिया. इस अनर्थ का प्रतिकार जब संगठन की ओर से रामगुलाम राम उर्फ बादल के नेतृत्व में जनता ने किया तब उसने दर्जनों चक्र गोलियां चलाया. हलांकि किसी को किसी प्रकार का कोई क्षति नहीं हुआ.

(*iv*) संगठन को बदनाम करने के नियत से सिकन्दर ने निर्लज्जतापूर्वक झूठा व भ्रामक पर्चा निकाला कि अमुक-अमुक लोग 'जमींदार से रूपया लेकर मिल गया है..., कि अब यह आंदोलन नहीं चलेगा...' इत्यादि. इससे सिकन्दर के खिलाफ आम जनता में मानो नफरत का सैलाब आ गया. उसके इस निर्लज्जतापूर्ण बातों को तो उसके साथ के लोग व अपराधी खेमा ने भी मानने से साफ इंकार कर दिया.

इस प्रकार सिकन्दर द्वारा आंदोलन पर अन्तहीन हमला और तेज हो गया था. चुंकि बड़ी चालाकी से सिकन्दर साह ने मनोहर मिश्र को भी अपने साथ में ले लिया. चानो पासवान को भी फुसलाये हुए था इसलिए ये लोग भी जनता में बदनाम हो गये. इसके बाद भी सिकन्दर को बचाने के लिए जनता की ओर से फैसला हुआ था कि पेशेवर अपराधियों के थेथेदार सामंत रामविलास सरपंच जो अव्वल दर्जे का बदमाश है, पर हमला होने से सिकन्दर साह डर जायेगा और गांव छोड़कर अन्यत्र भाग जायेगा. इस प्रकार आंदोलन का रक्षा हो जायेगा. दुर्भाग्यवश गुरिल्ले के किये गये हमले के बाद भी रामविलास बच गये और सिकन्दर भी नहीं भागा. रामविलास सतर्क हो गये थे और कहीं गुप्त रहने लगे थे. इस कारण, उस पर दुबारा हमला कर पाना अब संभव नहीं रह गया था. तब आखिरकार मजबूर होकर सिकन्दर पर हमला करने का फैसला जनता ने लिया. दुर्भाग्यवश जब सिकन्दर पर हमला किया गया था और गोलियाँ चल रही थी तभी मनोहर भी उसे बचाने वहां पहुंच गए और धोखे से एक गोली उन्हें भी जा लगी. वे तत्क्षण ही मौत को प्राप्त हो गये.

जनता की इस सशस्त्र कर्रवाई के बाद तमाम शत्रु एकबारगी चारों खाने चित्त हो गया. जनता में पुनः खुशहाली की लहर दौड़ पड़ी. लेकिन बदमाश सौदागर ठाकुर ने का० विजय कुमार आर्य जी को धोखे में रखकर उनके पत्रिका में एक लेख छापवाया, जिसमें आंदोलन को बदनाम करने का काफी कोशिश उन्होंने किया था. लेकिन तुरंत बाद ही पत्रिका के संपादक मंडल को इस क्षेत्र की

सारी वस्तुगत स्थितियों से अवगत कराते हुए एक विस्तृत रिपोर्ट भेजा गया. इसके बाद का० विजय कुमार आर्य जी तमाम वस्तुस्थिति को समझ गये और फिर वे लोग कभी इसके धोखे में नहीं आये.

शहीद का० लक्ष्मी पंडित की कायराना हत्या

''गरीबी की पीड़ा से उबकर,
नफरत की ज्वाला में तपकर !
दुश्मनों से लगे थे लड़ने, पार्टी से जुड़कर !!
मुश्किलों में भी स्वयं हंसते, साथियों को हंसाते !
एक कायराना हमलों में युवा लक्ष्मी चले गये
हम सभी को रूलाते !!''

शहीद का० लक्ष्मी पंडित के पिता गोंगु पंडित अपने तीन भाईयों में सबसे छोटे थे. लोगों के खेतों में मेहनत-मजदूरी करके अपने एकलौता संतान को गोंगु पंडित बड़े ही लाड़-प्यार से बड़ी ही गरीबी में पाले थे. इनके (लक्ष्मी के) दादा रामेश्वर पंडित अमनी में ही (अपने ससुराल में) आकर बस गये थे. अपने पिता के नाना कमलू पंडित को कोई लड़का नहीं था. सिर्फ तीन बेटियां ही थी, जिसमें सबसे बड़ी बेटी लक्ष्मी की दादी सरिया देवी थी, जो यहीं मायके में आ बसी थी. बाकी दो अपने ससुराल में थी. कमलू ने कुल 25 बीघा जमीन में से मात्र तीन विघा जमीन ही अपने भतीजे प्रेमी पंडित को लिखे थे, जबकि बांकि का सारा जमीन भी प्रेमी पंडित ने अपने कब्जे में ही डाल रखा था. जब लक्ष्मी बड़े हुये, तब प्रेमी पंडित का लड़का अनिरूद्ध और छोटेलाल पंडित के कब्जा से अपना जमीन वापस पाने के लिए उन्होंने सारा कागज-पत्र (जमीन संबंधी) निकाला. इस बात का खबर अनिरूद्ध पंडित का बड़ा बेटा उमेश पंडित को लग गया था इसलिए इसने अपराधी गिरोह के सरगना आनन्दी सिंह का बेटा सुविराज सिंह के सहयोग से दिन-दहाड़े धोखे से हमला कर का० लक्ष्मी का जघन्य हत्या कर दिया. ज्यों ही यह खबर इनके घर तक पहुंचा त्यों ही चारों तरफ से लोग दौड़ पड़े. गांव में गोलियां भी चली किन्तु, तब तक काफी देर हो चुका था. इन सामाजिक अपराधियों ने इनके लाश को ले जाकर सरेआम कुट्टी-कट्टी काटकर बोरे में भरकर बगल के नदी में प्रवाहित कर दिया.

घटनाक्रम इस प्रकार था : का० लक्ष्मी पंडित अपने खेत (जो गांव के दक्षिण तरफ एक किलोमीटर की दूरी पर था) में काम कर रहे थे. घर में इनकी बेटी बीमार पड़ गयी. इसकी सूचना मिलते ही दवाई लाने हेतु गांव के उत्तरबाड़ी टोल

(दुश्मन खेमा) में स्थित उमा सिंह के दवा दुकान पर आये. इस बात की जानकारी ज्योंही सुविराज सिंह के घर पर ठहरे उमेश पंडित को हुआ वैसे ही वे सभी स्टेनगन व अन्य घातक आग्नेशास्त्रों से लैस निहत्थे का० लक्ष्मी पर टूट पड़े. लेकिन निर्भीक का० लक्ष्मी इन खतरों से जूझते हुए अपने घर की तरफ निकल भागे. किन्तु रास्ते में ही दूसरा अपराधी जेजैया इनको पकड़ लिया. फिर तो उमेश पंडित और सुविराज सिंह ने सटकर निहत्थे लक्ष्मी को गोलियों से छलनी कर दिया.

चुंकि घटनास्थल के चारों तरफ सामंती गुंडों का ही दबदबा था, इसलिए आम जनता को इसकी सूचना काफी देर से मिल पायी. सूचना मिलते ही लोग दौड़ पड़े किन्तु, तब-तक देवकी सिंह के इशारे पर अपराधी सरगना सुविराज सिंह ने उमेश पंडित, सजन सिंह, कुमार सिंह वगैरह जैसे शातिर अपराधियों के सहयोग से इनके शव को उठाकर उत्तर दिशा की ओर ले भागा और आम जनता को आतंकित करने के लिए शव को कुट्टी-कुट्टी काटकर बोरा में भरकर बागमती नदी की उफनती जलधारा में फेंक दिया.

जनता की ओर से गुरिल्ले जब घटनास्थल पर पहुंचे तब दोनों ओर से गोलियों की बौछार चलने लगी लेकिन तब तक लाश दफन की खबर पाकर आम जनता मायूस हो गयी.

... और इस तरह का० लक्ष्मी हमलोगों को अलविदा कह शहादत को प्राप्त किये.

मुखबिर चरित्तर पंडित, अपराधी जयजयराम सिंह और सामंत नारायण सिंह का सफाया

आम जनता ने अपने साथी का० लक्ष्मी पंडित को इस तरह बेवजह रास्ता-पैरा घेरकर कायराना तरीके से हत्या कर लोगों को डराने और दिन-दहाड़े पैरकट पर कुट्टी-कुट्टी काटकर नदी में फेंकने की घटना से आमजनता में आक्रोश की ज्वालाएं फूट पड़ी थी. जनता ने संगठन और अपने गुरिल्ले बेटों पर बार-बार के इस खूनी हमलों से निपटने के लिए दुश्मन के मुखबिर समेत तकरीबन चुन-चुन कर एक दर्जन शातिर व खूंख्वार अपराधियों को मौत के घाट उतारने का सजा देने का आदेश दिया. इसी आदेश के तहत का० लक्ष्मी की हत्या में मुखबिरी के आरोपी चरित्तर पंडित, बार-बार के हमलों में शामिल जयजयराम सिंह और अन्य अपराधियों के लिए हमेशा ही ढ़ाल की तरह काम करने वाले और आम जनता पर हमला के लिए उकसाने वाले सामंत नारायण सिंह को गुरिल्ले ने महज कुछ ही दिनों के अंदर मौत के घाट उतार दिया और अन्य अपराधियों को सजा देने की योजना पर विचार किया ही जा रहा था कि अपराधियों के तरफ से पुलिस ने हस्तक्षेप करके शेष अपराधियों को अपने मुकम्मल सजा से बचा लिया.

शहीद का० भोपी यादव

उमर रही जवानी को
सहा न गया जब अत्याचार !
निकल पड़े तब दस्तों के संग
करने घोर प्रतिकार !!
धनियां, गेंहूँ की कटनी में,
थी चली गोलियों की बौछार !
थके साथी लगे भोजन करने,
पर भोपी ने दिया ललकार !!
सामने दुश्मन के जा डटे,
तभी बगल से आयी गोली !
'हम तो चले, लो! हथियार सम्भालों साथी',
यही थी उनकी अंतिम बोली !!

जिनका जमीन पंडित हरिनंदन मिश्र ने हड़प लिया था, उन्हीं खेलामड़र के परपोता थे का० भोपी यादव. कम ही उमर में पिता रामनारायण यादव का साया भी सर से उठ चुका था. इसलिए मां और भाई ने बेहद ही गरीबी में इन्हें पाला था. का० भोपी बचपन से ही पूर्वजों की जमीन वापस लेने की लड़ाई-लड़ते अपने परिवारों और संगठन को देखे थे. स्कूल न जा पाने के कारण भले ही वे निरक्षर रह गए थे लेकिन जब क्रांतिकारी ताकतों के नेतृत्व में आम जनता तमाम अन्याय-अत्याचार के खिलाफ दुश्मन के सशस्त्र हमलों का जवाबी प्रतिकार कर रही थी, तभी युवा भोपी पार्टी के झंडे तले गुरिल्ला दस्तों से आ मिले थे और दिन-रात जनता के हितों की रक्षा की लड़ाई में भाग लेने हेतु पूर्णकालिक कार्यकर्त्ता बन गये. अभी दस्ता में शामिल होना एक साल भी पूरा नहीं हो पाया था कि एक लड़ाई में दुश्मनों ने धोखे से छिप कर इन्हें गोली मार दिया. **मौत की घड़ी में भी वे पार्टी व जनता के आदेश को नहीं भूले और अपना हथियार व कारतूस अपने पीछे के साथियों को सौंप कर** शहादत की नवीन राह के राही बन गये.

घटनाक्रम इस प्रकार था : गुरिल्ले दस्ते के क्षेत्रीय दौरा के क्रम में दस्ता अमनी

गांव आया हुआ था जहां बेदखली के खिलाफ फसल जब्ती की लड़ाई जनता लड़ रही थी. इसी दौरान अपने एक साथी के निजी खेत में लगे धनियां के फसल को सामंती हमलावरों ने लूटवाना शुरू कर दिया. इस अन्याय के प्रतिरोध में दस्ता भी लड़ाई में उतर पड़ा. लड़ते-लड़ते काफी देर हो चुका था, इसलिए सभी भूख-प्यास से थक चुके थे. समय मिलते ही कुछ देर के लिए सभी लोग भोजन के लिए वापस लौटे. लेकिन अनुभव की कमी के कारण अदम्य साहसी व बहादुर योद्धा का मन युद्धस्थल को छोड़कर जाना पसंद नहीं किया और कुछ अन्य साथियों के साथ चुपके से दुश्मन का फसल जब्त करने के लिए एक नया मोर्चा खोल दिया. तब तक दुश्मन के सहयोग में पड़ोसी गांव माड़र से भी कुछ सामंती-अपराधकर्मी लड़ने पहुंच गया और पोजिशन लेकर छिप गया और धीरे-धीरे इनके बगल में आ पहुंचा. अनुभव की कमी के कारण का० भोपी दुश्मन के इस पैतरे को समझ नहीं सके और दुश्मन के जाल में फंसते चले गये. लड़ाई के मैदान का यह दिलेर योद्धा सिर्फ सामने के दुश्मन से लड़ते रहे. इतने में बगल से नजदीक आ पहुंचे माड़र वाले दुश्मन (जियाउद्दीन का बेटा) ने गोली चला दिया. भोपी तत्क्षण ही घायल हो गये. चुंकि बांकी गुरिल्ले इस भिड़न्त की आवाज को सुनकर दौड़े चले आ रहे थे, किन्तु भोपी के सहयोग में पहुंचने से अभी भी काफी दूर थे. बुरी तरह घायल होने के बाद भी भोपी साहस नहीं छोड़े और पास लड़ रहे एक साथी से कहा, ''साथी, मुझे गोली लग चुकी है, दुश्मन नजदीक आ चुका है, इसलिए मेरे हाथ का हथियार भी आप सम्भालिये'. यह कहकर का० भोपी ने अपने हाथ का हथियार और गोलियों का बंडल दूसरे साथियों को दे दिये.

... और वे हमलोगों के कंधे पर लड़ाई को जारी रखने का भार सौंप कर सदा के लिए विदा हो गए.

कमांडर रामगुलाम राम (बादल) पर हमला और मूर्ख बहसी महेश्वर साह का अंत

महेश्वर साह जब से पाला बदल कर दुश्मनों के खेमे में जा मिले थे तब से ही सामंती हमलावर अपराधियों का हौसला बुलंद था. इनके पुत्र गद्दार सिकन्दर के पाशविक अत्याचार से त्रस्त आम जनता ने उसको मार कर समाज में शांति व्यवस्था कायम कर अपराधियों के बुलंद हौसलों को पस्त कर दिया था. लेकिन मूर्ख महेश्वर साह ने उक्त घटना से सबक लेना तो दूर उल्टे गुप्त रूप से संगठन पर हमला करने की तैयारी में पिल पड़ा. इस विवेकहीन ने सोच लिया था कि अगर रामगुलाम राम (गुरिल्ले के कमांडर) को मार डालेंगे तो जनता की तरफ से दूसरा लड़ने वाला है कौन, जो मुझसे मुकाबला कर सकेगा ? **जनसमुदाय ही सच्चे वीर होते हैं, इस बात को ये समझना ही नहीं चाह रहे थे.** अपने इसी घटिया सोच के कारण 1998 ई० के एक सुबह इन्होंने अपने घर के समीप से अकेले गुजरते हुए निहत्थे रामगुलाम राम उर्फ बादल को अपने दो पुत्रों (भूषण और बिजली) के सहयोग से पीछे से पकड़ लिया और धारदार हथियार से गला रेत दिया. कंठ में हंसुआ घुसेड़ कर चौवा में फंसाकर गाल फाड़ते हुए चौहड़ तक तोड़ दिया. पेट में भी हंसुआ घुसाकर हर संभव प्रयास से उनका पेट भी फाड़ दिया. तब तक शोर-गुल हो जाने के कारण व अब मर ही जायेगा, यह समझकर छोड़ दिया.

उसी घायल अवस्था में रामगुलाम किसी तरह पीछे हटे. मौके पर पहुंची देवमाया देवी ने झट से अपने चादर से रामगुलाम के गले व मूंह से बहते खून के बौछार को रोकने का प्रयास करने लगी. देवमाया उनको अपने साथ लिये बगल के एक साथी के घर पहुंची जो अपने बगल में हथियार रखकर भोजन करने बैठे ही थे. उन्होंने जब अपने प्रिय साथी रामगुलाम का यह दुर्दशा देखा तो अत्यन्त ही कुपित हो उठे और तत्क्षण ही अपने हथियार से अनेक फायर कर दुश्मनों को चुनौती दे डाला. तब तमाम साथी व जनसमुदाय फायरिंग की इस आवाज को सुनकर घटनास्थल की ओर दौड़ पड़े. का० रामगुलाम पर हमला करने के बाद ढीठ महेश्वर साह तीनों बापुत अपने घर में चौकी व दीवार की आड़ लेकर थ्रीनट से गोली चलाते हुए लड़ने के लिए उन्मत्त गर्जन-तर्जन करते हुए जनता को

आर्तंकित करने हेतु अनाप-शनाप बकने लगे. खुलेआम आम जनता को धमकाने लगे. यह घटना चिनगारी की तरह समूचे गांव में फैल गयी. दस्ता के बांकि साथी भी गांव में ही थे इसलिए गुलाम पर हमला की सूचना पाते ही जहां एक तरफ कुछ लोग गुलाम को टांगकर इलाज के लिए ले भागे, वहीं दूसरी तरफ हमलावर महेश्वर साह पर जबाबी कार्रवाई के लिए टुट पड़े. महेश्वर साह चौकी की आड़ से गोली चलाने लगे. तब आक्रोशित उप-कमांडर ने अपने रायफल से निशाना साधकर एक ही गोली से इस मूर्ख बहसी के खोपड़ी को तोड़कर सदा के लिए उसके आतंक का अंत कर दिया. उसका दोनों बेटा सामने आने का साहस नहीं जुटा सका और कोठी-सन्दुक में जाकर छिप गया और किसी तरह जनता के आक्रोश से बच पाया. आक्रोशित जनता ने उसी समय महेश्वर के लाश के टांग में रस्सी बांधकर जमीन पर घसीटते हुए ले जाकर कहीं फेंक दिया. इस दु:खद घटना के बाद भी रामसेवक सिंह आपने सामंती खेमा के सरगना सुविराज सिंह वगैरह को इस बात के लिए हिदायत कर रहे थे कि, 'गुलाम को इलाज के लिए ले जाने से तीन घंटा तक भी पीछा करके किसी तरह रोको, जाने में देर होगा तब तक सारा खून बह जायेगा, बस अपने आप मर जायेगा...'. यह सुनकर उन्हीं के पक्ष के कुछ विवेकवान लोगों ने उन्हें डांटा भी था. लेकिन फिर भी सशस्त्र अपराधी सुविराज सिंह गिरोह अवश्य ही हमला करके रामगुलाम को इलाज हेतु ले जाने के रास्ते में रोकता, किन्तु भयानक जनाक्रोश को भांपकर उसका सिट्टी-पिट्टी गुम हो गया. फिर भी पीछा करते हुए बेगुसराय तक पहुंच गया और पुलिस की मुखबिरी कर इलाजरत् रामगुलाम को गिरफ्तार करवा दिया. जब तक अस्पताल में इलाज चलता रहा, तब तक एक सेक्शन पुलिस जेल पहुंचाने तक ड्यूटी करते रहा और जो कोई इस बीच (गुलाम की माता जी को छोड़कर) उनसे मिलने जाता, उसे पकड़-पकड़कर पुलिस जेल भेजती रही (गुलाम के गला कटने और महेश्वर साह के मरने की घटना नवम्बर, 1998 ई० को तकरीबन एक साथ घटी थी).

गुलाम के जेल से बाहर आने के बाद अमनी में विशाल जन-अदालत लगा. इस जन-अदालत में महेश्वर साह की पत्नी तथा बांकी दोनों अपराधी बेटों ने आत्म-समर्पण किया और अपना सारा अपराध कबूल किया. इस अदालत ने उसका हथियार जमा करवाया और जीवन की भीख मांगने पर सबों को माफ कर दिया. इस प्रकार महेश्वर साह ने अपनी ही मूर्खता से अपने विनाश को पास बुला लिया. ■

सरपंच श्यामनंदन सिंह की हत्या

श्यामनंदन सिंह 'सरपंच' अपने सहोदर बड़े भाई नंदकिशोर सिंह के बाद अमनी पंचायत का सरपंच चुने गए थे. सी० पी० एम० के नेतृत्व में आनंदी सिंह के साथ मिलकर 1970 ई० के आसपास के संघर्षों में ये भी शामिल थे, इसलिए इनकी प्रतिष्ठा जनता में थी. जब से सी० पी० एम० नेतृत्व जनविरोधी रूख अख्तियार किया, तब से जनता के खिलाफ हर हमले और हर पापकर्म में ये भी सक्रिय भागीदारी निभाये. इनलोगों द्वारा ही पोषित इनका एक भतीजा कुमार सिंह और आनंदी सिंह का लड़का सुविराज सिंह ने जनता को जमीन पर से बेदखल करने के लिए नया अपराधी हमलावर सशस्त्र गिरोह तैयार किया था. इस गिरोह को अनेक प्रकार के असामाजिक तत्वों को जमा करके बनाया गया था. इसका प्रशिक्षण कुख्यात रामसेवक सिंह ने 83-84 ई० के दौरान ही दिया था. इसी गिरोह का एक अपराधी रंजीत सिंह रात्रि में सोये अवस्था में श्यामनंदन सिंह (सरपंच) की गोली मारकर हत्या कर दी.

खेद के साथ बीती हुई घटना को व्यक्त करना पड़ता है. दरअसल कुमार सिंह उर्फ विजयकांत कुमार सिंह के घर-आंगन में इनके सभी अपराधी तत्वों का जमावड़ा बैठता था. इसी क्रम में कुमार के भाभो अर्थात् श्यामनंदन सिंह के पुतोहू के साथ अपराधी रंजीत सिंह ने अवैध शारीरिक-संबंध स्थापित कर लिया. श्यामनंदन सिंह को यह नागवार गुजरा और रंजीत को अपने घर-आंगन आने-जाने पर रोक लगाये. उस औरत से मिलने-जुलने और प्रेमालाप में बाधा पड़ जाने से बौखलाये रंजीत सिंह (पे० चिता सिंह) ने दरवाजे पर गहरी निन्द्रावस्था में सोये श्यामनंदन सिंह (सरपंच) का गोली मारकर हत्या कर दिया.

विजयकांत कुमार उर्फ कुमार सिंह इन सारी बातों से अवगत थे. फिर भी इन्होंने अपने चाचा के असली हत्यारे रंजीत सिंह पर केश नहीं करके आम गरीब-निर्दोष जनता पर केश दर्ज किया. रंजीत सिंह को बचाने के लिए चुन-चुन कर उन सभी निर्दोष लोगों को केश में फंसाया, जो-जो लोग इनके गलत कार्यों का विरोध करते आ रहे थे अर्थात्, चन्द्रदेव सिंह उर्फ चण्डी महाजन, जितेन्द्र गुप्ता, योगी पासवान वगैरह.

इस भारी अनर्थ के खिलाफ आम जनता ने इस घटना का जबर्दस्त

विरोध किया और तत्कालीन प्रशासन से सच्चाई जांच कराने का मांग किया. भारी जन-दबाव के बाद पुलिसिया जांच-पड़ताल में पुलिस ने असली हत्यारा रंजीत सिंह पर केश दर्ज किया और निर्दोष लोगों पर से केश हटाया.

कहा जाता है **अपराधियों का न तो कोई धर्म होता है और न ही कोई सगे होते हैं.** अपराधी रंजीत सिंह ने इस कहावत को चरितार्थ कर दिया. अपराधी को पनाह देने वाला खुद उन्ही अपरधियों की गोली का शिकार बने और अपनी इज्जत भी गंवायी.

शहीद आरती देवी

'दनादन चल रही है गोली, तो क्या
धान न सुखाऊँ ?' ऐसा माँ ने बोली !
निर्भीकता की प्रतीक थी बड़ी भोली,
छप्पड़ से बोढ़नी उतारते समय
लगी पुलिस की गोली!!
तत्क्षण चली प्रयाण को,
कह, 'लड़ना लाल मेरे !!'

आरती देवी (पति-महावीर राम) दोनों प्राणी मजदूरी करके अपने सभी बच्चों का लालन-पालन किये थे. शुरू से ही उनका पूरा परिवार गांव में हो रहे तमाम सामंती जुल्म-अत्याचार के खिलाफ क्रांतिकारी आंदोलन से जुड़ गये थे. ये रिश्ते में रामगुलाम राम उर्फ बादल के चाचा-चाची लगते थे. घटना के दिन इलाके के सभी सामंती-सैकड़ों खूंख्वार सशस्त्र अपराधियों ने जिला पुलिस बल व प्रशासन से सांठ-गांठ करके पूरे गांव को चारों तरफ से मूंह अंधेरे ही घेर लिया और आम जनता पर गोली चलाना शुरू कर दिया था. इन हमलावरों के सहयोग में उस समय गांव में मौजूद पुलिस कैम्प के जवान भी गोली बरसा रहे थे. सुबह करीब छः बजे से ही गोली चलना प्रारंभ हो गया था. प्रतिकार में जनता भी आत्मरक्षार्थ अपने पास जो भी परंपरागत अस्त्र-शस्त्र था, उसी से जबरदस्त प्रतिरोध में डट गये. इस प्रकार दोनों तरफ से लड़ाई सुबह से ही जारी हो गया था. क्रांतिकारी आंदोलन को जड़-मूल समेत नष्ट कर देने को प्रतिबद्ध तमाम सामंतों-अपराधियों-पुलिसिया गठबंधन की इस खौफनाक लड़ाई का कोई अन्त नजर नहीं आ रहा था इसलिए अपने घर से बाहर आकर आरती देवी सोची कि, 'उसना हुआ धान है, खराब हो जायेगा इसलिए जाती हूँ दरवाजे पर धूप में सूखने के लिए पसार देंगे और फिर घर में चले आवेंगे. उधर धान सूखता रहेगा. गोली चलता है तो चलता रहे...'. हालांकि ऐसा करने से घर के अन्य सदस्य मना भी किये थे. किन्तु मां ने निर्भीकतापूर्वक धान ले जाकर उसे पसारने के लिए दरवाजे के छप्पड़ से खड़ी होकर बोढ़नी उतारने लगी. बस इसी समय पूर्व दिशा से अपराधी हमलावरों की तरफ से पुलिस ने गोली मार दिया. गोली सीधे माताजी के सीने में लगी थी और वे

तत्क्षण ही हमलोगों को छोड़ कर चली गयी.

हालांकि लड़ाई के दौरान दुश्मन के घेरा को तोड़ते हुए गुरिल्ला दस्ता भी जनता की रक्षा में आ जुटा था. लेकिन अविकसित देशी हथियारों से आधुनिक आग्नेयास्त्र का आमने-सामने का मुकाबला चल रहा था. पुलिस वाले खाली ड्राम में कंबल-रजाई ठूँस कर उसे घोल्टाते (लुढ़काते) और उसके ओट से गोली चलाते हुए पूर्व दिशा से बढ़ते चले आ रहे थे. दक्षिण-पश्चिम दोनों तरफ से पड़ोसी गांव की जनता भी अमनी की जनता के रक्षा में आ गई थी, लेकिन दुश्मनों ने उन्हें कैंचा घाट से भी पीछे तक हटा दिया था और कैंचा घाट पर गरीबों के झोपड़ी व खलिहान पर रखे धान के जमा बोझों में आग लगा दिया और बथान पर से दर्जनों मवेशी हांक कर चलते बने. इसके बावजूद लगातार आठ घंटों तक चली घमासान लड़ाई के बाद भी जब दुश्मन को जीत हासिल नहीं हो पाया, तब भारी संख्या में पुलिस बल के साथ एस० पी० पहुंचा. जनता ने पुलिस के खिलाफ आक्रोश व्यक्त करते हुए घेराव कर दिया और कैंचा-घाट बासा में लगाई गई आग में धू-धूकर जलते हुए बासा को पुलिस अधिकारियों को दिखाया. साथ ही मवेशी हांककर ले जाते अपराधियों को भी दिखाया. नरेश पासवान नामक मानसी थानाध्यक्ष ने उस समय एस० पी० से आदेश मांगा कि, 'हुजुर हम मवेशी सहित अपराधियों को पकड़ लेते हैं.' परन्तु अपराधियों से मिले एस० पी० ने मना करते हुए कहा, 'अभी छोड़ दो, मवेशी वापस मिल जायेगा.' **एस० पी० का यह कथन काबिल-ए-गौर है.**

वास्तव में जनता को झूठा आश्वासन देकर आरती देवी की लाश पुलिस अधिकारी लेकर चला गया और **इसके अगले ही दिन सभी मवेशी को वापस भी भेजवा दिया.** यह घटना सूर्य के प्रकाश की भांति स्पष्ट करता है कि **किस प्रकार खूंख्वार सामंती-अपराधी गिरोहों के साथ पुलिस का स्पष्ट गठजोड़ बना हुआ है.**

शहीद का० बौकु राय

आंदोलन की हवा के झोंकों से,
पचास वयश में जागा शेर !
गरीबी और दुर्दिन की
मार को देखे थे ये ढ़ेर !!
बौकु राय के ललकारों से
जब जागा था जनता का जोश !
थर्राया तब अवध बिहारी,
उड़ गया सभी डिंगबाजों का होश !!
संघर्षों की जन-लहरी भी थी
पास-पड़ोस के गांवों में !
क्रांतिकारियों के बीच
भाई-चारा और एकता का नारा बुलंद करते
गये थे बेदखली के खिलाफ
जमींदार-सामंतों से लड़ने,
वहीं हुई शहादत रण में !!

कुर्मी जाति के एक गरीब किसान परिवार में इनका जन्म हुआ था. अमनी के पड़ोसी गांव रसौंक इनका जन्मस्थली था. यह गांव वर्त्तमान खगड़िया जिला के मोरकाही थानान्तर्गत है. वे एक गरीब किसान थे. बचपन से ही शोषण-जुल्म देखे व झेले थे. जब यहां क्रांतिकारी किसान आंदोलन चल रहा था, उसी दौरान खगड़िया के एक जमींदार का कचहरी जो रसौंक में भी बना हुआ था, उसी जमीन पर यहां के सैकड़ों गरीबों का झोपड़ी क्रांतिकारी संगठन द्धारा बंनवाया गया था, जिसमें इन्हौंने जनता के साथ काफी हिम्मत व जोश के साथ भाग लिया था. आंदोलन में इनके जुड़ाव से संघर्षशील जनता का ताकत व जोश भी काफी बढ़ गया था.

इसी दौरान पड़ोसी गांव अमनी में वहां की जनता बेदखली के खिलाफ जोरदार लड़ाई लड़ रही थी. सैकड़ों लोगों के साथ जोशीले कामरेड बौकु राय भी उन्हें मदद देने पहुंचे. खेतों में जब जोत-आबाद का काम जारी था, उसी समय

सी० पी० एम० पोषित सशस्त्र गुंडा गिरोह अमनी के सुविराज सिंह के नेतृत्व में हमला बोल दिया. जनता ने डटकर मुकाबला किया किन्तु, अत्याधुनिक हथियारों से लैस अनेक पेशेवर अपराधकर्मी गिरोह, सफेदपोश राजनीतिक और पुलिस के सांठगांठ से किया गया यह हमला एकदम अप्रत्याशित था. अपनी ओर से तय रणनीति का उल्लंघन हो चुका था. फलस्वरूप जनता में भगदड़ मच गई. जनता की यह स्थिति देखकर असीम साहसी बौकु राय खाली हाथ ही दुश्मन को ललकारने लगे और जनता का जोश बढ़ाना शुरू कर दिये. किन्तु कई तरफ से चल रही गोलियों की बौछारों के बीच उनका यह तरीका काम नहीं आया. वे गोलियों की बौछारों से बचने हेतु धरती पर लेटने के बजाय सीना ताने ताल ठोक कर रणक्षेत्र में ही बैठकी देते हुए लगे दुश्मनों को ललकारने. फलस्वरूप दुश्मन ने इन्हें गोली मार दिया. वे तत्क्षण ही अंतिम सांस ले लिए. इससे जनता की घबराहटें और भी बढ़ गई, लोग पीछे हटने लगे और दुश्मन उनके लाश को ले भागा. दुश्मनों ने उनके लाश को टुकड़े-टुकड़े काटकर बागमती की धारा में प्रवाहित कर दिया. इस अप्रत्याशित घटना से आंदोलन को धक्का लगा.

पहले से तयशुदा नीति का अगर उल्लंघन नहीं किया जाता तो संघर्ष का नतीजा कुछ और ही होता. परन्तु व्यवहार में इस रणनीति का पूरी तरह से उल्लंघन सशस्त्र दस्ता से हुआ. निर्धारित रणनीति के उल्लंघन ने हमारे एक जोशीले साथी बौकु राय को हमसे छीन ले गया.

आज साथी बौकु राय हमलोगों के बीच नहीं हैं, लेकिन उनकी शहादत ने क्रांतिकारियों के बीच भाई-चारा और एकता को नये सिरे से बुलंद किया.

रामदेव गुप्ता अमर रहे !

सामंती हमलों के बीच,
थे पड़ गए अकेले रामदेव वीर !
निष्क्रियता छू न सकी थी,
सूझ-बूझ साहस के धनी थे,
समर में भी गंभीर !!
लालच को ठुकराया,
तब दुश्मन ने भय दिखाया था प्रचुर !
अपनों के हमलों के बीच
निर्भीकता से मुकाबला कर रहे भरपूर !!
डिगा न सका कोई क्रान्ति पथ से,
प्रकंपित थे सभी सफेदपोस !
'एक्सीडेंट' ने दिया मौका,
ले लिया जान इसी से है, अफसोस!!
अब आया भार उनका भी,
बढ़ाना है कदम हम सबको !
लेकर प्रेरणा उनके आदर्शों का,
बुलंद करेंगे झंडा ललका !!

रामदेव गुप्ता एक **ट्रेक्टर दुर्घटना** में महाप्रस्थान कर गये. कहा जाता है कि दुर्घटना में गंभीर रूप से उनके सिर में चोटें आई थी. अगर घटना के समय उपस्थित लोग आपात अवस्था में उनके इलाज का व्यवस्था करते तो इन्हें बचाया भी जा सकता था. किन्तु दुर्भावना से ग्रसित पहले पहुंचे दुश्मन पक्ष के लोगों ने मौके पर इन्हें बचाने का कोई उपाय नहीं किया, फलस्वरूप वे खिलखिलाते दुश्मनों के सामने तड़पते हुए मौत को गले लगा लिये. जबकि इस दुर्घटना में गाड़ी मालिक जो खुद ड्राईवर भी थे, बाल-बाल बच गये. गाड़ी मालिक स्वयं को तत्काल गुप्त स्थानों में ले जाकर छिपा दिया और झुठे हल्ला मचाया कि 'ड्राईवर अरूण यादव का फेफड़ा फट गया है और उसे इलाज हेतु बाहर ले जाया गया है'. इतना ही नहीं सामाजिक सद्भावना को भंग करने के भावी उद्देश्य से ड्राईवर के

ऊपर रामदेव की हत्या का एक केश भी पुलिस में दर्ज कराया गया ताकि दोनों परिवारों के बीच दुश्मनी कायम हो जाये और दोनों में से एक पक्ष सफेदपोस चतुर लोगों के पक्ष में आ जाये.

खैर, दुनिया से एक-न-एक दिन सभी जन्म लेने वालों को तो जाना ही पड़ता है, चाहे उम्र पूरी करके या पहले अकाल मृत्यु द्वारा जाना पड़े. लेकिन जब तक वे इस दुनिया में रहते हैं, तब तक अपनी जीविका चलाते हुए औरों की सेवा में कितना काम आते हैं ? यही है वो बड़ा पैमाना जिससे समाज में मरणोंपरान्त मुल्यांकन होता है तथा उन्हें उनके योगदानों के अनुरूप सदा याद रखा जाता है.

रामदेव गुप्ता लगभग 70 वर्ष की आयु के स्वस्थ व सक्षम पुरूष थे. वे अत्यन्त प्रखर बुद्धि के अत्यंत गतिशील व्यक्ति थे. वे मैट्रिक तक की पढ़ाई स्कूल में किये थे तथा योग्य इलेक्ट्रीशियन और मैकेनिक थे. जबसे गांव की जनता समाज में व्याप्त अन्याय, अत्याचार, दंबगई व निकृष्टतम सामंती शोषणों के खिलाफ क्रांतिकारी आन्दोलन छेड़ी थी, तब से ही सपरिवार आन्दोलन से जुड़कर सक्रिय समर्थन देने लगे थे.

आर्थिक संकट से परिवार को उबाड़ने हेतु कलकत्ता में रेलवे की नौकरी कर रहे अपने पिता रामकिसन साह के साथ कुछ समय रहे. बाद में सिलीगुड़ी मजदूरी करने गये. मजबूरीवश दिल्ली, मुम्बई व अन्य स्थानों में रहकर भी मजदूरी किये थे. इनका जन्म मानसी गांव में एक गरीब रेलवे-मजदूर के घर में हुआ था, किन्तु बचपन से अत्यंत प्रतिभाशाली, तेज-तर्रार व अपने उम्र के छात्रों के बीच पढ़ाई में अच्छे थे इसलिए अमनी गांव के एक मध्यम किसान झरी साह ने अपनी बड़ी पुत्री गिरजा देवी से इनका विवाह किया. इनके स्वसुर के सिर्फ तीन पुत्रियां ही थी और तीनों दामादों में सबसे बड़े व योग्य यही थे, इसीलिए इन्हें वे अपने ही गांव अमनी में घर जमाई बसा लिये थे. किन्तु झरी साह के सम्पत्ति पर इनके दियाद की गिद्ध दृष्टि भी लगी थी इसलिए अंदर-ही-अंदर अकारण ही वे लोग इनको यहां से भगाने हेतु कुछ न कुछ जोर-जबरदस्ती, बिगाड़ करते ही रहते थे. किन्तु वे अपने सास-ससुर का निर्वाह मरणोपरांत तक करते रहे तथा उनके सम्पत्ति को भी बचाकर रखे. वे अपने पीछे दो पुत्र और भरा पूरा परिवार छोड़ गये.

आइयें! हम उनके कामों से शिक्षा ग्रहण करें :

निर्भीकतापूर्वक चारों तरफ से वर्ग दुश्मनों व पारिवारिक विरोधियों के घौंस-धमकियों व हमलों से टक्कर लेते हुए अंत तक पार्टी के नारा को बुलंद करते रहे. जनता की सेवा में तत्पर, नीति की बेजोड़ पकड़ के चलते गैर-सर्वहारा

व्यवहार करने वाले संगठन के अन्य साथियों का विरोध व आलोचना करने से कभी न चुके, न ही उनके गलत कार्यों का समर्थन ही किये. अपनी राय हमेशा खुलकर रखते रहते. तय फैसलों तथा दी गई जिम्मेवारियों को पूरा करने में रात या दिन में कोई फर्क नहीं करते. समय पर सारे के सारे काम करने में धुन के पक्के थे. संगठन के नेताओं की गिरफ्तारी, कुछ के पलायन, कुछ के शहीद हो जाने, कुछ का रंग बदलकर दुश्मन से मिलकर आर्थिक लाभ लेने के लिए संगठन के विरोध में चले जाने से ये अत्यंत दु:खी थे. इसके बाद भी संगठन के कार्यभार को बड़ी सक्रियता के साथ संभाल रहे थे. धन एकत्र करना, शहीद साथियों के परिवारों की देखरेख, जनसमस्या सुलझाने, बीमार साथियों की देखरेख, आंदोलन की अगुआई, गलत विचारों का विरोध इत्यादि में तत्पर रहते हुए अडिग थे. गांव का दामाद होने के नाते महिलाओं व समकक्ष पुरूषों द्वारा इन्हें बड़ा ही निश्छल व्यवहार प्राप्त था. आजन्म जनता के लिए सच्चे अगुआ बने रहे. हम-सब इन्हें शत्-शत् नमन करते हैं और इनसे प्रेरणा ग्रहण करते हैं.

जनप्रिय अनूप सदा अमर रहें !

अनुप, अनुप बन गए,
जनता की सेवा के चलते !
रूके न थे, थके न थे,
बाहर-भीतर के गद्दारों से लड़ते-लड़ते !!
पकड़ था पक्का नीति का,
हिला न सका कोई उनका पांव !
दिशाहीनता छू न सकी थी,
डर न फटकता उनके ठांव !!
जनता के हित जगते थे वे
जनता के हित सोते थे !
त्याग तपस्या की प्रतिमूर्ति,
दु:खी जनों के बीच होते थे !!
कौन था उनके ऐसा भूप!
चलते राह न रोका शीत-ताप-धूप !!
देख अनिति सशस्त्र व्यवहारहीनों का ये पूत !
डिगे नहीं, हिले नहीं,
ऐसे थे चाचा अनूप !!
जब देखे वे अपनों को राह फिसल के गैरों संग !
तब खुद को अलग कर,
पहले नेता को निकालने का ले लिया प्रण !!
जीत मुकदमा एक पर एक,
छोड़ते न थे तारीख प्रत्येक !
मनसा पूरी होने के पहले,
चले गए खुद दूर अनेक !!
लेता हूं संकल्प सब मिलकर,
पूर्ण करूंगा अधूरा काम !
जीतेजी सारे मोह तजकर,

लड़ता रहुंगा अविराम !!

लोकप्रिय जननेता अनुप सदा, पिता स्वर्गीय मौजी सदा पिछले दिनों दिनांक 26 नवम्बर, 2009 ई० को हम सभी लोगों को अलविदा कह सदा के लिए महाप्रस्थान कर गये. उनके वारिशों में उनके पुत्र सत्रोहन, चार पौत्र, एक पोती, हम सभी उनके साथी और आम क्रान्तिकारी जनता हैं. वे एक खेत-मजदूर पिता के घर इसी हियादपुर बस्ती में मानसी थाना अन्तर्गत जन्में थे. स्वयं मेहनत मजदूरी से अपने परिवार का जीवन-यापन करने के दौरान ही देश के विभिन्न क्षेत्रों में गए थे. वर्तमान भारतीय समाज व्यवस्था के भुक्तभोगी होकर अत्यंत चिन्तित थे तथा इसे बदल कर नया जनवादी समाज-व्यवस्था लाने के लिए पार्टी से सम्पर्क होने के बाद से निरंतर प्रयासरत् थे. बेशक उन जीवन्त आत्मा को उनका 80 वर्षीय वृद्ध शरीर साथ नहीं दे सका लेकिन हमलोगों के लिए वे अपने जीवन में अपने कामों से जो-जो मिशाल छोड़ गये हैं, वह हम सबको सदा पथ-प्रदर्शन करता रहेगा. आईये! जरा सीखें, उनके अच्छे गुणों से-

पारीवारिक जीवन-यापन करने के दौरान वे हमेशा कम्युनिस्ट पार्टी की नीतियों का ही आजन्म समर्थक रहे. शुरू में सोशलिस्ट पार्टी का समर्थक रहे होंगे. गांव में हलवाही छूटने के बाद वे कलकत्ता में मजदूरी करने के लिए गये थे. उसी दौरान वे मजदूर युनियन से जुड़े. लेकिन जैसे ही यहां गांव में क्रान्तिकारी आन्दोलन शुरू हुआ, वे अपने साथियों समेत इसके प्रबल समर्थक हो गये और संगठन को आर्थिक मदद भी देते रहे. इसके बाद हिमाचल गये. वहां अपने संगी मजदूर साथी की पत्नी के साथ बदमाशों द्वारा किये गये उनके आबरू पर हमलों के खिलाफ चाकू से उस पापी पर घातक वार करके उनके अस्मत की रक्षा किये थे. इस कारण उन्हें एक साल तक हिमाचल सरकार के जेल में भी रहना पड़ा था.

सन् 1990 ई० के बाद वे खुलकर क्रान्तिकारी आन्दोलन से जुड़ गये थे. बेघरों का बस्ती बसाने, बे-जमीन, भूमिहीनों को जमीन दिलाने, अत्याचार के शिकार लोगों की रक्षा करने इत्यादि जैसे हो रहे कामों में सक्रिय भागीदारी निभाते हुए दस्तों को गांव-गांव ले जाकर जनसम्पर्क दिलाने में सबसे बढ़कर भूमिका निभाते थे. संगठन उन्हें काम से जहां भी भेजता, वे उसी काम में तत्परता से जुट जाते थे. इतना ही नहीं सौंपे गये कार्यभार जबतक पूरा नहीं होता, तब-तक अथक प्रयास करते रहते थे. अपने कार्यभार को पूरा करने के दौरान उनका काम के प्रति निष्ठा, लगनशीलता और जल्दबाजी या स्फूर्ती ऐसा रहता था कि उन्हें लगता था कि समय कम है, जो है, वो भी बीता जा रहा है. कितना जल्दी-जल्दी दिये गये

कार्यभारों को पूरा कर दें जिससे कि दूसरे काम में जल्दी जुट जाऊँ.

ईमान की प्रतिमूर्ति

संगठन के कामों के लिए एक-एक पैसों को जनता से जमा करके पहुंचाते थे. निरक्षर थे, किन्तु पढ़े-लिखे लोगों से खर्च का एक-एक पैसों का हिसाब अपने पास लिखवाकर रखते व संगठन को देते थे. जिन्हें देते थे, उनसे भी लिखवाकर अपने पास लिखित हिसाब रखते थे. कभी भी एक पैसा का फालतू खर्च वे नहीं करते थे. वे हमेशा अपने साथियों के बीच अपनी समस्याएं (संगठन व जनता, जनसंघर्ष संबंधी या निजी) खुलकर रखते थे.

जनसम्पर्क में माहिर

वे चाहते थे कि कितना जल्द पार्टी का विस्तार गांव-गांव में कर दें. इस उद्देश्य से हमेशा संगठन के सामने 'ऊ-गांव' अर्थात् अनेक गांवों में पार्टी को ले जाना चाहते थे. जहां भी ले जाते हर गांवों में इनका जनता में सम्पर्क होता था. यहां तक कि पुराना जान-पहचान और रिश्ते नातों के रूप में भी होता था. यादाश्त के इतने धनी व पक्के थे कि बचपन से इस उम्र तक की बातें उन्हें याद रहता था. आम जनता उन पर खूब भरोसा करती थी.

पार्टी के प्रति वफादार

एक बार उन्हें संगठन का पांच-हजार रूपये पैचा/उधार वाले को वापस लौटाने के लिए बिल्कुल अहले सुबह बिना नाश्ता किये ही भेजा गया. रास्ता लंबा था. उनको जल्द लौटकर आना और दूसरा काम भी सम्भालना था, इसलिए टमटम (घोड़ागाड़ी) से जाने-आने का भाड़ा भी उन्हें दे दिया गया था. बांकी साथियों को उम्मीद थी कि दोपहर तक वापस लौट सकेंगे, इसलिए जहां जा रहे हैं वहीं खाना खा लेने या रास्ते में दुकानों में खा लेने के लिए अतिरिक्त पैसे भी दे दिये गये थे. किन्तु सभी लोग तब आश्चर्यचकित रह गये, जब वे वापस आने के लिए अनुमानित समय के बहुत पहले ही वापस पहुंच गये और नाश्ता भी यहीं आकर किये. दिये गये सभी पैसे बिना किसी तरह का खर्च किये वापस लौटा दिये. जब उनसे पूछा गया कि इतना जल्दी वापस कैसे आये ? क्या टमटम दोनों तरफ का समय पर मिल गया था ? तो वे बोलें, 'जल्दी वापस आने के लिए हम टमटम वाले के पास जरूर गये थे लेकिन वहां देंखे कि सबेरा होने के कारण यात्री कम जुटने के वजह से टमटम खुलने में देर होगा इसलिए तेजी से पैदल ही चले गये और चले आयें. सोचे कि पैसा बचेगा तो संगठन का दूसरा काम होगा. .... वे लोग भी भोजन करने के लिए कहे थे, किन्तु खाने लगते तो देर लगता, इसलिए

हमने वहां नहीं खाया.'

...ऐसी थी पार्टी के प्रति उनकी निष्ठा व वफादारी की मिसाल.

आदर्श आचरण -

समय पर जागना, नित्यक्रिया से निवृत्त होकर जनता के बीच रहना और प्रेम से जो कुछ मिला, उसे चाव से खाकर काम करते रहना, यही था उनका आदर्श स्वभाव. मीटींग बुलाना, उसमें भाग लेना, अपनी बातें रखना, दूसरों की बातों को ध्यान से सुनना व समझना, विरोधी विचारों को समझाकर एक राय बनाने आदि काम वे बड़े ही धैर्यपूर्वक किया करते थे. स्वयं भुक्तभोगी-गरीबी की तीखी आंच में तपे वे बड़े ही नेक इन्सान थे. परायी माँ-बहनों पर कभी बुरी नजर डालने का कहीं से किसी से भी कोई शिकायत नहीं मिला. काम में गतिशील भूमिका (निष्ठापूर्वक) के कारण ही ये क्षेत्रीय नेतृत्वकारी कमिटी के सदस्य भी चुने गए थे.

भटकाव व लालच से दूर

अपने कई साथियों के शहादत, कईयों का मैदान छोड़कर पलायन कर जाने तथा अपने प्रिय नेता के जेल चले जाने के बाद इन्हें संगठन की कमजोरी महसूस हुई. फिर भी अकेले गांव-गांव घूम-घूम कर लोगों में जागरूकता पैदा करते रहे. जन संघर्षों व संगठन के प्रति वफादार बने रहने की सीख देते रहे. बाद के दिनों में जब बाहर से हथियार व लोग आये, तब इन्हें खुशी हुई, किन्तु उनलोगों के दैनिक व्यवहारों पर दूर से ही तीखी नजर रखते रहे. जैसे ही उनलोगों के गलत व्यवहार और उलट नीति का इन्हें पता चला, वैसे ही उनलोगों के साथ चलने के लिए तैयार ही नहीं हुए. हालांकि इनलोगों के बुलावे पर एक दो-बार गए भी थे, फिर भी लौट आये.

ये वृद्ध थे, किन्तु ग्राम पंचायत अमनी के मुखिया द्वारा इन्हें वृद्धा-पेंशन का लाभ, इन्दिरा आवास का लाभ या समय-समय पर मिलने वाला सरकारी अनुदान भी कभी नहीं दिया गया. यह शिकायत इन्होंने कई बार अपने नेता से किये थे. जब इनसे नेता ने कहा कि, 'हम मुखिया जी को खबर भेजवाते हैं, क्यों नहीं आपको सरकारी लाभ देते हैं ?' तब इस पर अनुप बाबु ने अपने नेता को साफ-साफ मना करते हुए कहे थे, 'नहीं! नहीं! कभी भी इन सब छोटी-छोटी सी चीजों के लिए खासकर मेरे लिए मुखिया को नहीं कह सकते हैं. यह सब कोई बड़ी चीज नहीं है. हमें कोई फुसलाने वाली लालच की चीज देकर खरीद नहीं सकता और न ही झुका ही सकता है. हमारी गरीबी में हमें सरकारी सहायता नहीं

देकर हमें अपनी पार्टी और गरीब जनता के पक्ष से हटा नहीं सकता है. इन सब चीजों के लिए इन मुखियाओं या सरकारी दलालों से आपको बात करने की कोई जरूरत है.'

....ऐसे थे हमारे अनूप चाचा.

एक शिक्षक (अज्ञात) का मारा जाना

का० जटाधर मिश्र उर्फ नेपो मिश्र की हत्या के बाद समूचा समाज अशांत और आक्रोशित हो उठा था. हमलावरों की खोजबीन लगातार चल रही थी, पुलिस ने कई हमलावरों के हथियार जिसे खेतों में लगे मक्के के फसलों में छिपा कर रखा था, को पकड़ लिया था. सभी स्थानीय हमलावरों को खोजा जा रहा था. इस दौरान जो भी दोषी पकड़ाता था, उस पर आम जनता का कहर टुट पड़ता था. इस समय सभी अपराधी फरार थे. इसी क्रम में सियालाल सिंह वगैरह कई लोगों को बुरी तरह जनता के द्वारा पीटा जा चुका था. संयोगवश राघो सिंह को खोजने के क्रम में उनके दरवाजे पर एक बाहरी शिक्षक पकड़ा गए थे, उन्हें इतनी मार लगी कि वे मौके पर ही मर गए.

उदय सिंह का मारा जाना

पश्चिम मुशहरी की जनता को बेदखल करके जिन अपराधियों ने जमीन हड़प लिया था, उन्हीं लोगों के बीच इसी जमीन को लेकर विवाद चल रहा था. इन्ही अपराधियों के आपसी विवादों में दोनों पक्षों के बीच कई बार खूनी टकराव भी हुआ. इसी क्रम में उदय सिंह पे० यदु सिंह दूसरे पक्षों की गोली लगने से गांव में ही मारे गए. उदय सिंह जुझारू प्रवृति के युवा थे, जिन्हें इनकी माताजी बड़े ही लाड़-प्यार से पाली थी क्योंकि पिता यदुनन्दन सिंह लकवाग्रस्त होकर असमय ही काल-कलवित हो गए थे. बड़े बहनोई का भी इनपर काफी स्नेह था. ये किसुन प्रसाद मड़र के प्रपौत्र और रामसुंदर सिंह के पोते थे. अपने **निजी स्वार्थ में जनता को जमीन पर से बेदखल करने की गलत नीति ही** इनके मृत्यु का कारण बना.

राघो सिंह की पत्नी की हत्या

खेद के साथ लिखना पर रहा है कि इनका पुत्र ही गला मचोड़ कर अपनी माता का हत्या कर दिया. मामला यह था कि राघो सिंह अपने ही बेटे सुधीर सिंह की पत्नी के साथ अवैध सम्बन्धों में फंसे हुए थे. बेचारी इस बात का जोरदार विरोध किया करती थी. इस वजह से घर में हमेशा कलह बना रहता था. चतुर-चालाक पुत्र-वधू ने उल्टा-सीधा पढ़ाकर अपने पति को अपनी सास के खिलाफ भड़काकर अपने पक्ष में कर लिया. इसी कारण एक दिन अपने पत्नी के बहकावे

में आकर सुधीर ने अपनी मां को कनपट्टी पर ईंटा से मारा. उसकी मां ईंटा लगते ही गिरकर तड़पने लगी. इसके बाद सुधीर ने बजाय इलाज करवाने के अपनी मां का गला मचोड़कर मार डाला.

हत्या के बाद रात्री में ही दोनों पिता-पुत्र मिलकर लाश को ठिकाना लगाने और इसका दोष दूसरों पर मढ़ने का असफल प्रयास भी किया.

वकील बैठा की हत्या

गांव के दो मनचले लड़कों ने मिलकर रात्रि में बिछावन पर सोये हुए हालत में इनके घर पर ही वकील बैठा को गोली मारकर जघन्य हत्या कर दिया. मामला यह था कि इनकी बदचलन पुत्रवधू किसी अन्य लड़के से अवैध संबंधों में पड़ी हुई थी. उस लड़के से संबंध तुड़वाकर दोनों हत्यारे लड़कों ने खुद ही इनके पुत्र-वधु से सम्पर्क जोड़ लिया और इनके घर आना-जाना शुरू कर दिया. इस बात की भनक लगते ही वकील बैठा ने इस दोनों लड़कों को भी अपने घर आने-जाने पर रोक लगा दिया.

इसी कारण प्रेमालाप के बाधा को दूर करने के लिए दोनों बदमाश लड़के (मोहन सिंह और संजीव सिंह) ने मिलकर इनका हत्या ही कर दिया.

अशोक साह के पत्नी की हत्या

अशोक साह की पत्नी के साथ जबरन बलात्कार करने की कुचेष्टा में विफल रहने के कारण हत्यारा संजीव सिंह पे० सुरेश सिंह ने उक्त महिला का हत्या कर दिया और उस कमांध ने उसके मृत शरीर के साथ बलात्कार किया. सुनसान बहियार में मकई के बड़े-बड़े पौधों का ओट रहने के कारण दूर-दूर में लोग काम करते थे इसलिए मौके पर बचाव में कोई नहीं आ पाये.

महेन्द्र मिश्र की हत्या

अपने पूर्वजों की जमीन हासिल करने के लिए पंडित हरिनंदन मिश्र के बेटे-पोतों के खिलाफ चल रही लड़ाई में एक समय जुझारू भूमिका अदा करने वाले महेन्द्र मिश्र अपने चार भाईयों में तीसरे थे. इनके बड़े भाई जर्नादन मिश्र अमनी गांव में पहली बार कम्युनिस्ट आंदोलन को लाने वालों में से एक थे. लेकिन आनन्दी सिंह से मतभेद हो जाने के कारण वे बैसा गांव (परबत्ता थाना) में रहने लगे और परम्परागत पेशा से कमाकर अपने परिवार का भरण-पोषण करने लगे. इनका पूरा परिवार ही बाद के दिनों में कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी आंदोलन से जुड़ गया था.

बांध टूटने पर बाढ़ का पानी बार-बार गांव में आ जाने के कारण महेन्द्र

मिश्र कुछ दिनों से मानसी-घरारी में ही जमीन खरीदकर बिशुनदेव मिश्र के बगल में रहने लगे थे. गैना मिश्र के गलत कार्यों का जबर्दस्त विरोध किया करते थे इसलिए गैना मिश्र ने 'माईजी स्थान (कात्यायनी स्थान)' से घर वापस लौटते समय गांव के पास ही महेन्द्र मिश्र की गोली मारकर हत्या कर दिया.

अंधविश्वास के कारण डायन के नाम पर दो महिला की जघन्य हत्या

इसमें एक घटना पुरानी है और दूसरी नवीन.

पुरानी घटना :

अमनी में चमार जाति के कुछ लोगों के बीमार पड़ने या बीमारी से मर जाने की घटना को डायन का करतूत समझ लिया गया. टोले की एक बूढ़ी मसोमात माताजी (युगल राम की मां) को इसके लिए जिम्मेदार ठहराया गया. इस कारण आईंदा कहीं किसी को अपने जादू-टोना से न मार दे, इसलिए अंध-विश्वासी समाज ने उस बूढ़ी को जान से ही मार डालने का घिनौना सामूहिक फैसला ले लिया. इस फैसले में डायन करार दी गई बूढ़ी माता जी का पुत्र युगल राम भी उपस्थित थे इसलिए उन्हें ही बूढ़ी माता की हत्या करने का कार्यभार सौंपा गया. इस फैसले के समय सी० पी० एम० के सक्रिय सदस्य अधिक राम और सहदेव राम चमार जाति का मुकुट समझे जाते थे. कोई भी इन दोनों आदमी के बातों का उल्लंघन नहीं कर सकता था इसलिए इस तरह का प्रस्ताव रखने और सर्व-स्वीकृति कराने में दोनों ने मुख्य भूमिका अदा किया था.

हत्या के पहले प्रयास में बूढ़ी माता बच गई क्योंकि इन दिनों खेतों में अनाज का उपज कम होता था, इसलिए अनाज का किल्लत हर गरीब परिवार में बना रहता था. किसी प्रकार लोग अन्ट-शंट (अखाद्य) चीजें खाकर भी जीवन-यापन के लिए मजबूर थे. ऐसी हालत में किसी घर में अगर कभी भात-दाल, मसालेदार तरकारी, फुलौरी, कचरी, तिलौरी, पापड़ आदि का भोजन पक जाय तो परिवार के सदस्यों के खुशी का ठिकाना न रहता था और घर में उत्सव का-सा माहौल बन जाता था. इसी तरह का भोजन तैयार करके अज्ञान युगल राम ने अपनी मां के भोजन में जहर मिलाकर खिला दिया. खाने के बाद जहर का असर होते ही सिर चकराने लगा और काफी उल्टी-पुल्टी होने लगा, जिस कारण संयोग से बूढ़ी बच गई. अंधविश्वासी समाज ने इसका अर्थ लगाया कि 'बहुत ही सक्खर डायन है, बच गई. इसे मारना ही होगा.' इस वजह से बेचारी के पुत्र पर दुबारा हत्या करने का दबाब पड़ा. तब युगल राम ने सारी बात खुलकर अपनी मां को बता दिया और रोते हुए कहा, ''माई ले, हम्में एक पुड़िया जहर दैय

छियो, एकरा खाय केय तोय मैइर जो...'. तब बेचारी बूढ़ी ने जहर खाकर आत्महत्या कर ली. लाश को समाज के नजर से छिपाकर सभी चमार जाति के लोग आनन-फानन में लापता कर दिये.

नई घटना 2006 ई० की है.

घटनाक्रम यह है : गांव में नाच हो रहा था. बदलू यादव की पत्नी नाच देखकर आई और अपने घर से बेटी को नाच देखने भेजकर घर में गहरी निंद्रा में सो गई. कोई पुरूष घर पर नहीं थे. समाज के अंधविश्वासी कुछ लोग इन्हें डायन समझ रहे थे और किसी के पशु का भी अगर तबियत खराब हो जाय तो इन्हें ही डायन कहकर **'कर'** देने का आरोप बहुत दिनों से लगाया जाता रहा था और कई बार तो इनके साथ इसी तरह के आरोप में मार-पीट भी किया जाता था.

इस रात्रि में मौके के ताक में बैठे अपने ही समाज के कुछ दंबग अंधविश्वासियों ने घर में चुपके से घुसकर गला दबाकर नींद में ही इनका हत्या कर दिया. हल्ला होने पर हत्यारों ने इनके पति को आतंकित करके बहका-फुसलाकर पुलिस में रिपोर्ट भी नहीं करने दिया और लाश को रफा-दफा करवा दिया.

भूमिगत अवस्था में लेखक इन मृत महिला के मौत से पहले इनके घर पर ठहरे हुए थे. तब उन्होंने इनसे प्रश्न किये थे कि 'आप इतनी अच्छी विचार-व्यवहार की, अच्छी भली बोली-स्वभाव की हैं, फिर भी आपको 'डायन' कहकर क्यों प्रताड़ित किया जाता है, कृपया बतावें ?' इसपर वह बेचारी अपनी व्यथा जो कुछ सुनाई थी, वह संक्षिप्त में इस प्रकार है :

(उनकी बात शुरू करने के पहले उनके बारे में यह बता दूं कि वे बेचारी प्राकृतिक रूप से ही अपूर्व सौन्दर्य की धनी थी, अधिक उम्र में भी अतिसुन्दर दिखती थी. हालांकि गरीबी के कारण कोई बनाव-श्रृंगार कर पाने में असमर्थ थी.) वे जो बताई, अत्यन्त दुखदाई प्रसंग है, उनकी बातें इस प्रकार थी, ''की कहौं, दु:ख के कहानी.... जब हम्मे शादी के बाद अपन ससुराल अयलियन तय घर के खाना-पकाना, साफ-सफाई आरू जेतना काम रहन, हमहीं सम्भालियन. घर के सब लोग हम्मर काम-काज व्यवहार सेय बहुत खुश रहै रहथिन. हम्मर सास-ससुर, हम्मर भैंसुर सभे लोग हमरा खुब मानै रहथिन. हम अपना गोतनियों केय खूब मानै रहियन. हुनकर बालो-बच्चा केय मानै रहियन. इहे कारण हम्मर बराय सब लोग करै रहथिन. गोतिया-दियाद में भी सभे. घर के छोटकी बहू होय के कारण अपना ससुर-भैंसुर केय भी खाना परोस केय हमही

दियै. से हमरा सेय हम्मर गोतनी डाह करेय लगलखिन. हम्मे कुछो नय बोलियैय. से बाद में हुनी हमरा डायन कैह केय कलंकित करे लगलखिन. सूना में सबलोग लिगुन जाय केय झूठे-फूस बोयल केय डायन केहे लगलखिन. हम्में कुछ टोकारा दियै नेय तय खुबे लड़े लगै रहथिन, आरो हमरा पर आरोप लगावे लगलखिन कि 'तोय तय डैनियाँ हमर पुरूषो (पतियों अर्थात् भैंसुर वगैरह) केय जादू के जोर से मोहनी मन्तर सेय फुसलाय लेलहि.' हमरा बारे में ई सब बात जे बराबर गोतनी केय मुंह सेय लोग सुनै ने, तय टोला-पड़ोस के लोगों सब धीरे-धीरे हमरा पर शंका करे लगलखिन, आरो केकरो टोला-टाटी में मोनो खराब हुवै तय हमरे पर शंका करे लगलखिन कि 'उहे डायन छव, उहे करलकऊ...', आरो हमरा गंदा-गंदा गाली दिये लगै रहथिन. जब लोग हमरा गाली-गल्लौज करे नेय तय, हम्मर सास-ससुर जब तक रहलखिन तब तक तय हुनि समझाय-बुझाय केय सबके शांत राखै रहथिन, हम्मर बचाव होय रहेय. लेकिन हुनका गुजरला (अंतकाल) के बाद से लोग मार-डेंगाव करै लगलेय. हम्मर पुरूष (बदलु यादव) निबोली केय कोय नय चितबै छय... .' (क्या कहें दुख की कहानी...जब हम शादी करके अपने ससुराल आयी तब घर का खाना-पकाना, साफ-सफाई और जितना भी काम था, हमने संभाल लिया. घर के सभी लोग हमारे काम-काज, व्यवहार से बहुत खुश थे. हमारे सास-ससुर, हमारे भैसुर सहित सभी लोग हमें खूब मानते थे. हम भी अपने गोतिया को खूब मानते थे. उनके बाल-बच्चे को भी मानते थे. यही कारण सभी लोग हमारी प्रशंसा किया करते थे. गोतिया-दियाद के भी सभी. घर की छोटी बहू होने कारण अपने ससुर-भैंसुर को भी खाना परस कर देते थे. यही कारण हमारी गोतनी सब हमसे ईर्ष्या करने लगी. हम कुछ नहीं बोलते थे. यही कारण वे लोग बाद में हमें डायन कहकर कलंकित करने लगी. पीठ-पीछे लोगों के सामने झूठ-फूस बोलकर डायन कहने लगी. अगर हम कुछ बोलते तो वे लोग खूब लड़ने लगती थी और हम पर आरोप लगाने लगी कि 'तू तो मेरे पति को जादू के बल पर मोहनी मंत्र द्वारा वश में कर ली हो.' हमारे बारे में हमारी गोतनी के मूंह से बराबर जब यह बात लोग सुनने लगे तो टोला-पड़ोस के भी लोग धीरे-धीरे हम पर शंका करने लगे. और टोला-पड़ोस में किसी के भी बीमार पड़ने पर हमारे उपर ही शंका किया जाने लगे कि 'वही डायन है, वही की होगी...'. फिर वे हमें गंदी-गंदी गालियाँ देने लगते थे. जब लोग हमें गाली-गलौज करते थे तो हमारे सास-ससुर जब तक जीवित रहे तब तक तो उन्हें समझा-बुझा कर शांत रखते थे और हमारा सुरक्षा हो जाता था परन्तु,

उनके मृत्यु के बाद तो लोग मार-पीट करने लगे. हमारा पति सीधा-साधा है, कोई उन्हें भाव नहीं देता है...).

इन दोनों महिलाओं की जघन्य हत्या से साफ जाहिर है कि 1976 ई० से अबतक अंधविश्वास, रूढ़ीवाद, पिछड़ापन इत्यादि के खिलाफ चलाये गए तमाम आंदोलन (समझाना-बुझाना, प्रचार करना) भी नाकाफी साबित हुआ है. हालांकि आंदोलन से इतना तो जरूर हुआ कि गांव के हर टोले-मुहल्ले में अक्सर कमजोर परिवार की महिला या मसोमात (विधवा) को भी लोग 'डायन' कह देते थे और मारपीट किया करते थे, यह सब अब काफी घट गया. इसके बाद भी अज्ञानता कुछ लोगों के दिमाग में गहरी जड़ें जमाये हैं, जिसके खिलाफ संघर्ष जारी रखना होगा.

मारपीट के दर्जनों मामले
जिसमें काफी रक्त बहा लेकिन मृत्यु नहीं हुआ

पहले हम दो दर्जन से अधिक हत्याओं की चर्चा कर चुके हैं, लेकिन सशस्त्र मुठभेड़ों से भी बहुत ही ज्यादा घटनाएँ आपसी अंतर्कलहों के चलते होते रहे हैं. उन सबों को कलमबद्ध कर सकना कठिन है. यहां हम सिर्फ बातों को समझने हेतु कुछ घटनाओं को रख रहे हैं :-

(*i*) बौनु यादव और पहलु व ईश्वरी यादव के बीच लड़ाई हुई थी, जिस कारण बौनु यादव का एक पैर काटना पड़ा था.

(*ii*) झरूल्ला चौधरी (ग्राम-मेहसौड़ी) को मार कर बुरी तरह घायल किया गया था. घायलावस्था में झरूल्ला को पकड़ लिया गया था, जिसे डा० प्रभु नारायण चक्रवर्ती के हस्तक्षेप से बचा दिया गया था.

(*iii*) चमरू यादव के साथ दोरिक सिंह, राधे यादव, आनंदी यादव, धारी पहलवान की लड़ाई हुई, जिसमें ईंटा लगने से चमरू बुरी तरह घायल हो गये थे.

(*iv*) सिवचू पहलवान के खिलाफ आनंदी सिंह, धारी मंडल, राधे यादव, आनंदी यादव की लड़ाई, जिसमें पंडित के तरफ से लड़ने पहुंचे सिवचू पहलवान बुरी तरह घायल हो गये थे.

(*v*)विद्यानंद पंडित, बाबु लाल पंडित के खिलाफ माखो-विशुनदेव-सीताराम पंडित की लड़ाई, जिसमें विद्यानंद पंडित बुरी तरह घायल हो गए थे.

(*vi*) नारायण सिंह पे० चंचल सिंह का खलिहान सी० पी० एम० द्वारा लूटा जाना, जिसमें ईंटा लगने से नारायण सिंह को काफी चोटें आई थी.

(*vii*)फील्ड की जमीन पर ब्राह्मण परिवार और राघो सिंह डकैत के बीच हुई लड़ाई, जिसमें ब्राह्मण परिवार की महिलाओं को भी चोटें आई थी. आदि-आदि ।

इस प्रकार बार-बार गांव में हसेढ़ा-हसेढ़ी होते ही रहता था. किसी-किसी साल तो कई बार लेकिन कोई साल नागा नहीं जाता था. इस वजह से गांव में हमेशा अंतर्कलह मचा रहता था, जिससे रक्तपात थमने का नाम नहीं ले

पाता था. इस वजह से परस्पर झगड़ रहे एक-दूसरों के खिलाफ विद्वेष की आग में जल रहे अमनीवासी अपनी सामूहिक उर्जा का अपव्यय करते रहे. अगर आपसी भेद-भाव त्याग कर सभी लोग एक हो जाते, आपसी सौहार्द कायम हो जाता, हर घर से बच्चों की पढ़ाई-लिखाई पर जोर दिया जाता, नौकरी व अन्य व्यवसायों में लोग जुटकर अपने जीवनस्तर को सामूहिक रूप से उपर ले जाते तो स्वर्ग की धरा यही कहलाने लगती. किन्तु डॉ० प्रभु की हत्या के बाद समाज के विकास का पहिया हताशा की तरफ घूम गया. फलस्वरूप आपस में ही लड़-मर-खपकर लोग बर्बाद होते रहे और भारी छियानत में पड़ गए. डॉ० प्रभु की हत्या करवाके रामसेवक सिंह ने अपने समाज को कितना बड़ा धक्का दे दिया था इस बात को मृत्यु का समय नजदीक आने पर ही असह्य पीड़ा से कराहते रामसेवक सिंह अहसास कर सके. खुलेआम अपने अपराध को कबूल करते हुए लोगों को बुला-बुला कर अपने मुंह से कहते कि, 'हे हो, केय छिके, के रास्ता देके जायछे, आवो ने, आवो ने...' (जब लोग रामसेवक सिंह के सड़ चुके शरीर से निकल रहे भारी दुर्गन्ध से अपना नाक बंद करके आते या रामसेवक सिंह के सड़े हुए शरीर के पीव से निकलते दुर्गन्ध को सहते हुए खड़ा होते) तब वे कहते, **'हम ही प्रभु भाय केय मायर केय ई गांव केय उजायर देलियय...हम्में बुझै रहियै कि ई गांव में हमरा सन होशियार-बुधियार कोय छवे नय करै...हाय रे बाप! आव समझलियैय कि हमरा ऐसन बुद्धु ई गांव में कोय नय रहै.'** (हम ही प्रभु भाई को मार कर इस गांव को उजाड़ दिये...हम समझते रहे कि इस गांव में मेरे ऐसा होशियार-बुद्धिमान कोई है ही नहीं...हाय रे बाप ! अब समझे कि हमारे ऐसा बेवकूफ इस गांव में कोई नहीं था.)

इस प्रकार रामसेवक सिंह अपने जीवन के आखिरी बेला में अपने अपराध को स्वीकार तो कर लिए, किन्तु तब तक तो समाज का सब दुर्दशा हो ही चुका था. अब इस समाज के उन अपराधी लोगों को भी इनका जरूरत नहीं रहा क्योंकि इनसे सारी दुर्नीति तो इनके शिष्यों ने सीख ही लिया था. रामसेवक सिंह के ऐसे नए शिक्षार्थियों में से कुछ लोग इस प्रकार गिने जा सकते हैं **: विजयकांत कुमार उर्फ कुमार सिंह, सुविराज सिंह, शैलेश सिंह** वगैरह.

उपरोक्त सारी घटनाक्रमों से सबक लेकर समाज के खिलाफ अपने मन में बुरा विचार पालने वालों को भी अपना समझ बदलना चाहिए. **अगर अपनी ताकत समाज को संगठित करके विकास की धारा में नहीं खर्च कर सकते हैं तो उसे बिगाड़ने में भी नहीं लगाया जाना चाहिए. इसे समझने के लिए**

रामसेवक सिंह द्वारा मृत्युशय्या पर दिए गये सच्ची बातों को समझना चाहिए और उनका आदर किया जाना चाहिए, जिससे आइंदा कोई ऐसी गलती न दुहराने पावें. उनके इस अनमोल वचन में बहुत कुछ अगली पीढ़ी को सीखने के लिए मौजुद है. अर्थात् **जनविरोधी रास्ता छोड़ने और समूचे समाज के हितों से जुड़ने** से सम्बन्धित. अन्यथा परिणाम कैसा हृदयविदारक होता है, इसे **उनके आत्मस्वीकृति से समझा जाना चाहिए.**

सुलह का सच्चा सामाजिक प्रयास, जिसे जनता के दुश्मनों ने ठुकरा दिया

पहली बात तो यह है कि कम्युनिस्ट क्रांतिकारी संगठन जब 1976 ई० में बना था, तो कभी भी किसी से लड़ने या किसी भी तरह का अनिष्ट करने के लिए कभी नहीं सोचा था. दुर्भाग्यवश, जब सम्पूर्ण समाज को संगठित करने और दीन-दुखियों की भलाई के लिए सामूहिक प्रयास किया जाने लगा तो यह बात गांव में पहले से मौजूद संसदीय मुखर राजनीतिक संगठन (पार्टी) सी० पी० एम०, जनसंघ (बाद में जनता पार्टी फिर भाजपा या आर० एस० एस०), कांग्रेस (नगण्य) आदि ने कभी बारी-बारी से, तो कभी सब मिलकर एकतरफा तौर पर क्रांतिकारी जनता पर अंतहीन हमला (वैचारिक और सशस्त्र दोनों) जारी कर दिया. हालांकि जागरूक जनता के द्वारा अपनी सामूहिक आत्मरक्षात्मक कदम उठाते रहने से ये सभी हमलावर जितना नुकसान करना चाहते थे, उतना नहीं कर पाते थे अर्थात् नेस्तनाबूद नहीं कर पाते थे. इसके बाद भी जनता के हितों के लिए सी० पी० एम० अगर थोड़ा भी अच्छा काम करता था तो **किसान समिति के सभी कार्यकर्त्ता और जनता तुरंत उनके मदद के लिए पहुंच जाती थी.** उदाहरणस्वरूप निम्न घटनाओं को लिया जा सकता है :

(1) जब सी० पी० एम० ने पंडित हरिनंदन मिश्र नामक जमीन्दार के जमीन पर बटाईदारी आंदोलन शुरू किया था तो जमीन्दार बटेदार जनता का जनसंहार करने पर उतर आया था. इसके लिए भारी हथियारबंद ताकत का जुटान वे लोग किये थे. ऐसी हालत में जनता की रक्षा के लिए जान पर खेल कर **किसान समिति** ने जमींदार को करारी शिकस्त देकर सदा के लिए इस गांव से भगा दिया. इससे तो सी० पी० एम० के नेतृत्व में चल रहे बटाईदारी आंदोलन को ही फायदा पहुंचा था. लेकिन अफसोस की बात है कि 25 नवम्बर, 78 ई० को सी० पी० एम०, भाजपा सभी ने मिलकर पुलिस के सहयोग से मजदूरी बढ़ाने के लिए (सरकारी नियमानुसार लागू करवाने हेतु) बीस सूत्री आन्दोलन चला रहे मजदूर-किसान और किसान समिति के कार्यकर्त्ताओं पर जानलेवा हमला बोलकर **सोलह कार्यकर्त्ताओं को बुरी तरह बेरहमी से मारकर घायल कर दिया और फर्जी केशों में फंसाकर जेल भेजवा दिए. आन्दोलनरत् मजदूर-किसान**

आम जनता का पचासों घर लूट लिए तथा घर में रखें लाखों रूपये की कीमती सामानों, महिलाओं के जेवर, रूपये-पैसे आदि लूट ले गये.

(2) किसान समिति ने मुखिया चुनाव में अपने तरफ से प्रचार करना रोक दिया जिससे आनंदी सिंह को मुखिया पद से दुबारा चुनाव जीतने में मदद मिला. लेकिन ता० 1 से 3 अक्टूबर, 78 ई० के हथिया नक्षत्र के भीषण झपट में जब लोगों को भारी तबाही का सामना करना पड़ा था, तब किसान समिति के सदस्यों ने बुनछेक होते ही (बारिश रूकते ही) घर-घर जाकर दु:खी लोगों को खाना, जलावन, दवा आदि का सहायता दिया और उनके उजड़े हुए टूटे-गिरे घरों का सूची बनाकर सरकारी सहायता दु:खी जनता को दिलाने के लिए आनंदी सिंह से फरियाद किया था लेकिन उन्होंने कोई सुनवाई नहीं किया.

(3) एक बार ठंठ से सिकुड़ रही आम जनता को जलवान नहीं था. गांव के अमीरों ने जनता को अपने खेत से कुछ लेने नहीं दिया था, इसलिए सी० पी० एम० समर्थक आम जनता भी जब किसान समिति के कार्यकर्त्ताओं के साथ मिलकर ठंठ से बचने के लिए मेहसौड़ी के जमीन्दार सीता राम सिंह के सीमर् (सेमल) का सूखा हुआ विशाल पेड़ जब्त करने गई थी तब भी सी० पी० एम० नेता आनंदी सिंह के नेतृत्व में अमनी के सभी सामंतों ने चाहे वे सी० पी० एम० हो, जनसंघ (भाजपा) हो या कांग्रेस सबने एक होकर गरीब जनता पर अग्नेयास्त्र से हमला बोल दिया. जनता के रक्षा में जब किसान समिति के कार्यकर्त्ता इस अन्याय का विरोध किये तब उन्होंने भयंकर गोलीबारी करके चार आदमी को घायल कर दिया. इस अन्याय के बाद भी जनता की तरफ से आनंदी सिंह हमलावरों को किसी भी केश में नहीं फंसाया गया लेकिन वे लोग बात-बात पर एक-के-बाद एक हमला करते ही रहे और मनगढ़न्त आरोप लगा-लगा कर आम जनता तथा उनके लड़ाकु बेटों को फर्जी मुकदमों में फंसाते ही गये. जिस कारण गांव के आम गरीब जनता की गाढ़ी कमाई का लाखों रूपया मुकदमेबाजी में खर्च होता रहा. सैकड़ों निर्दोष लोग जेलों में फंस कर बर्बाद होते रहे.

(4) इतना सब कुछ होने के बाद भी जनता के साथ, हर अपराध में आनंदी सिंह से लेकर उनके बेटा सुविराज सिंह तक को साथ देने वाले माड़र निवासी सी० पी० एम० के नेता योगेन्द्र सिंह जब बिहार विधान सभा चुनाव में खड़ा हुए तब जनता से वोट को भीख मांगने आये. **आईन्दा गलती न करने और लोगों के सेवा करने का वचन दिए.** विशाल हृदय जनता ने इन्हें माफ करके अपने क्रांतिकारी संगठन से कहा कि 'अब ई सुधर जायेगा इसलिए इसे कम से

कम एक बार जीता दिया जाए' और जनता ने इन्हें जीता दिया. चुनाव जीतने के बाद हर जगह जनता के साथ विश्वासघात करके सरकारी विकास योजनाओं में लूट का ढ़ेर लगा लिया और लाखों-करोड़ों का मालिक बन बैठे. विरोध करने वाली जनता पर पुलिसिया कहर बरपाना शुरू कर दिया. उदाहरणस्वरूप रसौंक के मालती बांध में बोल्डर देने में ठेकेदार से पचास हजार घूस देकर बोल्डर के बदले मिट्टी डलवाये. अपने प्रभाव का नाजायज इस्तेमाल करके रसौंक की आम जनता और आस पास की जनता पर पुलिसिया कहर बरपाना नए सिरे से जारी कर दिया.

इसके बावजूद भी गांव की गरीब जनता की तरफ से आपसी विवाद हल कर लेने का अनुरोध इन तमाम जनता के दुश्मनों से बार-बार किया गया लेकिन वे लोग इस प्रस्ताव को उल्टे जनता की कमजोरी समझते और मेलजोल के बहाने नजदीक आकर जनता के सामूहिक संघर्ष पर हमला करने का योजना बनाने लगते. इस प्रकार जनता के इस प्रस्ताव को अपने गंदे पैरों के नीचे कुचल कर बार-बार जनता पर बहसियाना हमला कर जनता को तबाह करते ही चले आ रहे थे.

आइये देखें कि गांव में शांति स्थापित करने के लिए क्या-क्या प्रयास किसान समिति तथा आम जनता की ओर किया गया :

(*i*) मुंगेर कोर्ट में 1985 ई० में जनता के तरफ से प्रतिष्ठित पांच लोगों ने कोर्ट परिसर में ही मुखिया आनन्दी सिंह से जाकर अनुरोध किये थे कि, 'मिल-बैठकर सभी आपसी विवाद हल कर लिया जाय. सब केश-फेश उठा लिया जाए...'. इस बातचीत में जिन पांच प्रमुख व्यक्तियों ने हिस्सा लिए, उनमें थे **: सुमन गुप्ता (कृष्ण मोहन गुप्ता के मुंगेर के ही साला), मनोहर मिश्र, महेश्वर साह, शिरनियां के प्रतिष्ठित शिक्षक..... मिश्र (मनोहर मिश्र के फुफेरा भाई) और एक अन्य आदमी.** इस पर उसी वकालत खाना में बहुत से अधिवक्ताओं के सामने उन्होंने सभी आदमी से कहे थे कि, 'बहुत अच्छा प्रस्ताव लैलिय येय, चलियौक गांव में सब लोग बैठ केय सब चीज केय निपटारा कैर लेबै...'. (यह बातचीत सौहार्दपूर्ण माहौल में सम्पन्न हुआ था).

मुंगेर कोर्ट में ही यह बातचीत इसलिए हुआ था क्योंकि राघो सिंह, देवेन्द्र सिंह के केश में फंसकर **किसान समिति के पांच कार्यकर्त्ता :** चन्द्रोशन पंडित, प्रकाश पोद्दार, योगेन्द्र पासवान, मौलेश्वर पंडित और कृष्ण मोहन गुप्ता

उस समय मंडल कारा मुंगेर में ही थे. चुंकि इन दिनों खगड़िया जिला घोषित होने के बाद भी जिला कोर्ट मुंगेर में ही बैठता था इसलिए राघो सिंह के तरफ से आनंदी सिंह ही केश का पैरवीकार थे, इसलिए वे वहाँ मौजूद थे.

(*ii*) संयोगवश अप्रैल, 1985 ई० में ही किसान समिति के एक कार्यकर्त्ता चन्द्रोशन प्रोविजनल बेल पर बाहर आ गए थे और अपने गांव अमनी में ही थे कि मालूम हुआ कि आनंदी सिंह भी अमनी आये हुए हैं इसलिए किसान समिति के तरफ से पचासों आदमी समझौता के लिए आनंदी सिंह के दरवाजे पर गए और उन्हें याद दिलाते हुए विनम्रता से कहे, '... मुखिया जी हम्मै सब आदमी आपने के पास आइलयैय, मिल बैठ केय सब आपसी विवाद हल करै लिय. शांति से मिल-बैठ केय रहैलल. आपने मुंगेर कोर्ट में पांच आदमी के केय ई-बात के लिए आश्वासन देलियैय रहे...।' इस पर **आनंदी सिंह का कहना हुआ कि 'तोंय लोग समाज के तरफ से अयलहो येय, कहै छहो तय ठीके छै जे-जे लोग हमरा खिलाफ में जे-जे केश में गवाह बनलहो येय, ऊ सब लोग कोर्ट में हमरा पक्ष में गुजैर जाहो, ओकरा-ओकरा माफ कैर देवोअ, बाकी लोग सेय नाय मिलबअ...'.** (आप सब समाज के तरफ से आये हैं. कहते हैं तो ठीक है, जो-जो आदमी मेरे खिलाफ जिस-जिस केश में गवाह बने हैं, वे सब लोग कोर्ट में मेरे पक्ष में गवाही दीजिये, उस-उस को माफ कर देंगे, बांकी लोगों से नहीं मिलेंगे). इसपर समाज के तरफ से कहा गया कि 'हो मुखिया जी, हम सब आदमी तय अयलौ रहे सभे समस्या हल कैर केय गांव में शांति कायम करै खातिर, लेकिन ई केना होतैय ! हमर अरकेय पांच आदमी जब जेले में छय....तब चलै छिअ.' अन्ततः सभी लोग निराश होकर वापस लौट आये. इस प्रकार गांव में शांति कायम करने का गरीबों और न्याय के पक्षधर लोगों के स्वयं के पहलकदमी को स्वयं आनंदी सिंह ने विफल बना दिया. इसके लिए स्वयं आनंदी सिंह ही जिम्मेदार थे क्योंकि सभी सामंती-प्रतिक्रियावादी लोग इन्ही के बातों पर चलते थे और **उन्हें पक्का विश्वास था कि राधो सिंह वाला केश में फंसे सभी लोगों को फांसी की सजा करवा देंगे. उसके बाद बोलने वाला है कौन ? जनता ही निर्णायक और वीर होती है, यह बात वह मानने लिए तैयार ही नहीं थे.**

(*iii*) आनंदी सिंह के मृत्यु के बाद सी० पी० एम० के तरफ से गांव के सारे विवाद को हल करने का एक प्रस्ताव गरीब पक्ष को भेजा गया था. किसान समिति के लोग आपस में विचार-विमर्श करके इस प्रस्ताव को मान गये और इसका स्वागत भी किए थे. लेकिन जब पुनः इधर से लोग एक साथ बैठकर

समय-जगह तय करने कहे तो उधर से कोई जबाव नहीं आया. इस कारण आगे कुछ न हो सका. बाद में पता चला कि यह प्रस्ताव सी० पी० एम० के तरफ से हमलावरों में से एक प्रमोद सिंह (आनंदी सिंह के चचेरे भाई) के द्वारा भेजवाया गया था. **उद्देश्य था गरीबों को भरमाकर रखना. उधर हमला करना तथा गरीबों के एकता में फूट डालना या फिर क्रांतिकारियों को जनता से अलगाव में डालना.** लेकिन ऐसा कुछ भी न हो सका.

इसके तीन चार साल बाद फिर प्रमोद सिंह के द्वारा उसी तरह का एक प्रस्ताव पुनः भेजा गया. किसान समिति के तरफ से क्रांतिकारी गरीब जनता के नेता वार्ता के लिए सब बात समझते हुए भी पुनः तैयार हो गये और सकारात्मक पहल लिये लेकिन हमलावर खेमा पुनः वार्ता के लिए तैयार नहीं हुए और इस प्रकार फिर समस्या का समाधान नहीं हो सका.

(*iv*) इसके बाद 2003 ई० से अब तक (2009 ई०) क्रांतिकारी गरीब जनता के तरफ से कम-से-कम आधा दर्जन बार शांति प्रयास का पहल किया गया. कई बार तो दोनों पक्षों से सैकड़ों लोग गांवों में बैठकर सौहार्दपूर्ण माहौल में इसके लिए कई बिन्दुओं पर फैसला भी कर लिए किन्तु फिर वे हमलावर लोग पीछे हटते रहे. इस कारण अब तक समझौता हेतु तमाम कोशिशों का कोई नतीजा न हो सका. **बाद में पता चला कि हर बार सुविराज सिंह और कुमार सिंह किसी भी प्रकार के समझौतों को ठुकराते रहने में जबर्दस्त भूमिका अदा करते रहे हैं** और **जन-इच्छा को ठेंगा दिखाते रहे हैं** ताकि समझौता नहीं हो सके और गरीब आमजनता को तंगो-तबाह करते रहें.

ऐसा करने के पीछे कुछ और बात का पता चला है :

1. किसी प्रकार जनता को धोखे में डालकर सभी केशों में पक्ष में गवाही गुजरवाकर सभी हमलावर बच जायेंगे लेकिन जब आम गरीब जनता के पक्ष में गवाही गुजरने का बेला आयेगा तो **मौके पर मुकर-कर खिलाफ में गवाही देकर सबको सजा करवा देंगे.**

2. इतना ही नहीं, इससे भी खतरनाक उद्देश्य है कि इस मेल-जोल के बहाने गरीबों के कतारों को **धोखे में रखकर** जेल से छूटते ही किसी प्रकार चन्द्रोशन (जनवादी आन्दोलन के अगुआ) का हत्या कर देने अथवा **जनता के संगठन के ही बीच सिर छुपाये रह रहे ढुलमुल, व्यभिचारी तथा लालची तत्वों को धन एवं औरत का लालच देकर उसके ही द्वारा चन्द्रोशन का हत्या करवाना.**

3. आज तक अमनी में जितना भी बर्बादी व खून-खराबा हुआ सभी दोष **चन्द्रोशन (क्रांतिकारी आन्दोलन का अगुआ) के मत्थे मढ़कर खुद समाज में अच्छा कहलाकर समाज को फिर से चरने का सुनहरा सपना ये तमाम हमलावर पाले हुए हैं.**

जागरूक और संगठित आम-जनता के सामने वे अपने घृणित उद्देश्य में लगातार विफल होते जा रहे हैं. **परन्तु गरीबों की कतारें जिस दिन थोड़ा भी असावधान होगा, उसी दिन वे लोग सफल हो जायेंगे, जिसकी ताक में ये सभी हमलवावर आज तक जुटे हुए हैं और तरह-तरह का बगुला-भगत भेष धारण कर-कर के लोगों को बरगलाने का असफल प्रयास लगातार कर रहे हैं ...**